शैक्षिक मंथन

(द्विभाषी मासिक)

शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष : 12 अंक : 5 1 दिसम्बर 2019

(मार्गशीर्ष-पौष, विक्रम संवत् 2076)

संस्थापक

स्व. मुकुन्दराव कुलकर्णी

❖

परामर्श

के.नरहरि

डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल

जगदीश प्रसाद सिंघल

शिवानन्द सिन्दनकेरा

❖

सम्पादक

डॉ. राजेन्द्र शर्मा

❖

सह सम्पादक

भरत शर्मा

❖

संपादक मंडल

प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय

डॉ. एस.पी. सिंह

डॉ. ओमप्रकाश पारीक

डॉ. शिवशरण कौशिक

❖

प्रबन्ध सम्पादक

महेन्द्र कपूर

❖

व्यवस्थापक

बजरंग प्रसाद मजेजी

प्रेषण प्रभारी : **नौरंग सहाय**

कार्यालय प्रभारी :

आलोक चतुर्वेदी : 8619935766

प्रकाशकीय कार्यालय

82, पटेल कॉलोनी, सरदार पटेल मार्ग,

जयपुर (राजस्थान) 302001

दूरभाष : 9414040403

दिल्ली ब्यूरो :

शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,

कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली-110053

दूरभाष : 011-22914799

E-mail :

shaikshikmanthan@gmail.com

Visit us at :

www.shaikshikmanthan.com

एक प्रति 20/- वार्षिक शुल्क 200/-

आजीवन (दस वर्ष) 1500/-

पृष्ठ संयोजन : सागर कम्प्यूटर, जयपुर

शैक्षिक मंथन मासिक में प्रकाशित सामग्री से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा चित्रों का प्रतीकात्मक प्रयोग किया गया है।

श्री गुरु नानक देव जी और समाज सुधार ❑ डॉ. मनजीत कौर

बाबर को जाबर कहने का हौसला, पराया हक न मारने की हिदायत, एक ईश्वर की उपासना पर बल देना तथा समूची मानवता में उस परमेश्वर की ज्योति का दर्शन करना तथा कर्म सिद्धांत को दृढ़ करवा कर समाज को आदर्श रूप प्रदान करने हेतु गुरु नानक देव जी ने उच्चतर मानव मूल्यों की स्थापना कर विघटित होते मानव मूल्यों एवं ह्रास होती भारतीय संस्कृति की पुनः प्रतिष्ठा की।

9

अनुक्रम

4.	संपादकीय	- डॉ. राजेन्द्र शर्मा
5.	राष्ट्र निर्माण में गुरुनानक देव की भूमिका	- स. गुरुचरण सिंह गिल
11.	जगत् गुरु बाबा नानक साहिब जी	- स. चिरंजीव सिंह
15.	गुरु नानक देव और भारतीय परंपरा	- डॉ. शिवशरण कौशिक
19.	गुरु नानक देव और भक्ति आन्दोलन	- बलवीर चौधरी
22.	अनूठी पहल	- तमन्ना अख्तर
27.	श्री गुरु नानक देव का जीवन दर्शन	- डॉ. ओम प्रकाश पारीक
30.	सामाजिक समरसता और गुरुनानक देव	- डॉ. मोहनलाल साहु
33.	गुरुनानक देव जी का समाज सुधार में योगदान	- डॉ. ईश्वर चन्द्र शर्मा
38.	भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की अभिव्यक्ति	- अरुण आनंद
40.	एक युगदृष्टा व विलक्षण संगठन शिल्पी	- प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा
42.	गतिविधि	

New Education Policy 2019 : Secondary Education

❑ Dr. T.S. Girish Kumar

The new education policy is not the end policy in education. It is not the case that it is not flexible. New education policy is new from the old, and the old was dragging a colonial luggage along with the negativism of con-Bharat phenomena. This had been destroying Bharatiya vitality from taking shape and flowing out to flourish into the world to make the world into 'Vasudhaivakutumbakam'.

35

संपादकीय

डॉ. राजेन्द्र शर्मा
सम्पादक

भारत भूमि की यह अनूठी विशेषता है कि जब जब यहाँ अन्याय, अत्याचार बढ़ते हैं, जन-जीवन को घुटन अनुभव होती है, तब तब राह दिखाने को सुधारक एवं संत आगे आते ही हैं। मध्य काल में ऐसा ही हुआ। शासकीय निरंकुशता के सामने जनसामान्य ठगा सा, असहाय सा था और समाज में दिनोंदिन जात-पाँत, ऊँच-नीच, छुआछूत और बाह्य आडम्बरों की उलझने बढ़ती जा रही थी। ऐसे कठिन समय में गुरु नानकदेव एवं भक्ति आन्दोलन के अन्य संतों ने मानव की अंतर्निहित शक्ति को जाग्रत करने का काम किया। परिणामत: देश के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में एक नयी शक्ति एवं गतिशीलता का संचार हुआ। कबीर की तरह नानक ने भी जात-पात को नहीं माना तथा धार्मिक आडम्बरों, कर्मकाण्डों, ऊँच-नीच का विरोध करते हुए सच्चे हृदय से ईश स्मरण का उपदेश दिया। उनका जन्म 1469 ई. में लाहौर के निकट तलवण्डी (ननकाना) नामक ग्राम में हुआ। बाल्यकाल से ही वे संत प्रकृति के थे। समस्याओं से घिरे समाज को जगाने के लिये उन्होंने चार उदासियाँ (धार्मिक यात्रायें) की और दुनिया को सद्भावना और सरबत दा भला का संदेश दिया। भ्रमण के दौरान उन्होंने अनेक साधुओं, संतों, सिद्धों, योगियों और फकीरों के साथ सत्संग किया एवं धर्म के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। अन्ततोगत्वा वे करतारपुर में रहकर उपदेश करने लगे। अपने जीवन के अंतिम अठारह वर्ष गुरु नानकदेव ने यहीं बिताये।

यह विडंबना ही है कि भारत विभाजन के समय सिक्खों के दो प्रमुख तीर्थ स्थल-ननकाना साहिब और अंतरराष्ट्रीय सीमा से महज 4.7 किलोमीटर दूर स्थित करतारपुर साहिब पाकिस्तान में चले गए। गुरु नानक देव के 550 वें प्रकाश पर्व पर 9 नवम्बर को दोनों देशों में हुए समारोहों में करतारपुर कोरिडोर का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर भी पाकिस्तान अपना स्तर दिखाने से बाज नहीं आया। उसने वीडियो जारी किया जिसमें अलगाववादियों को सिख श्रद्धालुओं के साथ दिखाया गया। देश में पड़ोसी द्वारा करतारपुर कॉरिडोर के दुरुपयोग की संभावना जतायी जा रही है। भारत सावचेत है तथापि इस संबंध में रक्षा विशेषज्ञों ने खुफिया एजेंसियों को सतर्क करने एवं अत्याधुनिक तकनीक द्वारा निरन्तर निगरानी किये जाने की राय प्रकट की है, जिसका शासन द्वारा संज्ञान लिया जाना आवश्यक है।

नानक का व्यक्तित्व अत्यंत शांत था। उनमें कबीर की तरह अक्खड़पन और खंडन-मंडन की प्रवृति नहीं थी। वे सीधी बातों को सीधी भाषा में कहा करते थे। जीवन भर वे हिन्दू समाज को समझाते रहे कि जन्म से सभी समान हैं। जिस व्यक्ति ने प्रेम और भक्ति को अपनाया है उसकी जाति का संबंध पूछना अनुचित है। वे कहा करते थे 'ईश्वर एक है, ईश्वर सत्य है, सभी उसकी संतान हैं, उसी ने सभी को बनाया है। उसके लिए सभी एक समान हैं। जैसे काष्ठ में आग समायी हुयी है और दूध में घी समाया हुआ है वैसे ही परमात्मा घट-घट में व्याप्त है, ऊँच-नीच सभी में व्याप्त है।' इसीलिए मनुष्य को अहंकार छोड़कर एवं भेदभाव भुलाकर नेक नीयत से परिश्रम द्वारा जीविकोपार्जन करना एवं नाम सिमरन करना चाहिए। अमृतसर स्थित पवित्र तीर्थ हरमंदिर साहिब के चारों तरफ के दरवाजे यही इंगित करते हैं कि यह चारों वर्णों की जातियों और चारों दिशाओं के मनुष्यों के लिए खुला है। नानक के समय प्रारम्भ की गयी 'लंगर प्रथा' मानव प्रेम, समानता और सबको साथ लेकर चलने की ही तो मिसाल है। उनके अनुयायियों में सभी जातियों, वर्गों और सम्प्रदायों के लोग सम्मिलित थे। उनके समय के एक अन्य संत रामानुज के बारे में यह कहा जाता है कि जब वे अपने प्रिय शिष्य धर्मदास (अछूत) के कंधों के सहारे स्नान करके लौटते थे, तब कहा करते थे कि कावेरी के स्नान से तो उनकी काया शुद्ध होती है परन्तु धर्मदास के स्नान से मन। वस्तुत: नानक देव की करनी एवं राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत कथनी तथा उपदेशों से ऐसे समाज का सृजन हुआ जो धर्म, मानव एवं देश की समृद्धि एवं संरक्षण के लिये तत्पर है।

पुनश्च: - सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस रंजन गोगोई की अध्यक्षता वाली पाँच सदस्यीय संवैधानिक पीठ ने स्वतन्त्र भारत के इतिहास के सबसे महत्त्वपूर्ण और बहुप्रतीक्षित निर्णय में विवादित स्थल पर राम मंदिर निर्माण के पक्ष में दिए गए आदेश में जन्म साखी के साक्ष्य के आधार पर कहा है कि गुरु नानक देव ने सन् 1510-11 में राम जन्म भूमि का दर्शन करने के लिये अयोध्या यात्रा की थी। ❑

राष्ट्र निर्माण में गुरुनानक देव की भूमिका

स.गुरुचरण सिंह गिल
अध्यक्ष,
राष्ट्रीय सिख संगत

सामान्य जन राज्य/देश व राष्ट्र को समानार्थी समझ लेते हैं जबकि इनके संदर्भ पूर्णतया स्वतंत्र हैं। किसी राज्य के लिए एक राजनैतिक व्यवस्था/सत्ता, भौगोलिक क्षेत्र, उसकी सीमाएँ, उसकी स्वीकार्यता तथा उसका अपना नियम विधान होना आवश्यक है लेकिन राष्ट्र के लिए नहीं। एक राष्ट्र नागरिकों का एक समूह है जो कि स्वयं को, साझी-सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विरासत के आधार पर आपस में जुड़ा हुआ तथा संसक्त मानता है। राष्ट्र कोई प्रकृति या भौगोलिक स्थिति द्वारा बनायी इकाई नहीं होती बल्कि सामाजिक रूप से निर्मित इकाई होती है जिसका अस्तित्व उसकी व्याख्या तथा उसकी सहभागिता, परिस्थितियों के आधार पर तथा हजारों साल तक अपने सामूहिक जीवन व चिंतन के लिए अपनाये गये मानदण्ड, जीवन-दर्शन, रहन-सहन की रीति-नीति, आपसी सबंधों के परिभाषित आदर्श तथा आपसी समझ के आधार पर बनते हैं, जिन्हें जीने एवं उनकी अनुपालना व निर्वाह करने की आपसी समझ आंतरिक होती है। किसी कालखण्ड में जब कोई बाह्य शक्ति उनको नष्ट करने की कुचेष्टा या कुकृत्य करता है तो उस राष्ट्र का प्रत्येक सदस्य व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से उन जीवन मूल्यों को बचाने तथा आकांक्षाओं का प्रतिकार करता है। इस प्रकार किसी भी राष्ट्र में उस सामाजिक समूह के सामाजिक जीवन मूल्य व जीवन पद्धति, आचार-विचार, जीवन-दर्शन, साझे संघर्ष की गाथा समाहित होते हैं। वर्तमान लेख में हम इसी संदर्भ में संक्षिप्त में चर्चा करेंगे।

उक्त विवेचन की पुष्टि स्वयं श्री गुरुनानक देव जी महाराज की वाणी से होती है। बाबर ने जब भारत पर आक्रमण किया तो उनके आक्रमण की जानकारी होने पर श्री गुरुनानक देव जी महाराज सैयदपुर जिसे ऐमनाबाद भी कहते हैं, में आये। बाबर द्वारा सैयदपुर/सैदपुर पर हुए आकमण पर उसके द्वारा किये गये अत्याचार का उन्होंने बहुत ही मार्मिक शब्दों में वर्णन किया है लेकिन बाबर के आक्रमण को उन्होंने सैदपुर पर आक्रमण नहीं बताया बल्कि 'हिन्दुस्तान' पर आक्रमण बताया जबकि उस समय हिंदुस्तान कोई भी राजनैतिक इकाई नहीं था और उस समय राजनैतिक तौर पर लोदी (मुसलमान) वंश का शासन था।

श्री गुरुनानाक देव जी महाराज ने जो शब्द उचार कर बाबर को चुनौती दी, वह श्री गुरुग्रंथ साहिब में राग आशा में पृष्ठ 360 पर अंकित है -

खुरासान खसमाना कीआ
हिंदुसतानु डराइआ।
आपै दोसु न देई करता
जमु करि मुगलु चड़ाइआ।
एती मार पई करलाणे
तैं की दरदु न आइआ।।
करता तुं सभना का सोई ।।
जे सकता सकते कउ मारे
ता मनि रोसु न होई।।
सकता सीहु मारे पै वगै
खसमै सा पुरसाई ।।

जिसका संबंधित भाग पृष्ठ 417 यहाँ त्वरित संदर्भ के लिए उद्धृत किया जा रहा है-

जिन सिरि सोहनि पटीआ
मांगी पाइ संधूरू।।
से सिर काती मुंनीअन्हि
गल विचि आवै धूड़ि।।
महला अंदरि होदीआ हुणि
बहणि न मिलन्हि हदूरि ।। 1
आदेसु बाबा आदेसु ।।
आदि पुरख तेरा अंतु न
पाइआ करि करि देखहि वेस।। 1 रहाउ
जदहु सीआ वीआहीआ
लाड़े सोहनि पासि ।। 2
इकु लखु लहन्हि बहिठीआ
लखु लहन्हि खड़ीआ।।
गरी छुहारे खांदीआ
माणन्हि सेजड़ीआ।।
तिन्ह गलि सिलका पाईआ
तुटन्हि मोतसरीआ।। 3
धुन जोबनु दुइ वैरी होए
जिन्ही रखे रंगु लाइ।।

श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने ऐसी परिस्थिति में बाबर के अत्याचारों का वर्णन करते हुए, यह भी कहा कि बाबर के अत्याचार के समय उसका विरोध करने के लिए परमात्मा का मेरे लिए यह मार्गदर्शन है कि मैं इस समय सच बोलूं तथा उन्होंने ऐसा भी फरमाया कि यह शरीर तो कपड़े की तरह है, कभी-भी टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा (इसकी क्या परवाह लेकिन इससे हिंदुस्तान संभलेगा।) संदर्भित शब्द राग तिलंग में पृष्ठ 722 पर अंकित है।

संक्षिप्तता की दृष्टि से ससम्मान उसका आंशिक भाग उद्धृत किया जा रहा है-

जैसी मैं आवै खसम की बाणी
तेसड़ा करी गिआनु वे लालो ।।
पाप की जंत्र लै काबलहु धाइआ
जोरी मंगै दानु वे लालो ।।
सरमु धरमु दुइ छपि खलोए
कूड़ु फिरै परधानु वे लालो ।।
काजीआ बामणा की गल
थकी अगदु पडै सैतानु वे लालो ।।
मुसलमानीआ पड़हि कतेबा कसट
महि करहि खुदाइ वे लालो ।।
जाति सनाती होरि हिदवाणीआ
एहि भी लेखै लाइ वे लालो ।।
खून के सोहिले गावीअहि नानक
रतु का कुंगू पाइ वे लालो ।। 1 ।।
साहिब के गुण नानकु गावै मास

पुरी विचि आखु मसोला ।।
जिनि उपाई रंगि रवाई बैठा
वेखै वखि इकेला ।।
सचा सो साहिबु सचु तपावसु
सचड़ा निआउ करेगु मसोला ।।
काइआ कपड़ु टुकु टुकु
होसी हिदुसतानु समालसी बोला ।।
नानकु आखै सचु सुणाइसी
सच की बेला ।।2 ।।3 ।।4 ।।

श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने जो फरमाया वह कालांतर में सही सिद्ध हुआ। तत्कालीन राजनैतिक अत्याचार के समय राजनैतिक प्रतिरोध नगण्य हो गया था। अगर हम तत्कालीन राजनैतिक हालात का विश्लेषण करें तो श्री गुरुनानक देव जी महाराज के आगमन से लगभग 70 वर्ष पूर्व तैमूरलंग भारत आया जिसने यहां तक अत्याचार किया कि कुछ क्षेत्रों यथा हरियाणा, मेरठ, हरिद्वार क्षेत्र व हिमाचल से जम्मू तक कोई शायद ही कोई हिंदू घर व परिवार साबुत बचा हो, उसके सिपाहियों ने अधिकांश युवा मातृशक्ति अपनी हवस का शिकार बनाया तथा शहरों के शहर तबाह कर दिये। इतिहासकारों का मानना है कि हरियाणा क्षेत्र में जहाँ निश्चित ही उसका समाज ने प्रतिकार किया होगा, उसके प्रत्येक सिपाही ने औसतन 50-100 तक हिंदू पुरुषों, महिलाओं व बच्चों के कत्ल किये तथा दिल्ली नजदीक लोनी के पास लगभग एक लाख हिंदू औरतों व पुरुषों को बंदी बनाया और फिर उनका एकसाथ कत्ल कर दिया। उसके बाद जसरथ खोखर ने भी पंजाब क्षेत्र में अनेक अत्याचार किये तथा काबुल के शेख अली तथा फौलाद तुर्क बचच्चा ने भी अनेकों अत्याचार किये। दिल्ली में बहलोल लोदी का शासन स्थापित होने के बाद दिल्ली तक लोदियों की सत्ता स्थापित हो गई और उन्होंने पूरे तत्कालीन जिसमें पाकिस्तान का पश्चिमी पंजाब, वर्तमान पंजाब, हरियाणा व हिमाचल का कुछ क्षेत्र आता है, को सात भागों में बाँटकर राज्य स्थिर कर दिया था लेकिन इसके बावजूद भी उसके बेटे सिंकदर लोदी व अगले वंशज इब्राहिम लोदी ने हिंदुओं पर बहुत अत्याचार किये। इस सारी पृष्ठभूमि में बाबर के आक्रमण व उसकी परिणति की संभावना को देखते हुए श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने बाबर को चुनौती दी। इन आक्रमणों के समय भारतीय राजाओं ने समर्पण किया जिसकी चिंता श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने अपने शब्द में इस तरह किया है-

खत्रीयां दा धर्म छोडिआ,
मलेश भाख्या गई ।।

यानि कि क्षत्रिय, जिनको धर्म व अपनी प्रजा के धर्म की रक्षा करनी थी उन्होंने अपने इस दायित्व से विमुख होकर विदेशी आक्रांताओं जिनके लिए श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने मलेश शब्द प्रयोग किया है, कि वे अपने दायित्व से मुक्त हो गये और मुस्लिम आक्रांता हिंदुओं पर अत्याचार करना अथवा उनका धर्म परिवर्तन कर देना, अपना धार्मिक व राजनैतिक दायित्व समझते थे। हिंदुओं को धर्म परिवर्तन के लिए भारी टैक्स लगाया जाता था ताकि गरीब लोग इस परिस्थिति के दबाव में अपना धर्म परिवर्तन कर दें, दूसरी ओर उन्हें अनेक तरह से बेइज्जत किया जाता था। डॉ. कुलविन्दर कौर मिनहास ने अपनी पुस्तक अरसी नूर क्रांतिकारी गुरुनानक के पृष्ठ 51-52 में यह लिखा है कि -

भारत में धर्म का अर्थ कोई विशेष पूजा पद्धति नहीं बल्कि एक जीवन दर्शन व जीवन पद्धति है। हजारों वर्षों से इस भारत के लोगों ने अपने लिए जो आध्यात्मिक चिंतन, सांस्कृतिक दृष्टिकोण एवं सभ्याचारिक व जीवन पद्धति अपनायी थी, उसको बचाने के लिए शस्त्र के धारक तो अपने कर्तव्य से विमुख हो गये लेकिन शास्त्र के धारकों ने समाज को बचाने के लिए अलख जगाये रखी।

'पंजाब में मुसलमानों का बोलबाला था। मुसलमान राज के नशे में थे कि अल्लाह ने हिंदुओं को मुसलमानों के गुलाम रहने के लिए ही बनाया है। मुसलमान हिंदुओं को धरती की तरह समझते थे। उनका कहना था कि अगर हिंदुओं से कोई चांदी मांगी जावे तो उनकों बहुत ही अधीनगी के साथ सोना पेश करना चाहिए। जे कोई मोमन हिंदुओं के मुँह में थूकना चाहे तो हिंदू को अपना मुँह खोल देना चाहिए ताकि मुसलमान को थूकने में कोई तकलीफ न हो।' उन्होंने इसी पुस्तक में शेख हमदानी द्वारा हिंदुओं पर अंकित पुस्तकों का विवरण पुस्तक (सोर्सेज आफ इंण्डियन ट्रेडिसन पृष्ठ 489-90) के संदर्भ से निम्न प्रकार अंकित किया है -

हिंदुओं को निम्न कार्यों की आज्ञा नहीं थी -

1. नये मंदिरों का निर्माण तथा पुराने मंदिरों की मरम्मत करने की।
2. मुसलमानों की तरह कपड़े पहनने व नाम रखने व उंगलियों में अंगूठी पहनने की।
3. घोड़े उपर काठी व लगान डालने की व शस्त्र पहनने की।
4. किसी भी हिंदू को मुसलमान के पड़ौस में घर बनाने, कब्रिस्तान के नजदीक दाह संस्कार करने तथा मृत्यु पर जोर-जोर से ऊँची आवाज में शोक प्रकट करने तथा अपने घर पर किसी मुसलमान को नौकर रखने की इजाजत नहीं थी।
5. हिंदुओं को पहचान के लिए अलग प्रकार का वेश धारण करने, मुसलमानों का विशेष सत्कार करने, उनकी मेहमाननवाजी करने की भी अनिवार्यता थी। ऐसा न करने पर उसकी संपत्ति को जप्त करने व परिवार के सदस्यों को पकड़कर उन्हें दण्ड देने का अधिकार था। इस कारण भारत की कला व संस्कृति प्रफुल्लित होने की बजाय, अधोगति की तरफ जाने लगी।

ऐसी परिस्थितियों में श्री गुरुनानक

देव जी महाराज ने समाज को जाग्रत करने के लिए यह फरमाया कि यदि जीते हुए इज्जत चली जाती है तो सब खाया-पीया हराम है-

जे जीवंदिआं पतु लत्थी जाये।
सभु हराम जेता कुछु खाये।।

ऐसे में श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने यह भी उपदेश दिया कि सिद्ध पुरुषों आप लोग पर्वतों में जाकर छिप गये हैं ऐसे में इस जगत का कल्याण कौन करेगा। भाई गुरदास जी ने श्री गुरुनानक देव जी महाराज के बारे में वर्णन करते हुए इसका अंकन अपनी पहली बार के पउड़ी 29 में निम्न प्रकार किया है -

फिरि पुछणि सिध नानका मात लोक विचि किआ वरतारा?

सभ सिधी इह बुझिआ कलि तारनि नानक अवतारा। बाबे आखिआ, नाथ जी! सचु चंद्रमा कूड़ु अंधारा। कुड़ू अमावसि वरतिआ हउ भालणि चढ़िआ संसारा। पापि गिरासी पिरथमी धउलु खड़ा धरि हेठ पुकारा। सिध छपि बैठे परबती कउणु जगति कउ पारि ख्तारा। जोगी गिआन विहूणिआ निसदिनि अंगि लगाए छारा ।

...बाझु गुरु डुबा जगु तारा।। 29 ।।

यह एक समाज जागरण की प्रकिया थी। श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने तत्कालीन समाज को आध्यात्मिक उच्चता पर ले जाकर आत्मा की अजरता, अमरता का उपदेश दिया तथा परमात्मा को सर्वशक्तिमान बताकर मृत्यु का भय मन से निकाला जिसके कारण इस आध्यात्मिक प्रवाह में श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज की शहादत समाज के सामने आयी जिसने सारे भारत को झिंझोड़ कर रख दिया। श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज ने मृत्यु को स्वयं चुना जिसका प्रभाव दूरस्थ तक हुआ। सुदूर महाराष्ट्र से समर्थ गुरु रामदास इस शहादत को सुनकर पंजाब आये और उस समय गद्दी पर विराजमान श्री गुरु हरगोविंद जी महाराज से उनके उत्तराखण्ड स्थित श्रीनगर में भेंट हुई। श्री गुरु हरगोविंद जी महाराज (छठे गुरु) को राजसी लिबास, घोड़े पर शस्त्र धारण कर आते हुए देखकर उन्होंने फरमाया कि मैं तो श्री गुरुनानक की गद्दी पर किसी संत के दर्शन करने आया था लेकिन आप तो राजसी ठाठबाठ में हैं, तब गुरुजी ने कहा कि 'बाहर अमीरी है, अंदर फकीरी है' उन्होंने रामदास जी को यह कहा कि शास्त्र की रक्षा के लिए शस्त्र को होना भी जरूरी है इसलिए हमने मीरी-पीरी यानि संत सिपाही की दो तलवारें पहनी हैं। गुरुजी ने उन्हें एक शस्त्र गुफ्ती भेंट में दी, जो आज भी सज्जनगढ़ (सितरा) के किले में समर्थ गुरु रामदास जी के मंदिर में सुशोभित है। कुछ विद्वानों की यह हिम्मत है कि समर्थ गुरु रामदास जी ने इसी आवश्यकता को समझते हुए छत्रपति शिवाजी को खड़ा किया जिन्होंने धर्म को आधार बनाकर 'हिंदू पथ पातशाही' की राज्य सत्ता स्थापित की। गुरुनानक देव जी महाराज की इसी प्रेरणा की निरंतरता में भाई मतीदास, भाई सतीदास, भाई दयाला जी हुए जिन्होंने बड़ी सहजता से मृत्यु का आलिंगन किया तथा श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज ने इसी धर्म की रक्षा के सिद्धात की प्रेरणा में खालसा पंथ की स्थापना की, जिसमें ऐसे मरजीवणें पैदा किये कि जो हँस -हँस कर सूली पर चढ़ गये, अपनी खोपड़ी उतरवा ली। माताओं ने सहज रहकर अपने बच्चों के टुकड़े-टुकड़े करवाकर अपने गले में पहन लिये जिससे देश की संस्कृति बच सके।

... अंग्रेजों के विरुद्ध सबसे पहले सन् 1913 में गदर पार्टियों का निर्माण पंजाब के निवासियों ने ही किया जिनके खून में गुरुओं की शिक्षा थी। अंग्रेजों के विरुद्ध गुरुद्वारों की स्वतंत्रता के लिए सत्याग्रही आंदोलन भी भारत में सबसे पहले इन पंजाबी सपूतों ने ही बड़ी शिद्दत से किया तथा देश की आजादी के लिए फांसी चढ़ने वाले कालेपानी यानि आजीवन कारावास की सजा पाने वाले पिचहत्तर प्रतिशत (जलियावाला बाग में 799/ 1300 मृत्युदंड, फांसी की सजा में 93/21, आजीवन कारावास में 2147/ 2646 तथा आजाद हिंद फौज में 28000/ 4200) के लगभग सिख ही थे। यह सब श्री गुरुनानक देव जी महाराज द्वारा बाबर को चुनौती देकर संत सिपाही की भूमिका हमें व भारतवासियों के समझाने के कारण ही संभव हुआ।

भारत में धर्म का अर्थ कोई विशेष पूजा पद्धति नहीं बल्कि एक जीवन दर्शन व जीवन पद्धति है। हजारों वर्षों से इस भारत के लोगों ने अपने लिए जो आध्यात्मिक चिंतन, सांस्कृतिक दृष्टिकोण एवं सभ्याचारिक व जीवन पद्धति अपनायी थी, उसको बचाने के लिए शस्त्र के धारक तो अपने कर्तव्य से विमुख हो गये लेकिन शास्त्र के धारकों ने समाज को बचाने के लिए अलख जगाये रखी। जिसमें दक्षिण के नारायण गुरु रामानुजम, पूर्व के शंकरदेव सहित उत्तरप्रदेश के रामानंद, कबीर, हरिदास व भीखण, बिहार के वेणी, राजस्थान के धन्ना भक्त व राजा पीपा, बंगाल/उड़ीसा के जयदेव, महाराष्ट्र के नामदेव, परमानंद व त्रिलोचन, सिंध के सदना, पंजाब के शूरदास आदि भक्तों, संतों ने जो अलख जगायी थी, गुरुजी उनके अनुयायियों से मिले और उक्त संतों की वाणी भी एकत्रित करके अपने साथ लेकर आये जिसे कालांतर में श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज ने पोथी साहिब में स्थान दिया और बाद में श्री गुरुगोविंद सिंह जी महाराज ने इसे श्री गुरुग्रंथ साहिब के रूप में स्थापित किया। इन सब भक्तो, संतों जिन्होंने न केवल समाज को जाग्रत किया बल्कि जुल्म का भी प्रतिकार किया व कष्ट सहे, उनकी वाणी श्री गुरुनानक देव जी महाराज की आध्यात्मिक परंपरा के रूप में हमारे समक्ष श्री गुरुग्रंथ साहिब के रूप में हमें प्रेरणा दे रही है। हम जानते हैं कि फिरोज शाह तुगलक ने भक्त नामदेव को हाथी के नीचे रौंदने तथा सिकंदर लोदी ने भक्त कबीर को हाथ-पैर बांधकर गंगा में फेंकने का हुक्म दिया था। इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने न केवल अध्यात्म व जागृति की अलख जगायी बल्कि ऐसे समस्त प्रयासों को भी

अपने ध्येय का ही हिस्सा मानते हुए उसे पुनः समुचित सम्मान दिया।

श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में भारत की इस सांस्कृतिक व आध्यात्मिक परंपराओं का विवरण पृष्ठ 1031 पर श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में अंकित है –

'सतजुग तैं माणियों, ... 1031 धर्म पर आक्रमण केवल बाहर से ही नही हो रहे, बल्कि अंदर से भी हो रहे थे। धर्म के नाम पर झूठा आडम्बर, अंधविश्वास तथा एक-दूसरे पर अपनी बौद्धिक श्रेष्ठता सिद्ध करने का धार्मिक नेताओं का आपसी अहंकार व टकराव भी इस देश की संस्कृति व धर्म को नष्ट कर रहा था।

भाई गुरदास जी ने उस परिस्थिति का वर्णन करते हुए कहा है कि धार्मिक नेतृत्व में आपसी वाद विवाद बढ़ गये थे जिसका जिक्र उन्होंने पहली बार के छंद 19 में किया है –

भई गिलानि जगति बिचि
चारि वरनि आस्त्रम् उपाए।
दसि नामि संनिआसीआ
जोगी बारह एंथि चलाए।
जंगम अते सरेवड़े दगे दिगंबरि वादि कराए। ब्रह्मणि बहु परकारि करि सासस्त्रि वेद पुराणि लड़ाए। खटु दरसन बहु वैरि करि नालि छतीसि पखंड रलाए। ... तंत मंत रासाइणा करामाति कालखि लपटाए।
इकसि ते बहु रुपि करि
रुपि कुरूपी घणे दिखाए ।
... कलिजुगि अंदरि भरमि भुलाए।।

श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने अपनी वाणी में धर्म के नाम पर पोंगा पंथी का वर्णन भी किया है।

समाज में इस हीनता से ही भक्ति आंदोलन शुरू हुआ तथा उसी की प्रफुल्लता में गुरु साहिब ने जागरण किया जो कि वस्तुत: इस भारतवर्ष के अध्यात्म व संस्कृति को बचाने हेतु था। भक्ति आंदोलन का हम विश्लेषण करें तो उसके मुख्य तथ्य इस प्रकार थे कि दुखी जनता के साथ सहानुभूति प्रकट की जाये, हिंदू व मुसलमान श्रद्धालुओं में कडवाहट कम की जावे ताकि सामाजिक स्तर पर संघर्ष न हों। हिंदू धर्म का विश्लेषण इस ढंग से तथा लोगों की भाषा तथा काव्यात्मक शैली में किया जावे कि आमजन को मुस्लिम धर्म से ज्यादा अपने धर्म में अधिक प्रेरणा मिले। साथ ही हिंदू समाज में कोढ़ की तरह व्याप्त ऊँच-नीच, जाति-पाँति से मुक्त समाज का निर्माण हो। इस प्रकार इस राष्ट्र के धर्म व संस्कृति के संरक्षण में श्री गुरु महाराज जी ने प्रकाश स्तंभ का कार्य किया।

श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने तत्कालीन राजसत्ता को कड़े शब्दों में चुनौती दी तथा उन्होंने शेर की तरह क्रूर तथा उनके कर्मचारियों को कुत्तों की तरह हराम का माल खाने वाले बताया। श्री गुरुग्रंथ साहिब पृष्ठ 1288 राजे सिंह मुकद्दम कुत्ते।। भाई गुरुदास जी ने भी इसी परिस्थिति को अपनी पहली बार की तीसवीं पीढ़ी में वर्णन करते हुए जहाँ जनता की अज्ञानता का जिक्र किया है, वहीं बाढ़ द्वारा खेत को खाना, यानि राजसत्ता द्वारा जनता को नुकसान पहुँचाने का वर्णन किया है –

कलि आई कुते मुही खाजु
होइआ मुरदार गुसाई ।
राजे पापु कमांवदे उलटी
वाड़ खेत कउ खाई।
परजा अंधी गिआन बिनु कूड़
कुसतु मुखहु आलाई ।
चेले साज वजाइदे नचनि
गुरु बहुतु बिधि भाई।
चेले बैठनि धरॉ विचि
गुरु उठि धरीं तिनाड़े जाई ।
काजी होए रिसवती वढी
लै कै हकु गवाई।
इसत्री पुरखै दामि हितु
भावै आइ किथाउं जाई।
वरतिआ पापु सभसि
जगि मांही।। 30 ।।

भारत की प्राचीन परंपरा में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान था। मैत्रेयी, गार्गी आदि महान विदुषियाँ हुई हैं। कैकेयी का राजा दशरथ के साथ जाना भी नारी का पुरुष के साथ युद्ध में भी सहचरी होने का प्रमाण है। भारत में नारी का बहुत सम्मान था। शास्त्र में यह श्लोक है –

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।

कालांतर में विदेशी आक्रांताओं के कारण नारी न केवल परदे की चीज बन गई बल्कि व्यभिचार का माध्यम भी बन गई। श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने फरमाया कि औरतों की इतनी बुरी स्थिति हो गयी थी कि कई मुसलमान उसका उपयोग शिकारियों के रूप में करने लगे तथा उनकों लोभ-लालच दिखाकर अपनी ओर आकर्षित करते तथा उनको मुसलमान बनाकर बाद में वेश्या बना दिया जाता (डॉ. कुलविन्दर कौर पृष्ठ 55)।

इन परिस्थितियों में नारी समाज की हेयतम् स्थिति में पहुँच गई और उसे पाप का सामान, भोग की वस्तु और पतन का कारण मानने के पूर्वाग्रह बना लिये गये जो कि इस राष्ट्र के जीवन दर्शन के सर्वथा विपरीत था। श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने यह फरमाया कि औरत इस सृष्टि की रचना का तथा सामाजिक व्यवहार का मुख्य आधार है। ऐसी औरत को कैसे बुरा कहा जा सकता है जिसकी कोख से राजा यानि श्रेष्ठ पुरुष पैदा होते हैं (श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने आशा की बार में फरमाया है)।

इस प्रकार श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने नारी के सम्मान को न केवल पुनर्स्थापित किया बल्कि और अधिक सुदृढ़ किया जिसका प्रमाण माता खीवी, बीबी सुलखणी, माता गंगा, माता गूजरी, बीबी रूपकौर व अनेक बलिदानी सिंघणियों के रूप में प्रगट होना है। जिस नारी विमर्श व सशक्तीकरण की आज चर्चा है, उसे सैद्धान्तिक रूप से श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने स्थापित किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने राष्ट्र संरक्षण व उसके निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है तथा उनके द्वारा की गई जन-जागृति आज भी हमारे लिए प्रेरणा का पुंज है। ❑

श्री गुरु नानक देव जी और समाज सुधार

डॉ. मनजीत कौर
गुरुवाणी चिंतक

सिख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी (1469-1539) के आविर्भाव कालीन युग में मुस्लिम शासकों की अदूरदर्शिता, धर्मान्धता, स्वेच्छाचारिता के परिणामस्वरूप भारतीय समाज में अशांति, अत्याचार तथा अन्याय व्यापक रूप से विद्यमान था। रूढ़िग्रस्त एवं दिग्भ्रमित समाज में व्यवस्था, आस्था एवं सामंजस्य स्थापित करने हेतु गुरु नानक देव जी ने अपनी मुखर वाणी द्वारा समूची मानवता का पथ प्रदर्शन किया। वस्तुत: उनकी दार्शनिक विचारधारा, सामाजिकता से जुड़ कर और भी पुष्ट हो गई। अत: उन्होंने सामाजिक अन्याय को समाप्त कर आदर्श समाज की कल्पना को साकार करने हेतु सामाजिक वैषम्य, रूढ़ियों, आडम्बरों एवं समस्त कुरीतियों के विरुद्ध रणभेरी बजा दी। समूची मानवता के मार्ग दर्शन हेतु उन्होंने चार महान धार्मिक यात्राएँ की, जिन्हें चार उदासियों के नाम से भी जाना जाता है।

गुरु नानक देव जी बनारस के संत कबीर जी, रैदास जी, बंगाल के चैतन्यदेव तथा असम के शंकरदेव जैसे विविध महान आध्यात्मिक गुरुओं के समकालीन थे। इन संतों की आध्यात्मिक सच्चाइयों के प्रति दृष्टिकोणगत समानता के बावजूद गुरु नानक की अन्तर्दृष्टि और आत्म-ज्ञान का संकेत मिलता है, मानव समाज के दलित वर्गों के प्रति उनकी करुणा से, अन्य धर्मों के प्रति उनकी सहनशीलता से तथा न्याय पूर्ण समाज के लिए उनके भावनात्मक समर्थन से तभी तो सभी मजहबों के लोग उन्हें अपना 'गुरु' तथा 'पीर' मानकर सिजदा करते हैं, उनकी अद्वैत भावना एवं समन्वय साधना को चित्रित करते एक शायर के ये शब्द कितने सार्थक हैं-

बाबर को जाबर कहने का हौसला, पराया हक न मारने की हिदायत, एक ईश्वर की उपासना पर बल देना तथा समूची मानवता में उस परमेश्वर की ज्योति का दर्शन करना तथा कर्म सिद्धांत को दृढ़ करवा कर समाज को आदर्श रूप प्रदान करने हेतु गुरु नानक देव जी ने उच्चतर मानव मूल्यों की स्थापना कर विघटित होते मानव मूल्यों एवं ह्रास होती भारतीय संस्कृति की पुन: प्रतिष्ठा की।

'बाबा नानक शाह फकीर, हिन्दू का गुरु मुसलमान का पीर।' यही नहीं डॉ. मुहम्मद इकबाल ने तो गुरु नानक को 'मर्दे कामिल' मान कर अपनी श्रद्धा भावना की सुन्दर अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में प्रस्तुत की है-

फिर उठी आखिर सदा तौहीद की पंजाब से। हिन्द को इक मर्दे कामिल ने जगाया ख्वाब से। दान विद्वान भाई गुरदास जी ने गुरु नानक देव जी के अवतार रण के उद्देश्य पर कितना सटीक लिखा है-

सतिगुरु नानक प्रगटिआ
मिटी धुंध जग चानण होआ।
जिउ कर सूरज निकलया
तारे छपे अंधेर पलोआ।

अर्थात् गुरुनानक देव जी के आगमन से अज्ञानता एवं अत्याचारों का अन्धकार मिट गया सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश हो गया, जैसे सूर्योदय से तारे छिप जाते हैं और सर्वत्र प्रकाश हो जाता है। 'सिख त्रिरत्न'-किरत करो, नाम जपो तथा वंड छको अर्थात् मेहनत से नेक कमाई करते हुए ईश्वर का नाम जपो तथा मिल बाँट कर खाओ का पावन संदेश देने वाले भी गुरु नानक देव जी केवल आध्यात्मिक गुरु ही नहीं बल्कि एक महान क्रान्तिकारी तथा समाज सुधारक सिद्ध हुए। एक ऐसे सुमेलकारी संत जिनका विरोध किसी जाति धर्म या धर्म ग्रंथ से न होकर, समयानुसार उनमें प्रविष्ट हुई कुरीतियों तथा आडम्बरों से तथा धर्मावलम्बियों से था जो स्वार्थवश मानव-मानव के बीच वैमनस्य एवं नफरत के बीज बोकर अपना अपना उल्लू सीधा कर रहे थे, जर्रे-जर्रे में उस परमेश्वर का दीदार करने वाले गुरु नानक जी का पावन संदेश था-

सभु में जोति जोति है सोई।।
तिंस दे चानणि सभ महिं चानणु होई।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, पन्ना 13)

गुरु नानक देव जी ने कलयुगी जीवों का मार्गदर्शन करते हुए सहज एवं सरल ढंग से समझाया कि यह कर्म भूमि नेक कर्म करने हेतु मिली है क्योंकि प्रत्येक जीव प्रकृति के अटल नियम के अनुसार जैसा बीज बोता है वैसा ही फल उसे भोगना पड़ता है यथा-

जेहा बीजै सो लुणे करमा संदडा खेत।।

(पन्ना 134)

इसलिए गुरुदेव की बाणी का फैसला है कि पाप और पुण्य महज कहने मात्र के लिए नहीं बने अपितु उन्हें कर्म-भूमि पर करते हुए संस्कार रूप में अपने साथ लेकर मालिक की दरगाह में जायेगा। जपुजी साहिब में गुरु साहिब फरमान करते हैं।

धुनी पापी आक्षण नाहिं।।
करि करि करणा लिखि लै जाहु।।
आये बौजि आपे हो साहु।।
नानक हुकमी आवहु जाहु।।(पन्ना 4)

अत: यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक प्रतीत होता है कि चिन्तकों के चिन्तनानुसार कर्म तीन प्रकार के होते हैं।
1. मानसिक, 2. कायिक, 3. वाचिक
मानसिक- अर्थात् मन द्वारा विचारे गए कर्म।
कायिक-शरीर द्वारा किए गए कर्म।
वाचिक-वाणी द्वारा किए गए कर्म।
ठीक इसी तरह फल भी तीन तरह के हैं।
1. क्रियेमान, 2. प्रारब्ध, 3. संचित
क्रियेमान-जो कर्म जीव द्वारा किये जा रहे हैं।
प्रारब्ध-जो कर्म जीव द्वारा भोगे जा रहे हैं।

संचित-जो कर्म पिछले लेखे में जमा हैं लेकिन भोगने बाकी हैं। अत: मन-वचन-कर्म से जीव जिस तरह के कर्म करता है उसे संस्कार रूप में अपने साथ ले जाता है और उस मालिक की दरगाह में उसका लेखा-जोखा देना ही पड़ता है। यथा नानक बाणी-

करमी करमी होइ वींचारू।।
सचा आपि सचा दरबार।।

(पन्ना 7)

नानक वाणी के सन्दर्भ में भाई गुरदास जी ने बहुत सुन्दर लिखा है कि जब गुरु नानक देव जी से प्रश्न किया गया कि आपकी नजर में हिन्दू बड़ा है या मुसलमान तो गुरु नानक देव जी का कितना सटीक जवाब था-

पुनि फोलि किताब नो
हिन्दू वड़ा कि मुसलमानोई
बाबा आखे हाजीआ सुभि
अमला बाझों दोनों रोई।

(पउड़ी 33)

अर्थात् शुभ अमलों (कर्मों) के बिना दोनों का जीवन व्यर्थ है।

अत: जिज्ञासु मन का प्रश्न उठा कर फिर बहुत सुन्दर जबाव सुझाते हुए इस संदर्भ में गुरुदेव का चिन्तन है-

किंव सचिआरा होईऐ
किंव कूड़े तुटै पालि।।
हुकमि रजाई चलना
नानक लिखिआ नालि।।

(जपुजी साहिब)

अर्थात् उस परमेश्वर का प्रकाश अन्त:करण में हो सके इसके लिए योग्यता कैसे प्राप्त हो? झूठ और विकारों का पर्दा कैसे हटे? गुरुदेव के चिन्तनानुसार केवल एक ही मार्ग है- उस ईश्वर की रजा (हुकम) में हर हाल में खुश रहना। उसके आदेश को प्रसन्नतापूर्वक मानना ही उस मालिक की दरगाह में स्वीकृति की पहली शर्त है और ईश्वर के हुकम को जो गुरु कृपा से समझ लेता है, वह भूलकर भी अहंकार की बात नहीं करता यथा-

नानक हुकमै जे बुझे त हउमै कहै न कोई।।

गुरु नानक देव जी के चिन्तन की विलक्षणता कि उन्होंने पहले पहल नारी को पुरुष के समान दर्जा दिलवाया उसके हक में बुलन्द नारा दिया-

सो किंउ मंदा आरिखौ जितु जमैं राजान।।

(पन्ना 473)

अर्थात् पीरों-पैगम्बरों, संत-महापुरुषों तथा राजाओं, महाराजाओं की जननी किस तरह निम्न (नीच) हो सकती है? सचमुच गुरु नानक देव जी की रहमतों की बदौलत आज भी सिख समाज में नारी का गौरवमयी स्थान है।

यही नहीं जीवन के प्रत्येक धरातल से मानव शोषण का उन्मूलन कर दिग्भ्रमित मानवता को एकता, भ्रातृभावना, सर्वसाझी विचारधारा तथा विश्वकुटुम्बकम् के भाव को दृढ़ करवाया। पहले पहल संगत एवं पंगत की परम्परा चलाई जहाँ ऊँच-नीच, अमीर गरीब, राजा रंक, नारी पुरुष, छोटा-बड़ा सभी एक साथ बैठ कर भोजन (लंगर) ग्रहण करते। यह पावन परम्परा रहती दुनिया तक कायम रहेगी।

अपनी प्रमुख रचना 'आसा दी वार' में गुरु नानक देव जी ने मीठा बोलना तथा विनम्रता धारण करने को समस्त गुणों का सार निष्कर्ष बताते हुए कितना सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया -

मिठत नीवी नानका
गुण चंगिआईआ ततु।।

(पन्ना 470)

साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया यह विनम्रता और मीठी वाणी केवल स्वार्थ सिद्धि हेतु ही ना हो अपितु हृदय से धारण की हई होनी चाहिए यथा-

समु को निवै आप
कउ पर कउ निवै न कोइ।।
धरि ताराजू तोलीए
निवै सू गउरा होइ।।
अपराधी दूना निवै
जो हंता मिरगाहिं।।
सीसि निवाइए किआ
थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि।।

अर्थात् अपराधी व्यक्ति दुगुना झुकता है-जैसे हिरण का शिकार करने वाला शिकारी निशाना साधते हुए झुक जाता है लेकिन उसका मनोरथ जीव हत्या करना है इसलिए मात्र सिर झुकाने से क्या होगा अगर हृदय अशुद्ध हो और छल-कपट से भरा हो।

अत: यहाँ करनी और कथनी की समानता पर बल दिया गया है।

बाबर को जाबर कहने का हौसला, पराया हक न मारने की हिदायत, एक ईश्वर की उपासना पर बल देना तथा समूची मानवता में उस परमेश्वर की ज्योति का दर्शन करना तथा कर्म सिद्धांत को दृढ़ करवा कर समाज को आदर्श रूप प्रदान करने हेतु गुरु नानक देव जी ने उच्चतर मानव मूल्यों की स्थापना कर विघटित होते मानव मूल्यों एवं ह्रास होती भारतीय संस्कृति की पुन: प्रतिष्ठा की। उनकी वाणी मानवतावादी दृष्टिकोण, सर्वधर्म समन्वय तथा विश्वकुटुम्बकम् के भाव दृढ़ करवाती है। गुरुदेव के प्रभु-प्रेम तथा मानव प्यार में भीगे संदेश आज भी प्रासंगिक है तथा रहती दुनिया तक समूची मानवता की रहनुमाई कर मार्ग दर्शन करते रहेंगे। आओ! उनके पावन प्रकाश पर्व पर प्रण करें कि हम उनके अमूल्य सिद्धातों एवं उपदेशों को आत्मसात कर उन पर हृदय से अमल कर अपना बेशकीमती मानव जीवन सफल कर सके। ❑

जगत् गुरु बाबा नानक साहिब जी

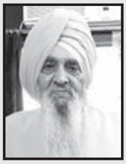

स. चिरंजीव सिंह
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष,
राष्ट्रीय सिख संगत

श्री गुरु नानकदेव जी के विचार ही सिख दर्शन का निचोड़ और मूलाधार हैं। उनके पश्चात् हुए अन्य गुरुओं ने श्री गुरु नानकदेव जी के विचारों का प्रतिपादन, अनुवाद और विस्तार किया है। इस प्रकरण में श्री गुरु नानकदेव जी के ही विचार प्रश्न रूप में प्रस्तुत किए हैं जो इस प्रकार हैं। श्री गुरु नानकदेव जी के कौन से विचार थे? श्री गुरु नानकदेव जी के विचार और हिन्दू तथा इस्लाम दर्शन के साम्य और भेद का स्वरूप क्या है? श्री गुरु नानकदेव जी की रचनाओं में तथा श्री गुरुग्रंथ साहिब में संकलित सभी रचनाओं में खिष्टी दर्शन या मतों का कहीं उल्लेख है भी या नहीं?

ईश्वर के अस्तित्व की मान्यताः सिख मतावलम्बी ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। मूलतः ईश्वर का अस्तित्व है या नहीं। इस विवाद में श्री गुरु नानकदेव जी कभी नहीं पड़े। श्री गुरु नानकदेव जी एवं अन्य सिख गुरुओं को ईश्वर के अस्तित्व में जरा भी संदेह नहीं था। वे ईश्वर के अस्तित्व को निश्चित रूप से मानते थे।

'मूल मंत्र' : श्री गुरु नानकदेव जी ने हरिनाम को ही मूलमंत्र माना है। अपनी माझ राग की रचना में कहते हैं 'मूल मंत्रु हरिनाम रसायणु, कहु नानक पूरा पाया' जपुजी के प्रारम्भ में परमेश्वर का स्वरूप में बताया गया है। भाई गुरदास जी (तीसरे गुरु श्री अमरदास जी के भतीजे) ने कहा है कि यह पहली प्रक्रिया ही मूल मंत्र तथा बीज मंत्र है- ओंकर सतिनामु करता पुरख निरभउ निरवैरु अकाल मुरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि।।'श्री गुरुग्रंथ साहिब की प्रत्येक रचना का प्रारंभ मूल मंत्र के इस अंश सतिगुर प्रसादि' से किया जाता है। ओम् एकमेव अद्वितीय है। सत् परमेश्वर का नाम है। परमेश्वर सर्व प्रथम, विश्वकर्ता, निर्भय, निरवैर काल अतीत, आयोजन स्वयंभू है और वह श्री गुरु प्रसाद-ईश्वर से प्राप्त होता है। यह भावार्थ मूल मंत्र का है। ओम इस मूलमंत्र का और धन-धन गुरुग्रंथ का आरंभ ओम से होता है। ओम लिखकर श्री गुरु नानकदेव जी ने सूचित किया है कि परमेश्वर एक ही है। कि जिसने पर्वत, युग, वेद निर्माण किए हैं जो सबको मुक्ति देता है जिसके कारण ईश्वर निमुख जीवित रहता है। वही ओंकार है। उपनिषदों और गीता में भी परमेश्वर के स्वरूप के विषय में यही विचार है। प्रत्येक वेद मंत्र का प्रारम्भ ओम से होता है। छांदोग्यपनिषद में कहा है कि - उद्गीथ के नाम से जाना जाता है। उद्गथ समावेद का सार है तथा सामवेद, ऋग्वेद का सार है। (छांदोग्य 1:2:2) श्रीमद् भगवतगीता का वचन है- 'प्रणव सर्व वेदेषु' वेदों का मैं आका हूँ और - यह एकाक्षर ब्रह्म हैं। (अध्याय 7:8:13)।

परमेश्वर का स्वरूप श्री गुरु नानकदेव जी कहते हैं। परमेश्वर अखण्ड

आनंद स्वरूप है। उसे वर्णित करने के लिए समुद्र की सियाही बनाई जावे। वृक्षों की कलम बनाई जावे और सहस्रों जिह्वाओं से वर्णन किया जाये तो भी परमेश्वर का वर्णन नहीं किया जा सकता। श्री गुरु नानक जी ने बार-बार कहा है। ईश्वर ही विश्व का उत्पत्ति कर्ता और विनाशक कर्ता है। यह विचार जपुजी में आया है। परमेश्वर के स्वरूप के विषय उपनिषदों और गीता में भी यही विचार आया है। वैदिक दर्शन में परमेश्वर का वर्णन 'नेति नेति' कहकर किया है। कठोपनिषद् में कहा है, कि वह वाणी से, मन से, चक्षुओं से प्राप्त नहीं होता। वेद घोषित करते हैं एक ही ईश्वर का नाम लेना चाहिए। श्री गुरु नानकदेव जी ने कहा है - ईश्वर केवल एक है, यह मानते हुए भी उन्होंने देवी देवताओं का अस्तित्व अमान्य नहीं किया है। श्री गुरु नानक साहब ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश का अपनी रचना में कई स्थानों पर वर्णन किया है। श्री गुरु नानकदेव जी, जो तेहरवीं पौड़ी में संकेत में ब्रह्मा, विष्णु, महेश का उल्लेख मिलता है। श्री गुरु नानकदेव जी की मान्यता है कि सभी देवताओं को परमेश्वर ने नमन किया है। गीता 7, 20, 23 तथा वृहदारण्यकपनिषद्, 1, 4, 10 में यह विचार आया है कि परमेश्वर सभी देवताओं से भिन्न है और वह सर्वशक्तिमान तथा सर्वोपरि है। श्री गुरुग्रंथ साहब में यम, धर्मराज, यमदूत, यमराज, यमदण्ड शब्द बार बार आते हैं। श्री गुरुग्रंथ साहिब में यह मत बार बार प्रगट हुआ है, कि किये गए कर्मों का मनुष्य के पश्चात् यमराज विचार करते हैं तद्नुसार दण्ड या सद्गति देते हैं। श्री गुरु नानकदेव जी कहते हैं अलख अपार अगम, अगोचर, ना तिसकाल न करमा। श्री गुरु नानक देव जी के विचार में ईश्वर दृष्टा है। वह सर्वज्ञाता है, सृष्टि में अंतर बाह्य विद्यमान है। इस नाशवान जगत में ईश्वर अचल निरंजन है।

श्री गरु नानक साहब के लिए सब संसार समान है। सभी प्रफुल्लित हो, सभी सुखी हो। परन्तु भारत पर बाबर के जुल्मों का आक्रमण इतना जबरदस्त हुआ। श्री गुरु नानकदेव जी अत्यंत क्रोधित हुए। बाबर के अत्याचारों के संबंध में श्री गुरुग्रंथ साहिब की वाणी दो बार अंकित है। एक वानी बाबर के हमले होने से पहले दृष्टा हमले के बाद पहली वाणी जब अन्य देशों में बाबर जुल्म कर रहा था तब श्री गुरु नानकदेव जी ने देशवासियों को सावधान किया।

उसी के द्वारा निर्मित जो माया है उससे भी वह अविलप्त, निर्मल, निर्लेप, निरंजन हैं श्री गुरु नानकदेव जी एवं अन्य गुरुओं के विचार से ईश्वर के उनके नामों में निरंकार महत्त्वपूर्ण नाम है। श्री गुरु नानक जी इसी संदर्भ में कहते हैं- 'ता तिस रुपु ना रेखिआ काई' आगे वह यह भी कहते हैं कि सभी में प्रकाश विद्यमान है और वह तुम्हारा (ईश्वर का) ही है। उनकी सुप्रसिद्ध आरती के शब्द हैं, 'खोजत खोजत घटि घटि दोखिआ'। गुरुजी की दृष्टि से ईश्वर का मूल स्वरूप निर्गुण है और वही सगुण रूप धारण करता है। जपुजी में उन्होंने कहा है- ईश्वर महान है और उसका सिंहासन बहुत उच्च स्थान पर है।

ईश्वर के नाम श्री गुरु नानकदेव जी और अन्य गुरुओं ने अपनी रचनाओं में ईश्वर के हरि और राम नाम का ही अधिक उपयोग किया है। इसके अतिरिक्त बनवारी, दामोदर, मधुसूदन, श्रीरंग, बिठ्ठल इत्यादि नाम भी उनकी रचनाओं में मिलते हैं। जिन स्थानों पर मुसलमानों को उपदेश दिया है उन स्थानों पर अल्लाह या खुदा शब्द का प्रयोग किया है।

सृष्टि की उत्पत्ति - श्री गुरु नानकदेव जी ईश्वर को ही सृष्टि का आदिकारण मानते हैं। जपुजी साहिब में श्री गुरु नानकदेव जी ने कहा है कि प्रभु की सृष्टि में लाखों आकाश, लाखों पाताल हैं। श्री गुरु नानकदेव जी यह भी कहते हैं कि प्रथम शून्य था पर उसके साथ ही ईश्वर और उसकी कल्पना शक्ति भी थी। उस कल्पना शक्ति के अनुसार तेज, वायु और जल उत्पन्न हुए। सृष्टि की भी उत्पत्ति के संबंध में नारदीय शुक्र की धारणा इन दोनों की समानता एक ही हैं। दोनों समान हैं।

सिख विचार धारा में गुरु की संकल्पना बड़ी महत्त्वपूर्ण है। श्री गुरु नानकदेव जी ने 'नाम' और शब्द के समान ही 'गुरु' शब्द का भी अनेक अर्थों में प्रयोग किया है। गुरु के बिना भक्ति नहीं हो सकती और प्रेम नहीं हो सकता। श्री गुरु बिना संत संगत नहीं होती। यदि गुरु का मार्गदर्शन न मिले तो आदमी अपने ही प्रयत्नों में अंधे की तरह व्यर्थ ही भटकता रहता है। श्री गुरु के कारण मन मैल धुल जाता है और भक्त को जोड़ने वाला बीच की कड़ी अथवा भक्तों का मार्गदर्शक कहा गया है। श्री गुरु नानकदेव की रचनाओं में श्री गुरु को ही हरि या परमेश्वर कहा है। श्री गुरु ईश्वर है यह विचार कई जगह व्यक्त किया गया है। सिद्ध गोष्ठी में शब्द संबंधी अपने विचार व्यक्त करते हुए शब्द को ही ईश्वर की आवाज और वही गुरु शब्द कहा है। गुरुओं की व्याख्या और सिद्ध गोष्ठी में सतिनाम की तरह बार बार आने वाला शब्द है। 'सतगुरु' स्वयं श्री गुरु नानकदेव जी के अपने शरीर धारी कोई

भी गुरु नहीं थे।

सदाचरण अथवा सद्व्यवहार ईश्वर के अस्तित्व पर पूरा विश्वास हो जाने के बाद 'मुमुक्ष' को स्वाभाविक रूप से सद्व्यवहार और सदाचरण करना अनिवार्य हो जाता है। श्री गुरु नानकदेव जी ने सत्य की महत्ता को समझाने का और उससे भी कहीं अधिक सत्य के जीवन में उतारने का कठोर आग्रह किया है। उन्होंने जोर देकर कहा कि सत्कर्म के बिना भक्ति या पूजा व्यर्थ है। श्री गुरु नानकदेव जी इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि मनुष्य की पहचान उसके कर्मों से होती है। 'जेहे करम कमाइ तेहा होइसी'। ठीक यही विचार उपनिषदों में पाए जाते हैं। वृहदारण्यक उपनिषद् में लिखा है कि मनुष्य उसके कर्मों और व्यवहार से पहचाना जाता है। पुण्य कर्मों से पुण्यवान और पाप कर्मों से पापी बनता है। कठोपनिषद् में कहा गया है–'नाकि विरतो दुष्चरितान' दुराचरण के हटे बिना आत्म प्राप्ति की आशा व्यर्थ है, 1:2:24 प्रश्नोपनिषद् को सिरात 1:16 है कि जिसके मन में शत्रुता का भाव है, असत्य कपट है उसके लिए ब्रह्मलोक का द्वार बंद ईश्वर की प्रेममयी भक्ति श्री गुरु नानकदेव जी ने हमेशा कहा है कि ईश्वर की प्रेममयी भक्ति ही मुक्ति का मार्ग है। इस प्रकार की भक्ति के अन्तर्गत ईश्वर का सर्व व्यापकत्व, सर्वश्रेष्ठ व मान्य करना, मन में उसके प्रति भय का अनुभव करना, सम्पूर्ण रूप से उसकी शरण में जाना, उसकी स्तुति करना आदि बातें समाविष्ट हैं। वे मानते हैं कि एक तू ही, एक तू ही है। श्री गुरु नानकदेव जी की रचना में ईश्वर को स्वामी और भक्त कहकर ईश्वर से भावात्मक संबंध प्रस्थापित किया हुआ मिलता है। ईश्वर को पति और जीव पत्नी, यह रूपक सिख साहित्य में बराबर आया है। श्री गुरु नानकदेव जी की एक भावपूर्ण रचना में पति मिलन के लिए

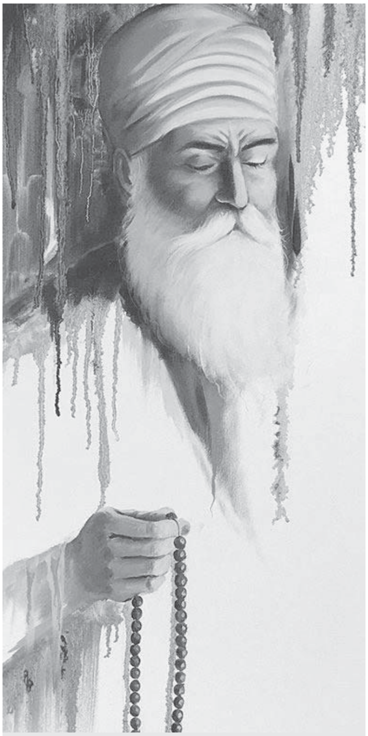

श्री गुरु नानक जी ने बार-बार कहा है। ईश्वर ही विश्व का उत्पत्ति कर्ता और विनाशक कर्ता है। यह विचार जपुजी में आया है। परमेश्वर के स्वरूप के विषय उपनिषदों और गीता में भी यही विचार आया है। वैदिक दर्शन में परमेश्वर का वर्णन 'नेति नेति' कहकर किया है। कठोपनिषद् में कहा है, कि वह वाणी से, मन से, चक्षुओं से प्राप्त नहीं होता। वेद घोषित करते हैं एक ही ईश्वर का नाम लेना चाहिए।

नींद मांगने वाली पत्नी का अत्यंत मनोहारी वर्णन है। जीव पत्नी अत्यंत आकर्षक केश विनाश करके ईश्वर पति से मिलने जाती है किन्तु पति स्वप्न में आकर चला जाता है। इसलिए वह रोती है, वह प्रार्थना करती है कि उसे बार-बार नींद आती रहे और वह पति दर्शन करती रहे।

वेदों के विषय में जो विचार श्री गुरु नानकदेव जी ने प्रगट किए उसके प्रति कई प्रकार के भ्रम दिखाई देते हैं। दुनिया में क्या अश(नहीं यह बताते हुए कहते हैं- 'वेद और संगीत अशु' नहीं है। वेदों के विषय में उनकी भूमिका निम्नलिखित अवतरण से स्पष्ट होती है। दीपक जलाने के बाद, जिस प्रकार अंधेरा दूर हो जाता है। जब सूर्य उदय होता है तब चन्द्रमा छिप जाता हैं उसी प्रकार ज्ञान का उदय होते ही अज्ञान हट जाता है। जो लोग वेद पाठन करते हैं, वाचन करते हैं किन्तु उसका गूढ़ अर्थ न समझ पाने के कारण दुखी हो जाते हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अर्थ समझ न आने के कारण दुखी हो जाते हैं। इससे यही स्पष्ट होता है कि केवल अर्थ समझे बिना वेद पठन करने वालों पर, वेदों के जो ज्ञाता है। उन पर टीका टिप्पणी की है, वेदों का पार नहीं है।

अर्थ रचना आज संसार के सब देशों में एक ही समस्या दुहाई बनी हुई है। Sociolist Economy (सामाजिक अर्थशास्त्र) सब समस्याओं को (मानो) हल कर देगी। परन्तु चाहे capital हो, चाहे Communist हों, सब देश आर्थिक संकट की दुहाई देता है। श्री गुरु नानक साहब सहित सब गुरुओं ने बड़ा छोटा सिद्धांत गुरु सिखों के माध्यम से संसार को दिया। वह त्रिसूत्री भाईचारा है जो इस प्रकार है-1. किरत (कार्य) करों, 2. वंड के (बांटकर) छको (खाओ), 3. नाम जपो। जीवन में कठोर परिश्रम मेहनत के बिना कुछ नहीं मिलता। किन्तु प्राप्ति के बाद स्वयं अकेले ही ग्रहण

न कर जितना संभव है सबको दो। खूब कमाओ, खूब बांटो। नाम जपो। भाव भगवान पर भरोसा करो, भगवान ही हमें परिश्रम करने की प्रेरणा देता है।

राष्ट्र चिन्तन (हिन्दुस्तान समालसी बोला)

श्री गरु नानक साहब के लिए सब संसार समान है। सभी प्रफुल्लित हो, सभी सुखी हो। परन्तु भारत पर बाबर के जुल्मों का आक्रमण इतना जबरदस्त हुआ। श्री गुरु नानकदेव जी अत्यंत क्रोधित हुए। बाबर के अत्याचारों के संबंध में श्री गुरुग्रंथ साहिब की वाणी दो बार अंकित है। एक बानी बाबर के हमले होने से पहले दृष्टा हमले के बाद पहली वाणी जब अन्य देशों में बाबर जुल्म कर रहा था तब श्री गुरु नानकदेव जी ने देशवासियों को सावधान किया। श्री गुरु नानक साहब की प्रसिद्ध वाणी तिलंग महला–1, श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के 722वें अंक पर शोभित है। उस बाणी के कुछ अंश इस प्रकार हैं–

जैसी मै आवै खसम की बाणी
तैसड़ा करी गिआनु वे लालो।
पाप की जंज लै काबलह धाइआ
जोरी मंगै दानु वे लालो ।
सरमु धरमु दुइ छपि खलोए
कूडु फिरै परधानु वे लालो॥
काइआ कपडु टुकु टुकु होसी
हिन्दुसतानु समालसी बोला॥
सच की बाणी नानकु आखै
सचु सुणाइसी सच की बेला॥

उपरोक्त वाणी बाबर के हमले से पहले की है। दूसरी वाणी हमला होने के बाद की है। जब श्री गुरु नानकदेव जी ने स्वयं लोगों पर अत्याचार देखे–

खुरासान खसमाना कीआ
हिंदुसतानु डराइआ॥
आपै दोसु न देई करता जमु
करि मुगलु चड़ाइआ॥
एती मार पई करलाणे तैं
की दरदु न आइआ॥
करता तू सभना का सोई॥

इस लंबी वाणी श्री गुरु नानक साहब ने जहाँ बाबर को जाबर कहा– वहाँ उन भारतीयों और महिलाओं पर भी ताना कसा। जो घर के अंदर राम नाम जपते और वेद शास्त्र पढ़ते थे। परन्तु बाहर आकर लोगों और सरकार के सामने कुरान शरीफ के गुण गाते थे। मुसलमानी पहनते थे।

वेश

जगत गरु बाबा श्री गरु नानकदेव जी और वाहिगरु आज संपूर्ण सिख समाज श्री अकाल पुरख का जाप करने के लिए वाहिगुरु, श्री वाहिगुरु सतनाम, वाहिगुरु के नाम का गुरु नानक जी के समय वाहिगुरु नाम का प्रचलन नहीं हुआ था। श्री गुरुग्रंथ साहिब में अन्य गुरुओं का जाप नहीं किया। श्री गुरुग्रंथ साहिब में भट्टों की वाणी में कल कवि ने पहली बार वाहिगुरु शब्द का परमात्मा प्राप्ति के लिए प्रारम्भ किया। भटों की वाणी में लगभग 12 बार वाहिगुरु शब्द, गुरुओं के प्रति श्रद्धा भावना के लिए उपयोग हुआ। भाई गुरदास जी ने अपनी रचित वाणी में वाहिगुरु शब्द की अनोखी एवं भावपूर्ण व्याख्या की है।

भाई गुरदास जी ने पहली बार 1 के 49वें पद में वाहिगुरु मंत्र का वर्णन इस प्रकार किया है–

1. सतिजुग सतिगुर वासुदेवा वक्त बिना नाम जपावै। 2. दुआपर, सतिगुर हरीकृष्ण टाहा हरि हरि नाम जपावै। 3. त्रेते सतिगुर राम जी राम जपै सुख पावै। 4. कलिजुग नानक गुरु गोबिंद गंगा गोबिंद नाम अलावै। 5. चार जागे चहुँ जुगी पंचाइण विच जाए समावै। 6. चारों अक्षर इककर वाहिगुरु जप मंत्र सुणावै। 7. जहाँ ते उपजिया फिर तहां समावै।।49।।

भाई गुरदास जी वाहिगुरु शब्द का संबंध चार युगों के साथ करते हैं। सतिजुग में सतिगुर नानकदेव जी वासुदेव अवतार हुए। उसमें से 'वावा' अक्षर लिया विष्णु का नाम जपने लगे। दुआपर में सतिगुर नानक जी हरि–अर्थात् कृष्ण का अवतार हुए। यहाँ से 'हाहा' अक्षर लिया, लोक हरी हरी जपण लगे। त्रेते जुग में सतिगुरु (नानक) जी राम जी का रूप हुए वहाँ से 'रारा' अक्षर लिया गया। लोक राम–राम उचार कर सुख प्राप्त करने लगे। कलिजुग में नानक गोबिंद द्वारा श्री गुरु नानक, गोबिंद हो प्रकटे। इसलिए लोग गोबिंद गोबिंद जपण लगे। यहाँ से 'गागा' अक्षर लिया। 5. चारों युगों में बताए इकठे ही जगे–भाव वाहिगुरु विच समाए है। 6. अर्थात् चारों अक्षर इकट्ठे करके वाहिगुरु (पाँचवा) जपु मंत्र (सिखों को गुरुजी ने जपने के लिए दिया है क्योंकि मंत्र जहाँ से उत्पन्न हुआ है फिर वहीं जा समाता है। भाव वाहिगुरु मंत्र वाहिगुरु मंत्र से उत्पन्न हुआ फिर वाहिगुरु में जो समानता है और वाहिगुरु जपने वालों को यहां वहां शक्ति देता है।

श्री गुरु नानकदेव जी ने प्राचीन धर्म शास्त्रों के उत्तम भाग को ढूंढ़ कर अपनी प्रभावशाली मधुर भाषा शैली में रचकर उसे लोक भाषा के द्वारा सर्वसाधारण लोगों तक पहुँचाया है। प्रारम्भ में वह बाबा नानक से पहचाने जाते थे। कालान्तर में उन्हें श्री गुरु नानक और उसके पश्चात् उनको गौरवशाली विरुदावली में श्री गुरु नानकदेव जी नाम ध्यान हो गया। मुसलमान उन्हें नानक शाह कहते थे। श्री गुरु नानकदेव जी महान दार्शनिक, सरल चित्त एवं प्रभावशाली प्रचारक तथा अत्यंत मृदु स्वभाव के अत्यंत स्नेहशील होने के साथ–साथ उच्च कोटि के कवि भी थे। उनके अलौकिक व्यक्तित्व के ये प्रकाशवान पहलू हैं। जिनकी चर्चा हमने इस लेख में की है। गुर सिखों की अरदास श्री गुरु नानकदेव जी से पहले शुरु होती है और गुरु नानक जी पर ही पूर्ण होती है।❑

गुरु नानक देव और भारतीय परंपरा

डॉ. शिवशरण कौशिक
सह आचार्य, हिन्दी
राज. महा. राजगढ़, अलवर

जब गुरु नानक देव का जन्म हुआ तब उत्तर भारत का शासक बहलोल लोदी था, उसका उत्तराधिकारी सिकंदर लोदी और उसके बाद इब्राहम लोदी शासक बना। गुरु नानक के समय में बाबर ने मुगल साम्राज्य की नींव रखी तथा बाद में उन्हीं के समय में बाबर के बाद उसका पुत्र हुमायूं उसका उत्तराधिकारी हुआ। इससे पूर्व 10 वीं शताब्दी के साथ ही मध्य एशिया से मुसलमान आक्रमणकारियों के लगातार आक्रमण होने लगे थे। दिल्ली का मुख्य मार्ग पंजाब से गुजरता था, इसलिए इसी प्रांत के लोगों को सबसे अधिक कष्ट भोगने पड़े। अफगानों ने अपने राज्य कायम किए तथा विभिन्न मुस्लिम देशों ने उत्तरी भारत पर राज्य अधिकार स्थापित किया। विदेशी शासकों तथा उनके विदेशी प्रतिनिधियों ने सैन्य बल के आधार पर शासन किया और भारतीय जनता का शोषण किया। उन्होंने अनगिनत अत्याचार किए, गैर मुसलमानों पर जजिया कर लगाया। सिवाय छोटे पदों के बाकी सारे ऊंचे पदों पर हिंदुओं की नियुक्ति के मार्ग बंद थे। हिंदू मंदिरों को ध्वस्त कर बड़ी संख्या में मस्जिदों का निर्माण हो रहा था। हिंदू विद्यालयों को बंद किया जा रहा था और हिंदू सभ्यता तथा संस्कृति को नष्ट करने का हर उपाय किया जा रहा था । ऐसे समय में भारतीय समाज में भक्ति की एक अजस्त्र धारा का प्रसार हुआ जो निर्गुण संत – काव्य धारा के नाम से विख्यात है। इसके दार्शनिक-सांस्कृतिक आधार अनेक हैं जिनमें से प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं- उपनिषद, शंकराचार्य का अद्वैत-दर्शन, नाथ-पंथ तथा सूफी दर्शन। इन संतों के चिंतन, जीवन-दर्शन और काव्य-धारा पर उपनिषदों का व्यापक प्रभाव है। संत दर्शन का मुख्य आधार है शंकर का अद्वैत-दर्शन । इन संतों पर आचार्य शंकर की विचारधारा का व्यापक प्रभाव है। संतों ने आत्मा की सर्वरूपता, सर्वात्म-भावना एवं सर्वशक्तिमत्ता प्रतिपादित की है। संत परंपरा में आत्मा की अखंडता, एकरसता अद्वैतरूपता एवं आत्मीयता का प्रतिपादन भी शंकर सिद्धांत के अनुरूप है। निर्गुण भक्ति का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व यह है कि उन्होंने मानव को एक ऐसे विश्वव्यापी धर्म के सूत्र में निबद्ध करना चाहा जहाँ जाति वर्ग और वर्ण संबंधी भेद न हो। साधना का यह द्वार सब के लिए उन्मुक्त था। इस क्षेत्र में आगे चलकर हिंदू मुसलमान का भेद भी विलुप्त हो गया और भक्ति के क्षेत्र में सब समान प्रमाणित हुए। इस प्रकार संत संप्रदाय विश्व संप्रदाय है और उसका धर्म विश्व धर्म है। इस विश्व धर्म का मूल आधार है हृदय की पवित्रता। निर्गुण भक्ति की इस सुदीर्घ परंपरा में दादू, नानक, रैदास, जंभ नाथ, सींगा, भीषण, रज्जब, बावरी साहब, मलूक दास, बाबा लाल दास आदि प्रमुख हैं जिन्होंने साधना पद्धति में योग तत्त्व को प्रमुखता

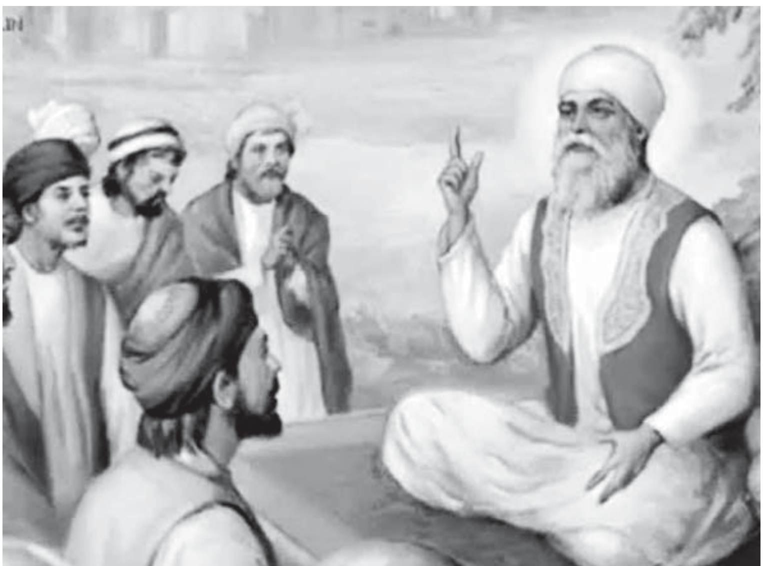

कई बार यह प्रश्न उठता है कि बाबा गुरु नानक सुधारक थे या क्रांतिकारी? इस प्रश्न के संबंध में कुछ लेखकों ने उत्तर देते हुए बाबा नानक को एक इंकलाबी बताया है क्योंकि उन्होंने उस समय की धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं तथा हिंदू मुसलमान समाज में प्रचलित अंधविश्वासों की कड़ी आलोचना की है। गुरु नानक ने एक नई जाति विहीन तथा वर्ग विहीन समाज की भी नींव रखी।

नहीं दी बल्कि कहीं-कहीं सुरत-योग, शब्द -योग आदि का उल्लेख अवश्य किया है किंतु उतनी अंतरंगता और आग्रह से नहीं। इसी क्रम में गुरु नानक देव का प्रादुर्भाव एक अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण घटना थी जिन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज के समक्ष एक उज्ज्वल और निर्भीक दृष्टि का प्रादुर्भाव किया।

गुरु नानक देव ने भारत की सभी दिशाओं की यात्राएँ की थी इस संदर्भ में सभी धर्म और मतों के अनुयायी संतों से उनकी भेंट होती रहती थी, फलस्वरूप समाज और धर्म के संबंध में उनकी विचारधारा अनुभूति तथा समन्वय पर आधारित निर्मित हुई। धार्मिक रूढ़िवाद, जाति के संकीर्ण बंधनों तथा अनाचारों के प्रतीकों का उन्होंने सदैव विरोध किया। उनके काव्य में निर्गुण ब्रह्म के प्रति उच्च कोटि की भक्ति भावना विद्यमान रही किंतु इसके साथ ही अन्य धार्मिक विचारधाराओं के लिए भी उनके मन में श्रद्धा थी। सत्य के प्रति आस्था के फलस्वरूप उनकी वाणी में स्पष्टता और उद्‌बोधन की प्रखरता मिलती है। कबीर की भांति उनके काव्य में भी शांत रस की निर्बाध धारा प्रवाहित हुई है।

कई बार यह प्रश्न उठता है कि बाबा गुरु नानक सुधारक थे या क्रांतिकारी? इस प्रश्न के संबंध में कुछ लेखकों ने उत्तर देते हुए बाबा नानक को एक इंकलाबी बताया है क्योंकि उन्होंने उस समय की धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं तथा हिंदू मुसलमान समाज में प्रचलित अंधविश्वासों की कड़ी आलोचना की है। गुरु नानक ने एक नई जाति विहीन तथा वर्ग विहीन समाज की भी नींव रखी। फिर भी गुरु नानक ने कभी हिंसा के व्यवहार को प्रोत्साहित नहीं किया तथा अपने उद्देश्य प्राप्ति के हेतु शांतिपूर्ण प्रोत्साहन में ही विश्वास प्रकट किया। उन्होंने हिंदू धर्म

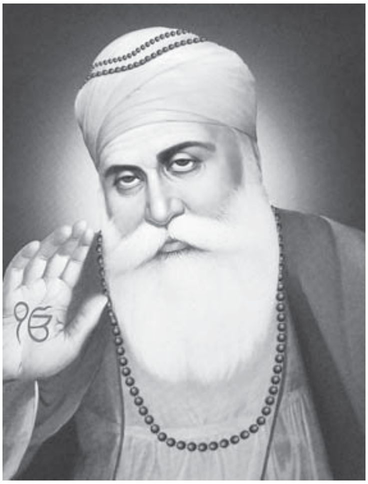

या इस्लाम अथवा उनसे संबंधित संस्थाओं के मूल शुद्ध रूप की निंदा नहीं की। गुरु नानक ने भ्रष्ट तथा कुरीतियों की भर्त्सना की जो उनके समय में प्रचलित थी तथा चतुर तथा लोभी पुरोहितों या मौलवियों द्वारा भोली जनता के शोषण की कबीर की भांति वे भी आलोचना करते थे और उन्होंने कहा कि वेद और सनातन शास्त्र प्रामाणिक हैं, वह झूठे नहीं हैं बल्कि ऐसे झूठे लोग बैठे हुए हैं जो उनके उपदेशों का अध्ययन नहीं करते अर्थ नहीं समझते।

वेद कतेब कहो मत झूठे,
झूठा सो जो न विचारे।

इस प्रकार गुरु नानक देव ने वेद, पुराण, उपनिषद् तथा प्राचीन भारतीय वांङमय की उज्ज्वल परंपराओं के प्रति श्रद्धा प्रकट की है किंतु कालांतर में जाति व्यवस्था के कारण तथा विदेशी आक्रमणों के कारण समाज में व्याप्त हुई विभिन्न कुरीतियों तथा अंधविश्वासों का कारण सनातन ज्ञान के गहन अध्ययन का अभाव ही बताया।

कभी-कभी यह प्रश्न उठता है कि क्या गुरु नानक देव ने मानवता को किसी नवीन सत्य का संदेश दिया या उन्होंने केवल भारतीय परंपरा को विशेष रूप से वेद उपनिषद् तथा भगवत गीता में उपलब्ध सिद्धांतों को ही आगे प्रतिध्वनित किया। हम यह मानते हैं कि ऐसे प्रश्न न्याय संगत नहीं, क्योंकि ऐसे प्रश्नों के द्वारा हम इस ऐतिहासिक तथ्य को नजरअंदाज कर देते हैं कि संसार के महान पथ- प्रदर्शक न केवल ऐतिहासिक आवश्यकताओं के अनुरूप जन्म लेते हैं बल्कि वे इतिहास निर्माता भी होते हैं। साथ में हम इस बात की भी उपेक्षा कर देते हैं कि प्रत्येक नई वस्तु शीघ्र ही पुरानी पड़ जाती है सिवा सत्य के ,जो सनातन है।

सत्य अकाल है, प्राचीन होते हुए भी आधुनिक है, शाश्वत है। 'जपुजी' के प्रारंभिक अंश में ही गुरु नानक देव ने इसे स्पष्ट किया है -

आदि सचु जुगादि सचु ।
है भी सचु नानक होसी भी सचु।।

बाबा गुरु नानक ने किसी नए सत्य का नहीं बल्कि इसी चिरंतन सत्य का दुनिया को संदेश दिया था। अत: उनकी शिक्षाएँ आज भी उतनी ही संगत तथा प्रासंगिक हैं जितनी 550 वर्ष पहले उनके जीवन काल में थी। यह बात ध्यान देने योग्य है कि संसार के किसी भी धर्म संस्थापक ने यह दावा कभी नहीं किया कि उसने संसार को सर्वथा नवीन सत्य प्रदान किया है। प्रत्येक ने केवल चिरंतन सत्य के संप्रेषण का ही दावा किया है। तो भी संप्रेषण की प्रक्रिया में हर धर्म शिक्षक ने अवश्य ही अपनी परंपरा से जिसमें जन्मा-पला, उसी से शब्दावली तथा धारणाएँ अपनाई है। ईसा मसीह ने यहूदी धर्म से तथा बुद्ध ने ब्राह्मण धर्म से विचार लिए है इसका यह अर्थ नहीं कि वे दोनों क्रमश: यहूदी तथा ब्राह्मण- विश्वासों तथा आचरणों का पूरी तरह समर्थन करते हैं। इसी प्रकार गुरु नानक ने भी अपनी हिंदू परंपरा की भाषा तथा रूपों का उन्मुक्त व्यवहार किया है किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि उन्होंने सारे हिंदू विश्वासों तथा आचरणों का समर्थन

किया। वास्तव में वे ऐसी नीतियों की खुले तौर पर निंदा तथा खंडन करने में अग्रणी थे, जिनसे उनकी नैतिक तथा धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचती थी।

गुरु नानक आरंभ से ही भक्त थे अत: उनका ऐसे मत की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक था जिसकी उपासना का स्वरूप हिंदुओं और मुसलमानों दोनों को समान रूप से प्रामाणिक हो। उन्होंने घर-बार छोड़कर बहुत दूर-दूर के देशों का भ्रमण किया जिससे उपासना का सामान्य स्वरूप स्थिर करने में उन्हें बड़ी सहायता मिली। अंत में महात्मा कबीर दास की निर्गुण उपासना का प्रचार उन्होंने पंजाब से आरंभ किया और वे सिख संप्रदाय के आदि गुरु हुए।

गुरु नानक देव ने चिरंतन सत्य का साक्षात्कार किया था तथा उन्होंने दूसरों को ईश्वर प्राप्ति का मार्ग दिखाया था। उन्होंने अपनी वाणी को पुष्ट करने में वेदों तथा उपनिषदों का प्रमाण की दृष्टि से सहारा नहीं लिया था बल्कि अनुभूत सत्य का आधार मजबूत करने के लिए ही उन्होंने इन प्राचीन भारतीय ग्रंथों के ज्ञान का सहारा लिया। उनका मन: सत्य उन्हें पुस्तकों से नहीं मिला था यह सत्य तो उन्हें संपूर्ण जीवन के प्रकाश के रूप में प्राप्त हुआ था। उनकी समस्त रचनाओं में 'नानक कहै', 'नानक कहै' का स्वर मुख्य है। उन्होंने ईश्वरीय प्रेम के गीत गाए थे। उनके हृदय की परिपूर्णता से संदेश निकले थे- ईश्वर प्रेम का संदेश मानवीय बंधुत्व तथा सभी प्रकार के मानवीय संबंधों में प्रेम के नियम का संदेश उनके द्वारा प्रसारित हुआ। उन्होंने अपने संदेश को जनसाधारण की समझ में आने वाली भाषा में प्रचारित किया था जो आगे चलकर 'गुरुवाणी' के नाम से प्रसिद्ध हुई । यह 'गुरुवाणी' तब से ही दबाव और तनाव तथा दुख और मृत्यु के क्षणों में मानवता के लिए सांत्वना तथा शांति के संदेश देती रही है। हृदय को छूने वाले इसके आकर्षण ने सदा ही मानवता को ऊपर उठाया है। गुरुवाणी का अद्वितीय उपहार भारत तथा संसार के लिए गुरु नानक देव का एक चिरस्थाई योगदान है।

हम एक दो उदाहरणों से यह समझ सकते हैं कि गुरु नानक देव ने अपने हिंदू संस्कारों से आगे जाकर चिरंतन सत्य को अपने समय की समस्याओं तथा आवश्यकताओं से रचनात्मक रूप से जोड़ दिया। हिंदू-मुस्लिम संबंधों की दूभर समस्या का जिससे उन्हें सामना करना पड़ा, एक ज्वलंत उदाहरण है। दोनों संप्रदायों की बीच की शत्रुता के कारण समाज में व्यापक वैमनस्य फैल चुका था। गुरु नानक ने अपने बंधुओं को यह समझा दिया था कि सच्चा धर्म दीन-दुखियों को आराम पहुँचाने की चेष्टा करना है न की निरंकुशता, अत्याचार तथा अन्याय की स्थापना में सहायक होना। धर्म का काम यह नहीं है कि वह मनुष्यों के बीच भौतिक अथवा भावात्मक दीवारें खड़ी करें। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सत्य सार्वभौमिक है तथा यह जोड़ने वाली शक्ति है, तोड़ने वाली नहीं। उन्होंने सभी धर्मों के मूल पर जोर दिया तथा हिंदुओं से अधिक अच्छे हिंदू तथा मुसलमानों से अधिक अच्छे मुसलमान बनने का आग्रह किया। उनके उपदेश सर्वथा असांप्रदायिक हैं। उन्होंने तत्कालीन समाज की हिंदू तथा मुस्लिम जातियों में व्याप्त संकीर्णताओं को दूर करने का प्रयास किया तथा दोनों जातियों की पारस्परिक एकता तथा शांति बढ़ाकर उन्हें परस्पर निकट लाने की चेष्टा की। भारतीय जीवन-दृष्टि के सिद्धांत एकात्मवाद की उनके द्वारा प्रतिष्ठा की गई है। एक ईश्वर के आराधकों के बंधुत्व के लिए उन्होंने काम किया। अंतधार्मिक संबंधों के प्रति उनके विचार अब भी सत्य है तथा आज भी उनकी बड़ी जरूरत है। महात्मा गांधी ने इस दिशा में काफी काम किया और उन्होंने गुरु नानक देव के पद चिन्हों का अनुसरण किया।

गुरु नानक देव जी ने समाज में व्याप्त अछूत-समस्या को भी अमानवीय प्रथा बताया और उसका जोरदार विरोध किया। इसे समाज से समूल निकालने की कोशिश की। उन्होंने अपने बंधुओं की विचारधारा तथा उनकी मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों में भी आमूल परिवर्तन करने की चेष्टा की। इसी क्रम में उन्होंने हिंदू वर्ण-व्यवस्था के जाति व्यवस्था में हुए रूपांतरण तथा ऊँच-नीच की जातीय भावना को नकार दिया और छुआछूत की प्रथा की पूरी तरह निंदा की तथा घोषित किया कि जन्म के कारण नहीं अपितु सद्कार्यों के कारण ही

गुरु नानक आरंभ से ही भक्त थे अत: उनका ऐसे मत की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक था जिसकी उपासना का स्वरूप हिंदुओं और मुसलमानों दोनों को समान रूप से प्रामाणिक हो। उन्होंने घर-बार छोड़कर बहुत दूर-दूर के देशों का भ्रमण किया जिससे उपासना का सामान्य स्वरूप स्थिर करने में उन्हें बड़ी सहायता मिली। अंत में महात्मा कबीर दास की निर्गुण उपासना का प्रचार उन्होंने पंजाब से आरंभ किया और वे सिख संप्रदाय के आदि गुरु हुए।

मनुष्य अपनी उत्तमता का दावेदार हो सकता है। वैदिक वांङ्मय में जातिगत आधार पर ऊँच-नीच की कोई व्यवस्था नहीं थी और इसी सूत्र को उन्होंने सनातन सत्य के रूप में तत्कालीन समाज में प्रचारित किया।

आगे चलकर उन्होंने लंगर की संस्था कायम की जहाँ भाईचारे के नाते सभी जातियों के लोग अथवा जाति-विहीन लोग उच्च तथा तथा निम्न साथ-साथ खाते थे। इस संस्था के द्वारा जो तब से अब तक सिख समुदाय द्वारा कायम और पोषित है गुरु नानक ने छुआछूत की प्रथा पर जबरदस्त आघात किया। इस स्थल पर भी महात्मा गांधी ने गुरु नानक द्वारा 550 वर्ष पहले चलाई हुई कार्य योजना और सिद्धांत का उल्लेखनीय अनुसरण किया।

गुरु नानक देव की सबसे महत्त्वपूर्ण देन यह है कि उन्होंने एक ऐसी जीवनशैली का निर्माण तथा प्रस्तुतीकरण किया जो सत्य के अनुकूल थी। उन्होंने सत्य आचरण पर बहुत बल दिया। उन्होंने कहा कि सत्य सर्वोपरि है किंतु सत्याचरण उससे भी ऊपर है । गुरु नानक ने परम सत्य को 'अकाल मूरत' तथा 'कर्ता पुरख' का नाम लिया है। तथा उसे जीवन का पथ प्रदर्शक माना है। उन्होंने यह दिखाया है कि ईश्वर-प्रेम द्वारा निर्भयता तथा निस्वार्थता की प्राप्ति होती है। उनके लिए सत्य आचरण ईश्वरीय इच्छा के अनुसरण द्वारा ही प्राप्त होता है। गुरु नानक देव पर भक्ति का संस्कार बाल्यावस्था से ही पड़ने लगा था। कबीर के गुरु रामानंद जी भक्ति का एक उदार मार्ग भारतीय समाज में स्थापित कर रहे थे जिसमें जाति-पाँति का भेद और खानपान की परंपरागत आचार-संहिता तोड़ दी गई थी। बाबा नानक ने इस भारतीय परंपरा को आगे बढ़ाया, वे शांति, एकता, प्रेम और मैत्री-भाव के प्रतीक थे जो अपने उदार मानवतावादी दृष्टिकोण के कारण सभी धर्मावलंबियों द्वारा प्रशंसित और सम्मानित थे। मानवता के नैतिक और आध्यात्मिक अभ्युदय में इनका अप्रतिम योगदान रहा है। नानक देव सभी धर्मों में पावन जीवन की संभावना को स्वीकार करते हैं जो आज के समय में धार्मिक उन्माद और कट्टरता बढ़ जाने के कारण और भी प्रासंगिक हो गया है। सिख गुरु नानक देव अन्य धार्मिक परंपराओं के मूल्यवान तत्वों के समर्थक तथा अन्य संत-महात्माओं की वाणी के प्रशंसक रहे हैं। बाबा नानक मूलतः ऐक्य के प्रवक्ता थे, एकता भारत की धार्मिक परंपरा है। यहाँ परम की सत्ता स्वीकार की गई है। यद्यपि उसे अनेक संज्ञा दी जाती रही हैं। वे स्वयं को मानव मानते हैं, दैवीय नहीं। उनके अनुसार परमोपलब्धि का मार्ग आत्मसमर्पण में है, अनुष्ठान या तीर्थ प्रक्षालन में नहीं। हमारी यात्रा अंतर्मुखी है, संत, महात्मा लक्ष्य प्राप्ति के लिए इसी पथ पर चले थे। वे कहते हैं - विभूति रमाना योग नहीं है, दाढ़ी मूँछ मुंडवाने तथा कानों में मुद्रा पहनने, शंख फूंकने में भी योग नहीं है। मलिनता में भी निर्मल बने रहने में ही योग का वास्तविक रूप पाया जा सकता है। किसी को कष्ट नहीं पहुँचाने की भावना में विश्वास रखते थे। पीड़ितों की सहायता अपने प्राणों के मूल्य पर भी करने का दृढ़ संकल्प रखते थे। बाबा नानक के अनुसार संसार में रहकर कर्म करना अपेक्षित है वे संसार और समय से पलायन को उत्तम जीवन का लक्षण नहीं मानते थे और यही श्रीमद भगवत गीता का कर्म सिद्धांत भी है जो भारतीय परंपरा का सार है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि गुरु नानक देव ने हिंदू धर्म तथा भारतीय प्राचीन वांङ्मय की समृद्ध परंपराओं को सनातन धर्म की सीख के रूप में तो ग्रहण किया किंतु कालांतर में आए दूषण और व्यापक विषमताओं का विरोध किया और बताया कि धर्म को गंभीर तथा गहन अर्थों में लिया जाना चाहिए। धर्म को उन्होंने मनुष्य के लिए सार्थक तथा सोद्देश्य बना दिया। उन्होंने धर्म की संस्था में जीवन की संपूर्णता देखी और हिंदुओं का ध्यान धर्म के मूल अर्थ की ओर आकृष्ट किया साथ ही धर्म को उन स्वार्थों तथा बाह्य तत्त्वों से मुक्त करने की कोशिश की जिन्होंने धार्मिक जीवन को दबा रखा था। एक निरंतर परिवर्तनशील दुनिया में उन्होंने ईश्वर के नाम तथा उसकी इच्छा के रूप में स्थाई तत्त्व को खोज निकाला। नानक देव ने जीवन में ईश्वर को केंद्रीय स्थान पर रखा तथा कहा कि यदि मनुष्य ईश्वर के संबंध में भ्रम रखता है तो वह अपना संपूर्ण जीवन ही भ्रमपूर्ण बना लेता है।

भारतीय समाज व्यवस्था व चिंतन परंपरा में भी मनुष्यता की समृद्धि की कामना ही प्रमुखता से विद्यमान रही है। हमारे देश की संस्कृति और सभ्यता को निरंतर विकासमान बनाए रखने में जिन महापुरुषों, संत-भक्त, कवि, ऋषि तथा समाज सुधारकों का अन्यतम योगदान रहा है। गुरु नानक देव उनमें से महत्त्वपूर्ण हैं। बाबा नानक का संपूर्ण जीवन और दर्शन श्रम-साधना, शक्ति-साधना तथा भक्ति-साधना के सम्यक नियोजन में ही व्यतीत हुआ तथा गुरु नानक देव ने जीवन के अनेक मौलिक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया उन्होंने भौतिक वस्तुओं के वैभव और आकर्षण से मुक्त आध्यात्मिक उन्नति तथा हृदय के विस्तार का मार्ग प्रशस्त किया। साथ ही आदर्श आचरण तथा मन, बुद्धि को साधने का मार्ग प्रशस्त किया। बाबा नानक देव के सामाजिक धार्मिक सिद्धांतों ने एक ऐसी समाज व्यवस्था की न केवल कल्पना की बल्कि उसकी स्थापना भी की जिसमें ईमानदारी, परिश्रम , समानता, करुणा, अपरिग्रह तथा आत्मरक्षा से ओतप्रोत नागरिकों का निर्माण हो सके।❑

गुरु नानक देव और भक्ति आन्दोलन

बलवीर चौधरी
सह आचार्य,
राजकीय महाविद्यालय लूणी,
जोधपुर

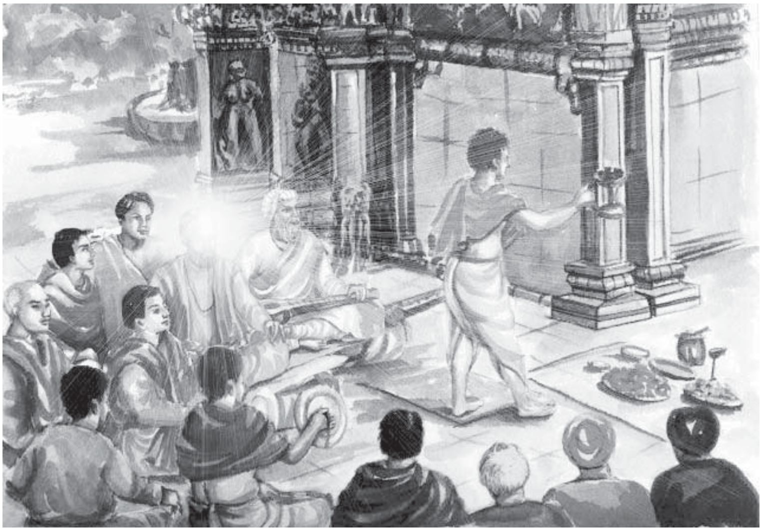

भक्ति आन्दोलन के प्रमुख सन्तों में नानक (1469-1539 ई.) का नाम अग्रणी है। उन्होंने समन्वयवाद का उपदेश दिया और सामाजिक सौहार्द स्थापित करने का कार्य किया था। उनका जन्म सन् 1469 ई. को गुरु-पूर्णिमा के दिन रावी नदी के तट पर स्थित तलवण्डी गाँव में हुआ था, वह खत्री परिवार के थे। उनके पिता का नाम मेहता कालूचन्द था और वे गाँव के पटवारी थे। बाल्यावस्था में नानक को संस्कृत, हिन्दी और फारसी की शिक्षा प्राप्त हुई थी। बचपन से ही नानक चिन्तनशील थे और उन्हें सांसारिक जीवन के प्रति रुचि नहीं थी। वे अपना समय साधु-सन्तों की संगति में व्यतीत करते एवं साधना व उपदेशों में लगाते थे। वे मानते थे कि पारिवारिक जीवन ईश्वर की साधना में बाधक नहीं है।

नानक ने भारत के प्रमुख तीर्थ-स्थानों की यात्रा की थी, इसके अलावा अपने जीवन के अंतिम 40 वर्षों में उन्होंने कई देशों, जैसे-लंका, ईरान और अरब का भी दौरा किया था। इस दौरान वे विभिन्न सम्प्रदायों के संतों के संपर्क में आये जिनसे उन्होंने अध्यात्म के विभिन्न पहलुओं को समझने का प्रयास किया। नानक ने मुस्लिम सन्तों, जैसे - पानीपत के शेख फरीद, मुल्तान के पीर और पाक पट्टन के शेख इब्राहिम से आध्यात्मिक समस्याओं पर विचार-विमर्श किया था। उन्हें गहन ज्ञान प्राप्त हुआ। अन्त में वह करतारपुरा में बस गए। सन् 1539 ई. में उनकी मृत्यु हुई। उनकी वाणी को बाद में आदि ग्रन्थ में संकलित कर दिया गया। उन्होंने पंजाब में धर्म का उपदेश उस समय दिया था जब मुस्लिम कट्टरता के कारण किसी प्रकार का उपदेश देना सम्भव नहीं था। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में उन्होंने भक्ति और वैराग्य का उपदेश देकर हिन्दू धर्म की रक्षा की।

नानक का उद्देश्य - नानक का उद्देश्य हिन्दू धर्म में सुधार कर इसके आडम्बरों तथा जाति प्रथा को समाप्त करना था। वह भी निर्गुण ब्रह्मा की उपासना भक्ति के द्वारा करने का आग्रह करते थे। इस उपासना में निम्न कही जाने वाली हिन्दू जातियों को समानता का अधिकार प्राप्त हुआ।

निर्गुण भक्ति - नानक निराकर ब्रह्म में विश्वास रखते थे जो सर्वव्यापी है। उनका कहना था कि ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना से सरल जीवन बिताने वाले तथा उसका नाम जपने से व्यक्ति को मोक्ष प्राप्त होता है। एक स्थान पर उन्होंने कहा है कि **इक दू जीभउ लख होय लख बीस। लख लख गेड़ा आखिये एक नाम जगदीश।** अत: नामों की भिन्नता के कारण मनुष्य को भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए। उन्होंने नैतिकता, नम्रता, सत्य, ज्ञान और दया को पवित्र और सरल जीवन का आवश्यक अंग माना। वे मुक्ति को ही मानव-जीवन का अंतिम लक्ष्य समझते थे। मुक्ति मिलने से यह तात्पर्य है कि आत्मा का अलग अस्तित्व समाप्त हो जाता है और वह परमात्मा में लीन हो जाती है। नानक कर्म और पुनर्जन्म में भी विश्वास रखते थे। नानक के ईश्वर का अवतार नहीं हुआ था, वह आकारहीन, निरंकार, शाश्वत (एकल) और अवर्णनीय (अलख) था। अतएव एकेश्वरवादी भक्ति निर्गुण भक्ति थी, न कि सगुण। नानक ने ईश्वर का नाम जपने, आध्यात्मिक गुरु, भक्ति गीतों के सामूहिक गायन (कीर्तन) और संतों के संग (सत्संग) के महत्त्व पर भी बल दिया है।

धार्मिक दृष्टिकोण - उनका विचार था कि धार्मिक संकीर्णता से मतभेद उत्पन्न होते हैं, अत: मनुष्य को व्यापक तथा उदारवादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। उनका उपदेश था कि मनुष्य मात्र की भलाई करो, मनुष्य मात्र से प्रेम करो तथा प्रत्येक प्राणी से भ्रातृ-भाव से स्नेह करो। उनका कहना था कि समाज में सौहार्द लाने के लिए धार्मिक समन्वय आवश्यक है। एक

स्थान पर उन्होंने कहा कि, परब्रह्म प्रभु एक है, दूजा नहीं कोई। उन्होंने यह भी कहा कि उस एकेश्वर की उपासना अनेक मुहम्मद, ब्रह्मा, विष्णु, राम और महेश करते हैं। उन्होंने मुसलमानों से कहा कि, दया को अपनी मस्जिद मानो, भलाई एवं निष्कपटता को अपनी नमाज की दरी मानो, जो कुछ भी उचित एवं न्यायसंगत है, वही तुम्हारी कुरान है। नम्रता को अपनी सुन्नत मान लो, शिष्टाचार को अपना रोजा मान लेने के परिणामस्वरूप तू मुसलमान बन जायेगा। हिन्दुओं से उन्होंने कहा कि, मैंने चारों वेद पढ़े हैं, अड़सठ तीर्थों पर स्नान किया है, वनों और जंगलों में निवास किया है और सातों ऊपरी व निचली दुनियाओं का ध्यान किया है और मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि मनुष्य चार कर्मों द्वारा मुक्ति प्राप्त कर सकता है – भगवान से भय, उचित कर्म, ईश्वर तथा उसकी दया में विश्वास और एक गुरु में विश्वास उन्होंने उचित मार्ग का प्रदर्शन के रूप में बताया। इस प्रकार नानक ने हिन्दू और मुस्लिम धर्मों में आधारभूत एकता स्थापित करने का प्रयास किया। कबीर की भांति ही उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों में प्रचलित अंधविश्वासों और आडम्बरों की कटु आलोचना की, उनका उद्देश्य हिन्दू-मुस्लिम

नानक ने जाति प्रथा की भर्त्सना भी की और इससे पैदा होने वाली असमानता का विरोध कर मनुष्य की समानता स्थापित की तथा अस्पृश्यता को पूर्ण रूप से अस्वीकार कर दिया। वास्तव में, नानक का उद्देश्य सम्पूर्ण मानवता का उत्थान करना था। अत: उन्होंने भक्ति के साथ सेवा कार्य को विशेष महत्त्व दिया और शिष्यों को आदेश दिया कि वे प्राणी मात्र की सेवा करें। उन्होंने शिष्यों में भाईचारा स्थापित किया। उनका कहना था कि पापी से नहीं बल्कि पाप से घृणा करनी चाहिए। अत: पतितों से प्रेम करना और सन्मार्ग पर लाना मनुष्य का परम धर्म है।

एकता की स्थापना करना था। उन्होंने बिना धार्मिक और जातीय भेदभाव के सभी को अपना शिष्य बनाया।

गुरु की महिमा – नानक धार्मिक जीवन के लिए गुरु का मार्गदर्शन आवश्यक मानते थे। नानक का कहना है कि गुरु के द्वारा ही सांसारिक जीवन का अन्त होता है तथा आध्यात्मिक जीवन आरम्भ होता है। गुरु के उपदेश से अहंकार का नाश होता है और मुक्त अवस्था प्राप्त होती है। वास्तव में नानक ने गुरु को धार्मिक जीवन का केन्द्र बताया जो अध्यात्म की ओर ले जाता है। उनका मानना था मुक्ति के लिए एक सच्चे गुरु का होना आवश्यक है।

सामाजिक समरसता पर बल– उन्होंने सरल धर्म का उपदेश दिया और आडम्बरों का विरोध किया। उन्होंने जाति प्रथा का विरोध किया और सभी जाति के लोगों को यहाँ तक निम्न मानी जाने वली जातियों को भी अपना शिष्य बनाया। उनका कहना था कि याद रखो कि कर्म ही जाति को निश्चित करते हैं। मनुष्य अपने स्वयं के कार्यों से श्रेष्ठ या पतित बनता है। जाति भेद की चिन्ता न करो। याद रखो कि ईश्वर का प्रकाश सब व्यक्तियों में है उसके यहाँ जाति भेद नहीं है। नानक का कहना था कि प्रत्येक व्यक्ति में चारों वर्णों का समन्वित रूप होना चाहिए। अस्पृष्यता को उन्होंने अपने शिष्यों में मिटा दिया और भ्रातृत्व की स्थापना की।

नानक ने जाति प्रथा की भर्त्सना भी की और इससे पैदा होने वाली असमानता का विरोध कर मनुष्य की समानता स्थापित की तथा अस्पृश्यता को पूर्ण रूप से अस्वीकार कर दिया। वास्तव में, नानक का उद्देश्य सम्पूर्ण मानवता का उत्थान करना था। अत: उन्होंने भक्ति के साथ सेवा कार्य को विशेष महत्त्व दिया और शिष्यों को आदेश दिया कि वे प्राणी मात्र की सेवा करें। उन्होंने शिष्यों में भाईचारा स्थापित किया। उनका कहना था कि पापी से नहीं बल्कि पाप से घृणा करनी चाहिए। अत: पतितों से प्रेम करना और सन्मार्ग पर लाना मनुष्य का परम धर्म है। उन्होंने पवित्रता, त्याग पर बल देते हुए नेक कमाई करने का आदेश दिया। नानक के उपदेशों के प्रचार-प्रसार ने एक सम्प्रदाय का रूप धारण कर लिया। उनके शिष्य सिख कहलाए। उन्होंने

नानक के पदों में मुख्य रूप से दो अवधारणाएँ शामिल है - सच और नाम। शबद (शब्द), गुरु और हुक्म (ईश्वर का आदेश) ईश्वर आत्माभिव्यक्ति के आधार बनते हैं। उन्होंने कीर्तन और सतसंग पर भी बल दिया। उन्होंने सामुदायिक भोज (लंगर) की शुरूआत की। जिससे सेवा भक्ति, बन्धुत्व और सामाजिक एकता के भाव को बढ़ावा मिला। नानक में निष्ठापूर्ण समर्पण और एकेश्वर के प्रति समर्पण का भाव मिलता है।

मुस्लिम धर्मान्धता का विरोध करने तथा हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए सैनिक सम्प्रदाय का रूप धारण कर लिया था।

गृहस्थ जीवन की महत्ता

कबीर की तरह नानक गृहस्थ जीवन को आध्यात्मिक उन्नति के बीच बाधक नहीं मानते थे। नानक गृहस्थ धर्म को श्रेष्ठ मानते थे और उनका विचार था कि गृहस्थ जीवन में मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकता है, इसलिए उन्होंने गृहस्थ जीवन का परित्याग नहीं किया और उनके परिवार में उनकी पत्नी और दो पुत्र थे। उनके एक पुत्र का नाम श्रीचन्द और दूसरे का नाम लक्ष्मीचन्द था। गृहस्थ जीवन का पालन करते हुए भी वे अपना सारा समय साधना, उपदेशों और मानव सुधार के कार्यों में लगाते हैं।

नारी उत्थान के समर्थक - वे मनुष्य के सार्वभौम बंधुत्व, पुरुष और नारी की समानता में विश्वास रखते थे। उन्होंने नारी मुक्ति की दिशा में काफी प्रयत्न किये और सती-प्रथा का विरोध किया। उन्होंने न्याय, न्यायोचित और स्वतंत्रता जैसी अवधारणाओं पर बल दिया। उन्होंने स्त्रियों को भी सम्मानपूर्ण स्थान प्रदान किया और उनकी अध्यात्म साधना के अधिकारों को स्वीकार किया।

नानक का दर्शन - भारतीय दर्शन और विचारधारा में गुरु नानक के उपदेश और दर्शन का विशेष महत्त्व है। उनके दर्शन में 3 तत्त्व प्रमुख है (गुरु, शबद और संगत)। गुरु नानक ने प्रचलित धार्मिक विचारों का मूल्यांकन और आलोचना की और एक सच्चे धर्म की स्थापना करने का प्रयास किया जो उन्हें मुक्ति की ओर ले जा सकता था। उन्हें ईश्वर की एकता पर विश्वास था सच, हलाल, खैर, नियत और ईश्वर की सेवा। नानक के पदों में मुख्य रूप से दो अवधारणाएँ शामिल है - सच और नाम। शबद (शब्द), गुरु और हुक्म (ईश्वर का आदेश) ईश्वर आत्माभिव्यक्ति के आधार बनते हैं। उन्होंने कीर्तन और सत्संग पर भी बल दिया। उन्होंने सामुदायिक भोज (लंगर) की शुरूआत की। जिससे सेवा भक्ति, बन्धुत्व और सामाजिक एकता के भाव को बढ़ावा मिला। नानक में निष्ठापूर्ण समर्पण और एकेश्वर के प्रति समर्पण का भाव मिलता है। उन्होंने बहुत से प्रेरणादायक पदों और गीतों की रचना की जिन्हें बाद में सिखों के पाँचवे गुरु अर्जुन ने 1604 ई. एक ग्रंथ के रूप में संकलित कर दिया जो 'गुरु ग्रंथ साहिब' के नाम से जाना जाता है। गुरुनानक ने भी कबीर और अन्य एकेश्वरवादियों के समान ही अपने मत का प्रचार किया, पर कई कारणों से उनकी शिक्षा से बाद में एक जनाधारित धर्म, सिख धर्म का उदय हुआ। अंत में उन्होंने पंजाब में एक जगह पर अपना डेरा बसा लिया, इसे डेरा बाबा नानक के नाम से जाना जाता है। यहाँ उनके शिष्यों मे तेजी से वृद्धि हुई।

नानक के मुख्य अनुयायी मुख्य रूप से ग्रामीण जाट थे। गुरु गोविंद सिंह ने सिखों के बीच खालसा (बंधुत्व) का प्रतिपादन किया। सिख सम्प्रदाय के अंतर्गत खत्री और अरोड़ा के साथ साथ जाट भी शामिल है। राम गढ़िया सिख के रूप में जाने जाने वाले शिल्पकार और अनुसूचित जाति से सिख धर्म में परिवर्तित हुए। सिख पंथ में जातिगत चेतना अस्तित्व में थी पर इसका महत्त्व अधिक नहीं था।

भक्ति आंदोलन में नानक की शिक्षाओं का सार निम्नलिखित है -

प्रवृतिमूलक धर्म एवं निर्गुण ईश्वर की आराधना पर बल दिया एवं अवतारवाद का खण्डन किया। भक्ति को मोक्ष का सरल साधन बताया। आत्मा की अमरता का प्रतिपादन किया। ईश्वर की भक्ति में गृहस्थ जीवन को बाधक नहीं बताया। कर्म के सिद्धान्त तथा पुनर्जन्म के सिद्धान्त में विश्वास। ईश्वर की प्राप्ति के लिए चरित्र एवं आचरण की शुद्धता पर बल। मार्गदर्शन हेतु गुरु की आवश्यकता पर बल दिया। एकेश्वरवाद पर बल दिया। जात-पात, उँच-नीच को नकारा एवं मानव मात्र की समानता पर बल दिया। हिन्दू-मुस्लिम समन्वय की स्थापना की एवं धार्मिक भेदभाव को अस्वीकार किया। बाह्याडम्बरों का खण्डन किया। ईश्वर की भक्ति करने वाले निर्भय होते हैं। ईमानदारी व मेहनत से आजीविका चलानी चाहिए। बुरा कार्य करने के बारें में न सोचे न किसी को सताएँ। सदैव प्रसन्न रहें। सभी स्त्री पुरुष बराबर है। लोभ-लालच व संग्रहवृत्ति बुरी है। ❑

अनूठी पहल

रद्दी से चलाया शिक्षा का अभियान

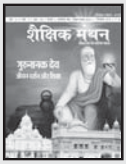

तमन्ना अख्तर
चंडीगढ़

हर गरीब बच्चे को शिक्षा देने का सपना आँखों में लिए अपने एक्टिवा पर सवार हो शहर की हर दहलीज, हर स्कूल, हर संस्थान पर जाकर पढ़ाई-लिखाई में इस्तेमाल की गई चीजों को इकट्ठा करते संदीप कुमार जब वापसी पर स्कूटर पर किक मारते हैं तो उसके साथ ही उनके रोजाना की सफलता, असफलता की गूंज भी सुनाई देती है। जब काफी सामान मिल जाए तो खुशी की किक और जब कुछ कम मिले तो संतोष की किक...। बकौल संदीप, ढाई साल से चल रहे इस सफर के लिए वह चले तो अकेले थे, रास्ते में लोग जुड़ते गए और कारवाँ बनता गया...। अब तो करीब 200 लोग जुड़ चुके हैं उनके इस सपने को पंख देने के लिए।

ढाई साल पहले 'ओपन आइज फाउण्डेशन' की नींव रखने वाले संदीप कुमार समाज के कमजोर हिस्सों में पल रहे बच्चों को शिक्षा दिलाने के लिए प्रयत्नरत हैं। इसी के तहत उन्होंने 'रद्दी से शिक्षा' अभियान की शुरूआत की है, जिसके लिए वह घर-घर जाकर पुरानी किताबें, कापियाँ, नोट्स आदि इकट्ठा करते हैं।

उनका कहना है कि शहर को देख कर ऐसा लगता ही नहीं कि यहाँ किसी को कोई तकलीफ भी हो सकती है। लेकिन यहाँ भी ऐसे बच्चे मौजूद हैं जो गरीबी के कारण स्कूल नहीं जाते। आज वह सेक्टर 41डी के सरकारी राजकीय विद्यालय, सेक्टर-38 के सरकारी स्कूलों में अपनी मदद पहुँचा रहे हैं।

चंडीगढ़ मेरा घर है। यहाँ की ऐसी हालत देखकर मेरी आँखें खुली की खुली रह गई। फिर मैंने ठान लिया कि मैं निजी स्तर पर जितना मुमकिन है उतना करूँगा। मैंने फिर अपनी एक्टिवा उठाई और घर-घर जाकर पुरानी किताबें, स्टेशनरी के सामान व अन्य वस्तुएँ इकट्ठा करना शुरू कर दिया। उसके बाद इन चीजों की मरम्मत कर उन्हें इस्तेमाल करने योग्य बनाकर जरूरतमंदों तक पहुँचाने लगा।
- संदीप कुमार

इस अभियान से जुड़े पंजाब विश्वविद्यालय के सोशयोलॉजी विभाग के प्रोफेसर विनोद कुमार चौधरी ने बताया, 'मैं शुरुआत से संदीप के साथ जुड़ा हुआ हूँ। इधर मेरा किरदार योजना बनाने, निधिकरण और स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित करना है। स्वयंसेवकों में ज्यादातर मेरे शोधकर्ता छात्र हैं, जिन्हें जमीनी स्तर पर शोध कर रिपोर्ट बनाने की जिम्मेदारी दी जाती है। फिर उसी रिपोर्ट के आधार पर हम योजनाएँ तैयार करते हैं कि किस जगह पर क्या मुहैया कराना है।'

शैक्षणिक विभाग में 26 साल तक अपनी सेवा देने के बाद इस संस्था से जुड़ी असतिंदर कौर का कहना है कि झुग्गी-बस्तियों में रहने वाले बच्चे अनदेखी के कारण अपनी कला का प्रदर्शन नहीं कर पाते। 'उन्हें सिर्फ उनका परिवार ही नजरअंदाज नहीं करता बल्कि यदि वे रो-पीटकर स्कूल आ भी गए तो वहाँ भी उनका ध्यान नहीं रखा जाता। अपनी छवि खराब होने के डर से ज्यादातर स्कूलों को सिर्फ उन बच्चों को स्कूल से निकालने का रास्ता आसान लगता है। लेकिन मैं कहती हूँ कि क्या कभी उन्होंने उन बच्चों की गहराई तक जाने की कोशिश की है।'

ऐसे चलता है सारा काम

सबसे पहले संदीप किताबें इकट्ठा करते हैं, फिर संस्था से जुड़े दूसरे लोग कई जगहों पर शिविर लगाकर अन्य लोगों को पुरानी किताबें, कापियाँ, पेन, पेंसिल आदि देने के लिए प्रेरित करते हैं। कुछ जगहों पर वहाँ के दुकानदार या अन्य समाजसेवक संस्थान को जरूरतमंदों की सूची देते हैं और इसी आधार पर लोगों को चीजें मुहैया कराई जाती हैं।

जहाँ तक बात समाज के कमजोर हिस्से की है तो हमें यह स्वीकारना होगा कि जब बच्चे के पेट में खाना नहीं है तो वे किताबी ज्ञान का क्या करेंगे। हमें इस समस्या का हल निकालना होगा ताकि बच्चों को सही पोषण मिल सके और फिर वे अपनी सारी ऊर्जा सही दिशा में लगा सके।

- विनोद कुमार चौधरी, प्रोफेसर

मैंने अपनी आँखों के सामने नशा करने वाले, डर कर जीने वाले, उम्मीद खो चुके बच्चों को बुराई का रास्ता छोड़ सही दिशा में समर्पित होते देखा है। वे बच्चे भी हमारे बच्चों की तरह हैं, जरूरत सिर्फ उन्हें सही राह दिखाने की है।

- असतिंदर कौर

साभार : दैनिक जागरण

काल जिसे परिवर्तित करता है वह काल से बंधा होता है पर वह सतनाम शाश्वत है तीनों कालों के परे अपरिवर्तनशील है। उसका न कोई पिता है न माता, वह अयोनिज है, वह स्वयंभू है क्योंकि वह पूर्ण है। उपनिषद् भी इस बात को कह रहे हैं कि पूर्ण में से पूर्ण को निकाल दें तो पूर्ण ही शेष रहता है अर्थात् वह अनन्त है सबके मूल में है ऐसे सतनाम को गुरु कृपा से प्राप्त किया जा सकता है।

श्री गुरु नानक देव का जीवन दर्शन

डॉ. ओम प्रकाश पारीक
सह आचार्य संस्कृत
रा.महा. आहोर, जालौर

आकाश, वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी इन सभी पंच-भौतिक तत्त्वों से मिलकर देह का निर्माण होता है जिसमें जीव (आत्मा) निवास करता है। इस शरीर में जितने काल तक जीव रहता है वही जीवन है। इस प्रकार के जीवन की वास्तविकताओं को यथार्थ रूप से जानना तथा तदनुरूप मानव-व्यवहार को प्रेरित करना जीवन दर्शन कहलाता है। वास्तव में आदिकाल से ही हमारे ऋषि-मुनियों, महापुरुषों, संतों ने अपनी तपश्चर्या एवं क्रांत प्रज्ञा से मानव जाति को जीवन की सार्थकता का मार्ग सुझाया है। इसीलिए धार्मिक एवं आध्यात्मिक चिंतन के अनुसार अनेक मत, पंथ, संप्रदाय विद्यमान हैं, पर सभी का मूल उद्देश्य मानव जीवन की सार्थकता है।

जीवन की सार्थकता का मार्ग उस समय अवरुद्ध हो जाता है जब सम-सामयिक परिस्थितियों के प्रभाव से समाज में हिंसा, पाखंड, धर्मांतरण, धार्मिक उन्माद जैसे झंझावात प्रचलित होते हैं। ऐसे विकट समय में जो महान आत्मा मार्ग दिखाता है, वह संत, समाज सुधारक, धर्मगुरु आदि विभिन्न नामों के द्वारा समाज में श्रद्धास्पद होता है। ऐसे ही दिव्य पुरुषों में सिख धर्म के संस्थापक व प्रथम गुरु श्री गुरुनानक देव को समाज अत्यंत श्रद्धा एवं भक्ति से स्मरण करता है।

श्री गुरुनानक देव की जन्म-कालीन पृष्ठभूमि में जहाँ धर्म में बाह्याडम्बर-पाखंड चरम पर था वहीं मुस्लिम आक्रांता अपने साम्राज्य को भारत में स्थापित कर अपने धर्म के प्रचार हेतु आतंकी नीति पर अग्रसर थे जिससे समाज त्रस्त था। लोदी वंश के उत्तराधिकारी सिकन्दर लोदी ने अनेक मंदिरों को ध्वस्त कर उन्हें कसाई खानों में परिवर्तित कर दिया नानक ने ऐसे अत्याचारों को देखा था, उन्होंने ऐसे राजाओं को कसाई बताया जो हिंसा और आक्रमणकारी थे।

कलि काते राजे कसाई
धरमु पखु करि उड़िया

इसी क्रम में बाबर का आक्रमण हुआ तथा मुगल वंश की जड़ें भारत में जमने लगी। बाबर के आतंक को भी नानक जी ने देखा। ऐसे में राजनैतिक, सामाजिक, अस्थिरता, जाति-पंथ के आडम्बर, कर्मकाण्ड के दलदल में फंसा समाज, धर्म के आन्तरिक तत्त्व को भूलता जा रहा था फलत: वैयक्तिक जीवन व्यर्थ एवं समाज दिग्भ्रमित था। गुरुनानक देव जी की दिव्य दृष्टि ने इन सब परिस्थितियों को देखा साथ ही उन्होंने बहुत समय तक अनेक यात्राएँ की इन यात्राओं को उदासियों के नाम से जाना जाता है जिनका उद्देश्य अखंड राष्ट्र

के लिए एवं समूची मानवता के लिए अपने चिंतन को परिष्कृत एवं प्रभावशाली बनाना था। यात्राओं में वे धर्मगुरुओं, साधु-संतों, पीर-फकीरों तथा जनसामान्य से मिलते थे। वह मुसलमानों के तीर्थ स्थल मक्का भी गए। ये सभी यात्राएँ देश एवं धर्म की वास्तविक दशा-दुर्दशा को देखने-समझने उसे ठीक करने के चिन्तन-उपाय एवं मार्गदर्शन के लिए अत्यंत लाभप्रद रही।

नानक जैसे दिव्य प्रकाश पुञ्ज ने अपने जीवन प्रसंगों एवं कल्याणकारी दृष्टि से मानवजाति को जो रास्ता दिखाया है, वह कालजयी बनकर शाश्वत मार्गदर्शन करता है। इसलिए नानक जीवन का यह प्रसंग उद्धृत करने योग्य है।

अंधेरी रात, नदी का प्रवाहमान विस्तृत पाट, जिसके किनारे बैठे हैं नानक एवं उसका शिष्य मरदाना। अचानक नानक अपने वस्त्र उतारते हैं और गहरी नदी में उतर जाते हैं। मरदाना के लिए नानक के द्वारा किया यह कार्य अनोखी घटना नहीं थी, महापुरुषों के साथ रहने वाले ही उनके अद्‌भुत कौतुहलपूर्ण चरित्र को देख पाते हैं। किन्तु यह क्या? डुबकी लगाये 10-15 मिनट के लगभग बीत गये पर नानक बाहर नहीं आये। उसने आवाज लगायी पर व्यर्थ, वह चिल्लाने लगा, लोगों को इकट्ठा किया, नानक से समाज बहुत प्रेम करता था सभी लोग ढूँढ़ने लगे पर नानक न मिले। तीन दिन में भी नानक का कोई पता नहीं चला, आखिर सब लोगों ने सब्र ले लिया कि नानक नदी में बह गये और मर गये। तीन दिन बाद नानक पुनः नदी से प्रकट हो गये साथ ही प्रकट हुआ मानव जाति का उद्धारक नानक का प्रथम वचन 'जपु जी'। वास्तव में नानक ने परमात्मा के साथ जो अमृत चखा, जिस भाव में समाधिस्थ रहे, उस अमृत का सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिये नानक ने अपनी वाणी में गान किया।

इक ओंकार सतिनाम
करता पुरखु निरभउ निरवैर
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरु प्रसादी
(जपु जी)

अर्थात् परमात्मा एक, सत्य, कर्ता, निर्भय, द्वेषरहित, कालातीत, अजन्मा, स्वयंभू तथा गुरुकृपा से प्राप्त किया जा सकता है। ऐसा ईश्वर आदि में था और आगे रहेगा, वह निरंकार है लेकिन सृष्टि का कर्ता, सर्वशक्तिमान, सर्वप्रदाता है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सृजक, पालक एवं संहारक रूप हैं जो कि उसके ही प्रतीक हैं। अतः वह सगुण भी है और निर्गुण भी पर उसका सगुण रूप गौण है। सगुण के माध्यम से निर्गुण तक जाना जीवन का उद्देश्य है। निर्गुणरूप, नित्य, शाश्वत, अनादि, अजन्मा है। भक्ति के द्वारा प्राप्त करने से वह सगुण है क्योंकि भक्त बिना सगुण ईश्वर के नहीं रह सकता, पर सगुण से जैसे ही भक्त का तादात्म्य होता है वह एकाकार हो जाता है और अपनी सुध-बुध खो बैठता है, जिससे वह निर्गुण परात्पर से साक्षात्कार करता है। इसलिए गुरुनानक देव जी के अनुसार सभी देवी देवताओं-संप्रदायों में जो एक शाश्वत तत्त्व है वह है 'सतनाम', उसी का अस्तित्व है बाकी सब नश्वर है। ऊँकार उस सतनाम का बीजाक्षर है। वास्तव में ऊँकार के अतिरिक्त अन्य नाम मनुष्य ने पैदा किये हैं पर ऊँकार में स्थित अ+उ+म् ध्वनियाँ नैसर्गिक नाद हैं जो आदि में भी था, वर्तमान में है तथा

भविष्य में अनन्तकाल तक रहेगा। वह नाद ही परात्पर ब्रह्म सतनाम है। यदि हम किसी भी नाम का जप करेंगे तो भी समाधि अवस्था में यह नाद ही शेष रहेगा, अतः यही सत्य निष्कर्ष सत स्वरूप है। वह कर्ता भी है अर्थात् सृष्टा है पर अपनी सृष्टि में छिपा है उस सतनाम में जो एकाकार हो जाता है फिर उसे किसका भय, किससे बैर, किससे राग, किससे द्वेष अर्थात् सभी समाप्त हो जाते हैं। काल जिसे परिवर्तित करता है वह काल से बंधा होता है पर वह सतनाम शाश्वत है तीनों कालों के परे अपरिवर्तनशील है। उसका न कोई पिता है न माता, वह अयोनिज है, वह स्वयंभू है क्योंकि वह पूर्ण है। उपनिषद् भी इस बात को कह रहे हैं कि पूर्ण में से पूर्ण को निकाल दें तो पूर्ण ही शेष रहता है अर्थात् वह अनन्त है सबके मूल में है ऐसे सतनाम को गुरु कृपा से प्राप्त किया जा सकता है। संपूर्ण साधना विधि से अवगत हो जाने पर भी गुरु कृपा से ही उद्धार होता है। गुरु के बिना अहंकार नहीं गिर पाता पर गुरुकृपा के अधीन होने पर संपूर्ण अहंकार गिर जाता है तथा वह सतनाम से एकाकार हो जाता है। गुरुनानक कहते हैं सतगुरु वह जहाज है जो शबद की शक्ति के द्वारा माया के भवसागर से मनुष्य को पार करके ऐसे स्थान पर पहुँचा देता है जहाँ विषयों का पवन नहीं है तृष्णा की दाहकता नहीं है और स्वार्थ का जल नहीं है।

सतिगुरु है बोहिथा, सबद लंघावणहारु
तिथै पवणु न पावको न जलु न आकारु
तिथै सचा सचि नाई भवजल तारणहारु

(गुरुग्रंथ साहिब)

नानक इस बात को जानते हैं कि भक्तों के लिए ईश्वर का सगुण रूप उपास्य है इसलिए वे कहते हैं कि परमात्मा निर्गुण निराकार तो है ही लेकिन साकार भी है-

निरंकार आकार आपि निर्गुण सगुण एक
एकहि एक बखाननो नानक एक अनेक

(गुरु ग्रंथ साहिब)

नानक धर्म में पाखंड के अत्यन्त विरोध में थे। उनके अनुसार आन्तरिक गुणों से ही धर्म पालन करना चाहिये। वे कहते हैं ब्राह्मण वही है जो ब्रह्म का विचार करे और अन्य को सिखावे अतः आचरण ही धर्म में मुख्य बात है।

नानक धर्म में पाखंड के अत्यन्त विरोध में थे। उनके अनुसार आन्तरिक गुणों से ही धर्म पालन करना चाहिये। वे कहते हैं ब्राह्मण वही है जो ब्रह्म का विचार करे और अन्य को सिखावे अतः आचरण ही धर्म में मुख्य बात है। उन्होंने कहा यज्ञोपवीत (जनेऊ) को दया का कपास, संतोष का सूत, संयम की गांठ एवं सत्य से पक्का बनाओ क्योंकि ऐसा यज्ञोपवीत न टूटता है, न मैला होता है, न जलता है, न नष्ट होता है। अतः इसको धारण करने वाला मनुष्य धन्य है-

दइया कपास संतोखु सूतु गंढ़ी सतु वटु
एहु जनेउ जीउ का हई त पाडे धनु
ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाई
धनु सु माणस नानका जो गलि चले पाई

(गुरु ग्रंथ साहिब)

मुसलमानों की हिंसक वृत्ति को देखते हुए गुरुनानक जी ने कहा कि वह ही मुसलमान कहलाने योग्य है जो दयालु एवं कृपालु हो-

तउ नानक सरब जीआ मिहरंमति
होई त मुसलमाण कहावै।

(गुरु ग्रंथ साहब)

इसी प्रकार श्री गुरुनानक सफल कमाई के पक्षधर थे- जो परिश्रम से प्राप्त होती थी। ईश्वर के पथ पर चलने वाला व्यक्ति परिश्रम से धन कमाता है तथा उसमें से कुछ दान देता है जहाँ दान है वहाँ ईश्वर है क्योंकि ईश्वर सबसे बड़ा दाता है। गुरुनानक को यह बात अत्यन्त पीड़ा देती थी जहाँ व्यक्ति अपने अन्तःकरण से तो कलुषित होता है किन्तु ऊपर से उज्ज्वल दिखता है एवं बुरे आचरण करता है -

गल्ली असी चंगिया आचारी बुरि आह
मनहु कुसुधा कालिया बाहरी चिटबी आह।

(गुरु ग्रंथ साहिब)

वे विद्याध्ययन में मनन एवं विचार को महत्त्व देते थे जो संस्कार उत्पन्न करने में सक्षम हो -

विदिआ बीचारी तां पर उपकारी

(गुरु ग्रंथ साहिब)

गुरुनानक देव अपरिग्रह, अस्तेय (चोरी न करना), निन्दा न करना, क्रोध न करना, कोई बुरे कार्य का चिन्तन न करना, सदैव प्रसन्न रहना, ईश्वर से क्षमा याचना करना, स्त्रियों को सम्मानित करना व आदर देना, लालच वृत्ति न रखना आदि सदवृत्तियों को जीवन की सार्थकता के लिये महत्त्वपूर्ण मानते थे। वे सर्वदा ईश्वर भक्ति में अहंकार के त्याग को प्रमुख मानते थे वे कहते थे सच्चा काजी व सच्चा दिगम्बर वह है जिसने अहंकार छोड़ दिया है।

इस प्रकार श्री गुरुनानक देव ने जिन परिस्थितियों में समाज को मार्ग दिखाया वह न केवल सिख धर्म के लिये अपितु संपूर्ण मानव जाति के लिये विभिन्न कृत्रिमताओं एवं पाखण्ड से मुक्त करने वाला, आत्मोद्धारक, जीवन की सार्थकता का उत्तम जीवन दर्शन है। ❑

गुरु नानक जी ने स्पष्ट कहा था मेरा सम्बन्ध किसी जाति से नहीं है। उन्होंने सभी शिष्यों को एक साथ भोजन करने का संदेश दिया। छुआछूत का भेदभाव मिटाकर मातृत्व का स्वर उठाया। यात्रा के समय निम्न वर्ग के साथ रहने में उन्हें आनन्द मिलता था। जाति व्यवस्था समाप्त करने के लिये ही उन्होंने सभी शिष्यों के लिए एक भोजनालय की व्यवस्था की जिसे गुरु का लंगर कहा जाता है।

सामाजिक समरसता और गुरुनानक देव

डॉ. मोहनलाल साहु
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास संकलन
समिति चित्तौड़ प्रान्त, कोटा

हर व्यक्ति में ईश्वर का वास होता है, इसीलिए लोगों को धर्म, जाति, लिंग या प्रदेश के आधार पर एक दूसरे से भेदभाव नहीं करना चाहिए। जिस व्यक्ति का कोई भी नहीं, उसका ईश्वर होता है। जिसने हमें जन्म दिया है, वह पाल भी सकता है, फिर हमें घमण्ड किस बात का करना चाहिए। दुनिया में जितने दिन रहना है उतने दिन दूसरों के लिए काम करो ताकि मरने के बाद भी लोगों के दिल में जिन्दा रह सको।

गुरुनानकदेव

'समरसता' विभेद रहित मानव एकात्मकता का पर्याय है। सामाजिक समरसता का तात्पर्य उस आदर्श स्थिति से है जिसमें समस्त सामाजिक बन्धुओं में जाति, धर्म, लिंग, भाषा, प्रान्त, बोली, ऊँच-नीच, छुआछूत आदि के विभेद के बिना समाज के प्रत्येक बन्धु के मध्य एकरूपता, एक रसता हो। ऐतिहासिक दृष्टि से भारत में सदैव बिना किसी विभेद के सर्वजनहित की बात की है। रामायण में 'परोपकार पुण्याय पापाय पर पीड़नम्' का उल्लेख है। मध्यकाल में मुसलमानों के आगमन के बाद हमारे देश में जाति व्यवस्था में कठोरता आई और यह व्यवस्था जन्म आधारित हो गई। प्रारम्भ में यह व्यवस्था कर्म आधारित थी। जैसा कि स्वयं भगवान श्रीकृष्ण श्रीमद्भगवतगीता में कहते हैं-

'चातुवर्ण्य मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।

अथर्ववेद में भी सामाजिक समरसता व सद्भाव को स्वीकार करने का सन्देश है। कुएँ, तालाब, बावड़ियाँ सबके लिए हैं। आप अपना भोजन मिलकर बनाएँ, इकट्ठे होकर खाएँ तथा सब रथ के पहिये के आरे के समान संगठित होकर रहें। यही हमारी संस्कृति है।

मध्यकाल में सामाजिक विभेद एवं अस्पृश्यता जैसी बुराइयाँ सामाजिक चुनौती

के रूप में उभरकर आई। इस समय भक्ति आन्दोलन के सन्त कबीर, दादू, मीरा, तुलसीदास, नामदेव, ज्ञानदेव एवं गुरुनानक ने इन बुराइयों को समाज में मिटाने का जिम्मा उठाया और उन्होंने मानववाद का समर्थन करते हुए कई उदाहरण और आदर्श प्रस्तुत किए और समाज को सामाजिक समरसता के लिये प्रेरित किया। लोगों ने इन सन्तों का अनुसरण भी किया।

समाज सुधार एवं सामाजिक समरसता की स्थापना में गुरुनानक देव अग्रणी रहे हैं। उनकी दिव्य दृष्टि ने राजनैतिक धर्मान्धता का सामाजिक संगठन पर प्रभाव का सूक्ष्म क्रांतदर्शी, रूढ़िवाद व सामाजिक विषमता के प्रचण्ड विरोधी एवं अद्भुत युग पुरुष गुरुनानक देव का आविर्भाव उस समय हुआ जब देश में मुस्लिम साम्राज्य का पूर्ण स्वामित्व हो चुका था। समाज में मुस्लिम धर्मान्धता, संकीर्णता, असहिष्णुता, असमानता और क्रूरता के कारण कई प्रकार की विकृतियाँ आ गयी थी। जहाँ तक कबीर ने हिन्दू और मुसलमानों की धार्मिक व सामाजिक बुराइयों की तीखी आलोचना की और दोनों उनसे असंतुष्ट थे। लेकिन गुरुनानक ने प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण शब्दों के द्वारा सामाजिक समरसता का प्रयास किया। उन्होंने समाज के दलित वर्ग को समानता का स्थान दिलाकर उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने से रोका। धर्म और समाज सुधार के साथ-साथ समाज में राजनैतिक चेतना को भी जाग्रत किया।

हिन्दू समाज में आई हुई बुराइयों का चित्रण करते हुए गुरुनानक ने कहा है कि संन्यासियों के दस सम्प्रदाय और योगियों के 12 पन्थ, 1 अगम और दिगम्बर आदि परस्पर कलह करते हैं। शास्त्रों, वेदों और पुराणों में परस्पर संघर्ष चलता रहा है। तंत्रमंत्र रसायन और करामात का बोलबाला है। इस प्रकार सभी तमोगुण में विरत हैं। मुस्लिम शासकों की धर्मपरिवर्तन की नीति, तीर्थ यात्राकर धार्मिक उत्सवों व मेलों पर कठोर प्रतिबंध नये मन्दिर निर्माण पुराने मन्दिरों के पुनरुद्धार पर रोक, हिन्दू धर्म व समाज के नेताओं का दमन, धर्मपरिवर्तन के लिए प्रोत्साहन, नकद पुरस्कार के कारण हिन्दू समाज में अनेक प्रकार की विकृतियाँ आ गयी थी। सामाजिक विभेद की दृष्टि से हिन्दू समाज में उच्च वर्ग के हिन्दुओं का शूद्रों पर अत्याचार अधिक था। उन्हें सभी अधिकारों से वंचित कर दिया था। वेद और शास्त्र उनके लिए त्याज्य थे। उन्हें भगवत दर्शन की अनुमति नहीं थी।

उन्होंने साम्प्रदायिक भेदभाव मिटाकर एक साथ चलने का सन्देश दिया। इसके साथ ही सामाजिक दृष्टि से उनका प्रमुख कार्य दलित वर्ग को हिन्दू समाज में समानता का स्थान देकर उन्हें इस्लाम की तरफ जाने से रोकना था। गुरुनानक का मुख्य उद्देश्य सम्पूर्ण मानव समाज का उत्थान था। इसलिये बिना किसी भेदभाव के मानवमात्र के कल्याण के सेवा कार्यों पर विशेष जितना बल दिया उतना अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है। एक समाज सुधारक के रूप में उन्होंने पाखण्ड, रूढ़ियों, जाति प्रथा का खण्डन किया। उन्होंने कहा था-

जाणहु ज्योति न पूछहु जाति आगे जातिन है।

गुरुनानक की मान्यता थी कि प्रत्येक व्यक्ति में चारों वर्गों का समन्वित रूप होना चाहिये। जिस व्यक्ति ने यह समन्वित रूप स्थापित कर लिया वही परमात्मा का वास्तविक रहस्य जानता है।

गुरुनानक देव ने सामाजिक बुराइयों का कटु विरोध किया। उन्होंने कहा मनुष्य मात्र में स्थित परमात्मा की ज्योति को समझने की चेष्टा करो। जाति पांति के चक्कर में न पड़ो। यह समझ लो कि आगे कोई भी जाति पांति की व्यवस्था नहीं थी। मैक्स आर्थर-मैकालिफ ने नानक देव की सामाजिक समरसता के सम्बन्ध में लिखा है - 'गुरु नानक जी ने स्पष्ट कहा था मेरा सम्बन्ध किसी जाति से नहीं है। उन्होंने सभी शिष्यों को एक साथ भोजन करने का संदेश दिया। छुआछूत का भेदभाव मिटाकर मातृत्व का स्वर उठाया। यात्रा के समय निम्न वर्ग के साथ रहने में उन्हें आनन्द मिलता था। जाति व्यवस्था समाप्त करने के लिये ही उन्होंने सभी शिष्यों के लिए एक भोजनालय की व्यवस्था की जिसे गुरु का

लंगर कहा जाता है।' गुरुनानक देव द्वारा प्रारम्भ की गई लंगर परम्परा सामाजिक समरसता का सबसे बड़ा उदाहरण है जहाँ पर अमीर, गरीब हर जाति, धर्म व वर्ग के लोग एक साथ बैठकर भोजन करते हैं। यह परम्परा आज भी प्रचलित है।

उन्होंने विकासोन्मुख एवं शक्तिशाली सिख धर्म की स्थापना की। धर्म के मूल सिद्धान्तों की अनुपालना के साथ ही उन्होंने धर्म के बाह्यरूपों में परिस्थिति अनुसार परिवर्तन किया। इसी से यह धर्म इतना शक्तिशाली हो गया। उन्होंने एक ऐसे इष्टदेव की कल्पना की जो अकाल अजन्मा तथा स्वयंभू है। परमात्मा को न तो स्थापित किया जा सकता और न निर्मित। वह अलख अपार अगम और इन्द्रियों से परे है। न उसका काल है, न कर्म और वह जाति-अजाति से भी परे है-

अलग अपार अगम अगोचर
ना तिस काल न करमा।
जाति अजाति अजोनी
समऊ न भाऊ न भरमा।।
न तिसु मात पिता सुत बंधव
ना तिसु काम व नारी।
अकुल निरंजन अपर परं
परू सगली ज्योति तुम्हारी।।

गुरुनानक देव हिन्दू दर्शन की भांति कण-कण में ईश्वर की शक्ति को देखते थे वे माया को भ्रम की दीवार और ज्ञान का जंगल मानते थे। उन्होंने ऐसे स्थान पर माया को एक ऐसी सास का रूपक दिया था। जो जीव रूपी वधू को अपने घर में अर्थात् आत्मसुख में रहने नहीं देती। जीव रूपी वधू को परमात्मारूपी प्रियतम से मिलने नहीं देती।

सस बुरी घरि वासु न देवे
पिर सिउ मिलण न देई बुरी

समन्वय की दृष्टि से भी गुरु नानक देव का योगदान अद्वितीय था। उन्होंने बिना

समग्र रूप से देखा जाय तो गुरु नानक जी ने एक समाज सुधारक के रूप में जाति प्रथा का खण्डन किया, हिन्दू मुस्लिम समन्वय पर बल दिया और हिन्दू समाज में स्त्रियों की दशा सुधारने के लिए सराहनीय कार्य किया। स्त्रियों को आध्यात्मिक साधना तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों में समान अधिकार दिये। गुरुनानक देव की यह विशेषता थी कि उन्होंने किसी भी धर्म को बुरा नहीं कहा अपितु उस धर्म में फैली हुयी बुराइयों एवं विनाशात्मक प्रवृत्तियों की कटु आलोचना की।

जातीय और साम्प्रदायिक भेदभाव के हिन्दू तथा मुसलमानों को अपना शिष्य बनाया और उन्हें एक साथ भोजन करने पर जोर दिया। नानक के अनुसार उस एकेश्वर की आराधना अनेक मुहम्मद, ब्रह्मा, विष्णु महेश तथा राम करते थे। हिन्दू और मुस्लिम सन्त परमेश्वर के दीवान हैं। नानक ने कहा-

पारब्रह्म प्रभु एक है, दूजा नहीं कोई।

नानक देव ने ईश्वर साधना व भक्ति भाव को जाग्रत करने के लिए सत्संग और साधु की संगति आवश्यक है। गुरु साधु संग के लिए प्रार्थना की गई है -

करहुं कृपा करूणायते तेरे हरि गुण गाऊ।
नानक की प्रभु बेनती साध संग समाऊ।

समग्र रूप से देखा जाय तो गुरु नानक जी ने एक समाज सुधारक के रूप में जाति प्रथा का खण्डन किया, हिन्दू मुस्लिम समन्वय पर बल दिया और हिन्दू समाज में स्त्रियों की दशा सुधारने के लिए सराहनीय कार्य किया। स्त्रियों को आध्यात्मिक साधना तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों में समान अधिकार दिये। गुरुनानक देव की यह विशेषता थी कि उन्होंने किसी भी धर्म को बुरा नहीं कहा अपितु उस धर्म में फैली हुई बुराइयों एवं विनाशात्मक प्रवृत्तियों की कटु आलोचना की। वे कहा करते थे मनुष्य (मांस) भक्षक (मुसलमान) नमाज पढ़ते हैं और जुल्म की धुरी चलाने वाले (हिन्दू) जनेऊ धारण करते हैं।

मानस खाणे करहि निवाज,
खुरी लगाइन ति गलि ताय।।

उनका संदेश था कि हिन्दू और मुसलमान अपनी कमजोरियों को समझकर उनका निराकरण करने का प्रयास करें। सिख धर्म ने सभी धर्मों के प्रबल व्यावहारिक पक्ष को अपनाया। गुरुनानक देव की एक ओर विशिष्टता हमें यहाँ दिखाई देती है जो अन्य धर्मों या सन्तों में नहीं है। इतिहासकार कनिंघम की मान्यता है कि मध्ययुगीन समाज सुधारकों ने अपने मतों में तर्क वितर्क, वाद-विवाद पर तो विशेष बल दिया है लेकिन ऐसे उपदेश नहीं दिये जिससे राष्ट्रवाद के निर्माण के कार्य का बीजारोपण हो सके। लेकिन नानक देव जी ने जनता की निराशा को दूर करते हुये उसमें आशा, विश्वास व पौरुष की भावना जाग्रत की। उनकी शिक्षा का ही प्रभाव था कि उनके अनुयायियों ने राष्ट्र के निर्माण एवं राष्ट्र की रक्षा में अपना अनुपम योगदान एवं बलिदान दिया। यही कारण है कि मध्ययुगीन समाज सुधारकों एवं चिन्तकों में गुरुनानक देव को उच्च स्थान प्राप्त है। वे प्रेम और समानता को मानवता का सबसे बड़ा घटक मानते थे। गुरुनानक देव के व्यक्तित्व में एक दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, समाज सुधारक, कवि देशभक्त और बन्धुत्व के समस्त गुण दिखाई देते हैं। ❑

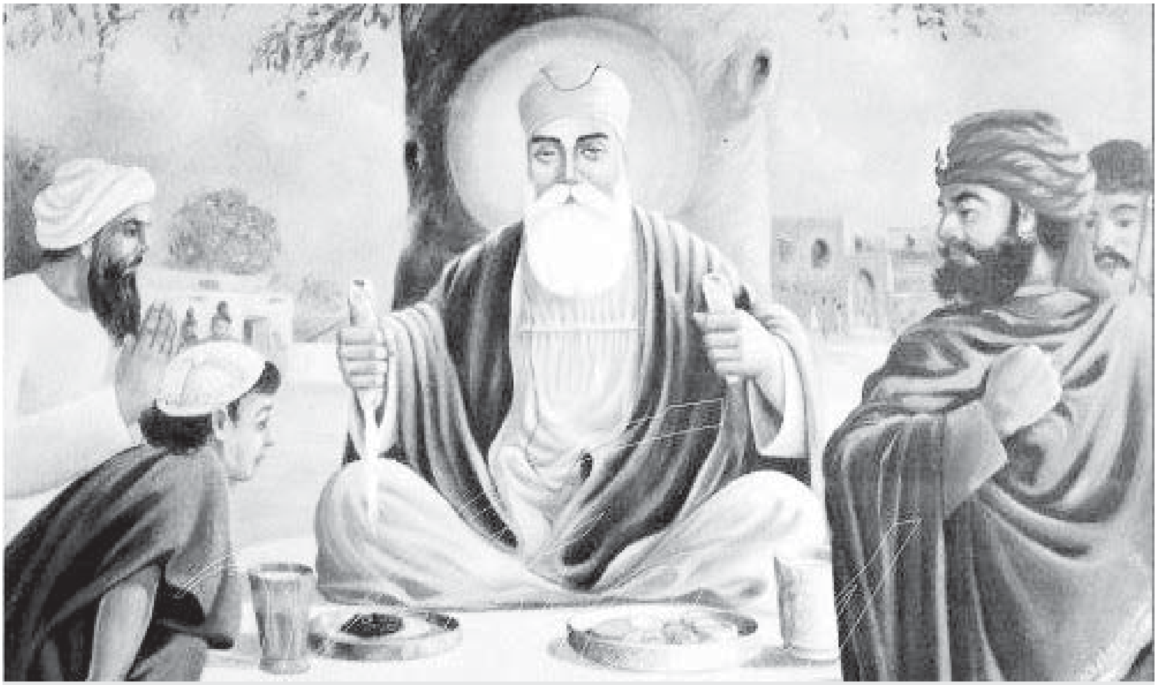

समाज में सुधार के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में छुपी बुराइयों को पहचाने और उनका त्याग करे। गुरुनानक देव जी भी मानते थे कि बुराई को छोड़ने पर ही हम अच्छाई ग्रहण कर सकते हैं। निजी सदाचार पर बल देते हुए उनका कहना था कि- 'नानक अवगुण जे टरै तेते गल जंजीर। जो गुण होनि ता कटी, अनि से भाई से वीर।'

गुरुनानक देव जी का समाज सुधार में योगदान

डॉ. ईश्वर चन्द्र शर्मा
सहायक आचार्य-
राजनीति विज्ञान, राजकीय
महाविद्याल, रोहट, पाली

लेख की शुरूआत कविता की पंक्तियों से है -

रहे प्रेम से हिल मिलकर और,
जीवन में खुश रहना सीखें।
एक प्रभु की सन्ताने सब,
गीत एकता के हम लिखें।
जाति-पांति का नहीं भेद हो,
ना अमीर-गरीब का अन्तर।
आडम्बर का मोल नही कुछ,
ना हो जादू-टोना मन्तर।
मेहनत और ईमानदारी से,
जीवन का हम करे गुजारा।
नारी गरिमा को हम समझे,
दुनिया में हो भाईचारा।
गुरुनानकजी ने फैलाया,
ज्ञान का आलोकित उजियारा।
इनको जीवन में हम ढ़ाले,
करें समाज का सभी सुधारा।

मध्यकाल में जब भारत में सामाजिक एवं धार्मिक कुप्रथाओं का कुचक्र समाज को जकड़े हुए था, जाति-पांति की भेदभाव पूर्ण प्रथाएँ रूढ़िगत हो गई थी, बाहरी आडम्बर ने आध्यात्मिकता की अन्तर्निहित चेतना को दबाए रखा था, आर्थिक विषमता बढ़ने लगी थी, विभिन्न सम्प्रदायों में वैर-विरोध की भावना बलवती हो रही थी, ऐसे समय में हमारे देश में महान् सन्त गुरुनानक देवजी का अवतरण हुआ। सिक्ख धर्म के आदि गुरु, गुरुनानक देवजी का जन्म कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को हुआ था, इस दिन को प्रकाश पर्व के रूप में मनाया जाता है। हालांकि कुछ विद्वान गुरुनानक देवजी की जयन्ती 15 अप्रैल 1469 को भी मानते हैं। यही कारण है कि 15 अप्रैल को भी गुरुनानक जी की जयन्ती मनाई जाती है। प्रकाश पर्व पर अवतरित हुए गुरुनानक देवजी ने समाज में सुधार हेतु अपने ज्ञान एवं कर्म का प्रकाश फैलाया।

मात्र 16 वर्ष की आयु में ही वह

भारत सहित अन्य देशों की यात्रा पर निकल गए और समाज में फैली कुरीतियों और लोगों के मन से घृणा के भाव को मिटाने तथा आपस में प्रेम की भावना जाग्रत करने के लिए कई काम किए।

गुरुनानक देवजी ने जात-पांत को समाप्त करने और सभी को समान दृष्टि से देखने की भावना विकसित करने के उद्देश्य से 'लंगर' की प्रथा शुरू की थी। लंगर में सभी जाति के, अमीर-गरीब एवं छोटे-बड़े एक ही पंक्ति में बैठकर भोजन करते हैं। आज भी गुरुद्वारों में यह लंगर की व्यवस्था जारी है।

गुरुनानक देवजी का उपदेश था-

'सब महि जोति-ज्योति है, सोई,
तिस दै चानणां सम चाणन होई।'

यानि सभी मनुष्य एक ही परमात्मा के अंश है और सभी को समान भाव से देखना ही आत्म ज्ञान है।

गुरुनानक देव ने समता की भावना के विकास हेतु अंहकार को त्यागने की बात कही। उन्होंने अपने संदेश में समाज में एकता, साझेदारी और आपसी भाईचारे की भावना को विकसित करने पर बल दिया। समाज में सुधार के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में छुपी बुराइयों को पहचाने और उनका त्याग करे। गुरुनानक देव जी भी मानते थे कि बुराई को छोड़ने पर ही हम अच्छाई ग्रहण कर सकते हैं। निजी सदाचार पर बल देते हुए उनका कहना था कि- 'नानक अवगुण जे टरै तेते गल जंजीर। जो गुण होनि ता कटी, अनि से भाई से वीर।'

उन्होंने लोगों के आचरण में आत्मनिर्भरता, बांट के खाना, दया, विवेक सम्मत विचार, विद्या और नम्रता के गुणों को धारण करने की शिक्षा दी।

गुरुनानक देवजी ने स्त्री-पुरुष समानता पर बल दिया। वे नारी के प्रति असीम आदर प्रकट करते हुए कहते हैं- 'सो क्या मंदा जानिए, जित जनमें राजान।' अर्थात् जिसने राजाओं और महापुरुषों को जन्म दिया, उस स्त्री को छोटा क्यों कहते हो।

समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार की प्रवृति को समाप्त करने में गुरुनानक जी का यह उपदेश की ईमानदारी से और मेहनत करके उदर पूर्ति करनी चाहिए, प्रासंगिक प्रतीत होता है। कमजोर वर्गों के उत्थान हेतु उनका कहना था कि मेहनत और ईमानदारी की कमाई में से जरूरत मंद को भी कुछ देना चाहिए।

उन्होंने लोभ-लालच और संग्रह वृत्ति को बुरा बताया। यदि प्रत्येक इंसान इसे आत्मसात कर ले तो समाज में प्रचलित आर्थिक विषमता और आर्थिक शोषण की प्रवृति समाप्त हो सकती है।

गुरुनानक देवजी ने ईश्वर एक है, सदैव एक ही ईश्वर की उपासना करने, और ईश्वर की सभी जगह तथा प्राणिमात्र में मौजूदगी की शिक्षा दी। उनकी ये शिक्षाएँ मानवता का संदेश देने वाली हैं। इससे मानव मात्र की गरिमा प्रकट होती है।

गुरुनानक जी के अनुसार ईश्वर की भक्ति करने वालों को किसी का भय नहीं रहता। समाज में व्याप्त हिंसा और इंसान द्वारा इंसानों पर किए जा रहे अत्याचारों की समाप्ति हेतु उनका संदेश- 'बुरा कार्य करने के बारे में न सोचे और न सताए' उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

समाज में फैली उदासी और तनाव से मुक्ति के लिए उनका संदेश 'सदैव प्रसन्न रहना चाहिए और ईश्वर से सदा अपने लिए क्षमा मांगनी चाहिए।' प्रभावी प्रतीत होता है।

गुरुनानक जी ने जो प्रेम, मानवता, सदाचार और समानता की राह दिखाई वह आज भी समाज सुधार हेतु प्रासंगिक है।❑

राज्य शिक्षा बोर्डों के लिए केंद्रीय नियामक का प्रस्ताव

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के ड्राफ्ट में सभी स्कूल शिक्षा बोर्डों के लिए एक केंद्रीय नियामक का प्रस्ताव है। अभी तक, सीबीएसई के अलावा किसी भी बोर्ड पर केंद्र की निगरानी नहीं है। राज्यों के बोर्ड स्वायत्त हैं और राज्य सरकारें ही उनका नियमन करती हैं। शिक्षा नीति के अंतिम ड्राफ्ट के अनुसार देश के सभी मान्यता प्राप्त स्कूल बोर्डों के लिए मूल्यांकन और मानकों को विनियमित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक नियामक संस्था बनाई जाएगी। यह संस्था सुनिश्चित करेगी कि विभिन्न बोर्डों की मूल्यांकन पद्धति 21वीं सदी की कौशल जरूरतों को पूरा करे। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ड्राफ्ट को अंतिम रूप दे चुका है। मंजूरी के लिए इसे केंद्रीय मंत्रिमंडल के समक्ष रखा जाएगा। अधिकारियों के अनुसार आखिरी क्षण में इसमें मामूली बदलाव संभव है। इसरो के पूर्व प्रमुख के कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में समिति ने मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कार्यभार संभालने के बाद नई नीति का ड्राफ्ट सौंपा था।

साभार - दैनिक भास्कर

The new education policy is not the end policy in education. It is not the case that it is not flexible. New education policy is new from the old, and the old was dragging a colonial luggage along with the negativism of con-Bharat phenomena. This had been destroying Bharatiya vitality from taking shape and flowing out to flourish into the world to make the world into 'Vasudhaivakutumbakam'.

New Education Policy 2019 : Secondary Education

Dr. TS Girishkumar
Member, ICPR

Education, and there by any education policy becomes the real backbone of any society and any social engineering. From these, it becomes rather mandatory for any education policy to be tailored each time, for given specific society. Should one fail in this, it not only becomes destructive and meaningless, but also shall suck away the very vitality of any given society. Nonetheless, this also should not mean that an education policy for a given society can be an isolated phenomenon, not borrowing from such policies elsewhere, but it should be borrowing what may be needed or required.

Every society shall have its own character, say, identity. It is this identity that makes a society what one is, what the society is, and what the families in that society is. A society shall have distinct social value system, and obviously, the value system of one society may be much different from the value system of another society. This can not be jeopardized while taking ideas from another society and one has to be extremely careful at such points.

Proper and right foundations

A proper and appropriate edifice or foundation is an absolute necessity for education as such. Such basics are to be put for-

midably right at a very early age. People of ancient Bharat used to start this process right from the time a woman conceives, which is till in practice in many traditional families. Normally, external inputs of initial education in a child happens between the age of three to eight. The education policies term this as ECCE to mean Early Childhood care and Education. This is the period of "concept" formation, and it is with these concepts that a child is going to go on with the rest of his or her lives.

This ECCE, its pattern and process etc. are well identified and programmed by education planners from all over the world already, making such models clearly available to us in detail. Bharat also had done much work in this direction over the years of planning and progression. The new education policy of 2019 understands these, but at the same time revisits all such previously existing policies to refine them to what best suits our society, and our Nation.

Bharatiya pattern

We already mentioned about something of an 'identity' to each society, and Nation. We also did mention that such identity is essentially the vital force to Nation society and individuals. This makes it very necessary to comprehend and lay out the ingredients of such a Bharatiya identity in order to visualise an authentic Bharatiya identity.

There shall occur a difficulty here. Should one try to make a 'model' for an identity from elsewhere, that is definitely not going to cohere in Bharatiya context. For nations with common language, the language often becomes the criterion for an identity, let us look at the examples of England, Germany France etc. for the nations who think religion above nation, they may keep religion as identity, making such states theocratic states. There is a big difficulty with theocratic states, and it is also an interesting phenomenon.

Except the Vedic Dharma, which had been amalgamating 'the many' into one, all other world religions had been showing the character of bifurcation through disintegration into many. They branched into many: if not many religions, into many sects. Interestingly, though such different sects are supposed to be of one single religion, their differences at practical level had become sharper and more hateful than the real differences between religions. It puts one at a loss to understand their differences, albeit they keep quoting larger theology or some such reasons.

Now; in a theocratic state, religious sects' function with differences from one another, creating conflicts and contradiction, thereby destroying the vey purpose of theocracy of unification as well identity of a society. Thereby, such theocratic states and their unity is only functional instead of being structural.

In case of Bharat, the criterion of identity is neither language, nor religion, and nor geographical criteria. Bharat has a much more effective criterion already existing within us for tens of thousands of years, and that is Bharatiya Sanskriti. It shall be herculean task to display the ingredients of Bharatiya Sanskriti, but that indeed is not necessary, as most of understand it, though, unable to spell it out.

This makes the consciousness of Bharatiya Sanskriti the criterion of Bharatiya identity, and an education policy of this Nation society must be capable of imparting this one phenomenon most effectively to our generations.

Secondary education

When primary education is the prelude, secondary education becomes the actual formative period. This makes the secondary education the most crucial level of learning, and the education policy must be more serious at this point. Under the overall umbrella of Bharatiya Sanskriti, the secondary

education plans to carry out the following:

Multiple exit and entry points.

Right from secondary level of education, this multiple exit – entry points are facilitated. This shall help one to make reparations into discontinuity for any reasons.

Concept of inter-connectedness.

Knowledge and education have various interconnected departments, levels or area. Such awareness of the 'whole' should be provided to the students with clarity at this very early time. It should be possible for a student to understand, identify and prepare himself or herself for selecting an appropriate area when such demand comes. In other words, at this point in education, a student must be prepared for all area in future. This also adds liberal education into the curricula, liberal arts in the sense of such area which are unconventional or traditional.

Locating education in society

Education is socially contextualised here. The whole learning should make sense to society, must find locus in society and should be of use to society. The student is taught to be well within the society as an integrally socially coexisting individual with responsibility to society as well as the Nation state. Like in the archetype Bharatiya family, one lives for others with the concept of Tyaga as the edifice.

Ability to implement what is learned

Learning alone becomes very subjective. What is subjective must find its objective manifestation in order to be meaningful. Without the ability to implement what is learned, the learning becomes futile. This indeed is an important aspect at this point, the ability to implement what is understood is also enabled.

Transformation of learning into whatever, as time and Nation society requires so

Abilities and knowledge though education must be transferred into another required aspect at the need of the Nation society. Such ability to transform also becomes a part of learning.

Reintegrating dropouts

There could be dropouts for various reasons. But this policy provides space for bringing them back into learning stream, when they so desire. This might have its difficulties, but it is all taken care of through different modes of instructions.

These are only few points of focus with the new education policy at the secondary level. No doubt, the new education policy had brought forward from erstwhile programmes, but with definite improvisations and innovations.

New about the new education policy

It shall make sense to ask this question, what is so new about the new education policy? A surrealistic answer to such question shall be, what was not there in the old policies is new about the new education policy!

Education policies earlier were meticulous alright, they looked into all possible aspects alright, good structured alright, but they were mostly heavily borrowed from without, especially Europe. Many of the educators greatly appreciated only European education, and many of them treated what is of Bharat as obsolete. Some of them even maintain a thorough feeling that Bharat is suffering from 'obsolescence' in their very 'modernised and post-modernised' thinking. Evident enough, such opinions are heavily under colonial influence, and such scholars keep dragging the colonial hang over luggage of negativity with them.

Such well-structured, meticulous and well-tailored education policies lacked just one thing: in fact, the one crucial thing: and that is Bharatiyatva. They did not address the point; what is for Bharat must carry the spirit of Bharat. The spirit of Bharat implies Bharatiya Sanskriti and when Bharatiya Sanskriti is notreflected, it just becomes 'Abharatiya'. Such things, indeed, will have nothing to do with the identity of Bharat and the identity of the people of Bharat.

The new education policy is not the end policy in education. It is not the case that it is not flexible. New education policy is new from the old, and the old was dragging a colonial luggage along with the negativism of con-Bharat phenomena. This had been destroying Bharatiya vitality from taking shape and flowing out to flourish into the world to make the world into 'Vasudhaiva kutumbakam'. Thus, the new education policy shall continue to be new with time to time innovations and improvisations as required. Remember, we have come this long so far, and we shall definitely keep going forward, no matter how great difficulties shall be.❑

वाल्मीकि रामायण का अंग्रेजी में अनुवाद कर 1895 में उसे प्रकाशित करने वाले विद्वान रैल्फ टी. एच. ग्रिफिथ के अनुसार, 'यह एक ऐसा महाकाव्य है जो भारत की रग-रग में समाया हुआ है। यह भारत में हर व्यक्ति की स्मृति में स्थायी रूप से अंकित है। जहाँ-जहाँ राम गए, वे सभी स्थान विख्यात हो गए। सदियों से श्रीराम को लोग लगातार याद करते आए हैं। भला ऐसे व्यक्तित्व के बारे में लिखे गए महाकाव्य को कोई कैसे काल्पनिक कह सकता है?'

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की अभिव्यक्ति

अरुण आनंद
सीईओ,
इंद्रप्रस्थ विश्व संवाद केंद्र

राम और रामायण, भारत की सांस्कृतिक परंपरा का न केवल अभिन्न, बल्कि सबसे महत्त्वपूर्ण अंग हैं। अयोध्या में राम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर के निर्माण का आंदोलन जब वर्ष 1983 में एक बार पुनः आरंभ हुआ तो बहुत से आलोचकों ने राम और रामायण को लेकर कई प्रश्न भी उठाए थे। पर वास्तविकता तो यह है कि राम और रामायण पूरे दक्षिण एशिया को एक सांस्कृतिक परंपरा में बांधते हैं। थाईलैंड, कंबोडिया,वियतनाम, इंडोनेशिया, लाओस, म्यांमार व नेपाल में ही नहीं, बल्कि राम और रामायण का प्रभाव और उपस्थिति सिंगापुर, मलेशिया में भी है।

वाल्मीकि रामायण का अंग्रेजी में अनुवाद कर 1895 में उसे प्रकाशित करने वाले विद्वान रैल्फ टी. एच. ग्रिफिथ के अनुसार, 'यह एक ऐसा महाकाव्य है जो भारत की रग-रग में समाया हुआ है। यह भारत में हर व्यक्ति की स्मृति में स्थायी रूप से अंकित है। जहाँ-जहाँ राम गए, वे सभी स्थान विख्यात हो गए। सदियों से श्रीराम को लोग लगातार याद करते आए हैं। भला ऐसे व्यक्तित्व के बारे में लिखे गए महाकाव्य को कोई कैसे काल्पनिक कह सकता है?'

यही मत इतालवी इंडोलोजिस्ट गैस्पर गोरेसियो (1808-1891) का भी है।

गोरेसियो ने वाल्मीकि रामायण का अनुवाद इतालवी में किया था। उनका मानना है– यह रचना ऐसी घटनाओं पर आधारित है, जिसने हिन्दुओं के मानस पटल पर इतनी गहरी छाप छोड़ी कि इसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

एक अन्य विद्वान एफ.ई. पारगिटर ने अपनी पुस्तक 'द ज्योग्रोफी ऑफ रामाज एक्जाइल' (1894) में भौगोलिक दृष्टि से उन स्थानों से संबंधित जानकारी की समीक्षा की है, जहाँ वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान राम वनवास के दौरान गए थे। पारगिटर का निष्कर्ष है कि वाल्मीकि रामायण में दी गई जानकारी पूरी तरह से तथ्यात्मक है क्योंकि बिना इन स्थानों पर गए इतनी सटीक जानकारी देना संभव नहीं है।

स्वयं स्वामी विवेकानंद का कहना था कि रामायण व महाभारत प्राचीन आर्य जीवन व ज्ञान के एनसाइक्लोपीडिया हैं। मैकडोनाल के अनुसार, 'दुनिया भर में रामायण जैसी साहित्यिक रचना नहीं है, जिसने लोगों पर इतना गहरा प्रभाव छोड़ा हो।'

इतिहासकारों का यह भी मानना है कि जहां-जहां श्रीराम गए, वहाँ-वहाँ उनकी यात्राओं की स्मृति बनाए रखने के लिए मंदिर बनाए गए। इसलिए रामायण की तथ्यात्मकता पर प्रश्न उठाना तर्कसंगत नहीं है. इतिहासकार नंदिता कृष्णन इन स्थानों के सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित करते हुए कहती हैं, 'जिन स्थानों पर भी श्री राम गए, वहाँ अभी भी उनकी स्मृति वैसी ही बनी हुई है, मानो वह कल ही आए हों. भारत में समय को सापेक्ष माना जाता है. इसलिए कुछ स्थानों पर तो उनकी स्मृति में मंदिर बन गए और बाकी स्थानों पर ये यात्राएं और श्रीराम की स्मृति लोकपरंपरा का अभिन्न अंग बन गई। अगर साहित्य, पुरातत्व और स्थानीय परम्पराएँ एक धागे में गुंथी हुई दिखती हैं तो भला इस पर किसी को आपत्ति क्यों हो?'

स्टीफन नैप जो भारतीय वैदिक परंपरा के गहन अध्येता हैं, कहते हैं– 'श्री राम की स्मृति आज भी उतनी मजबूती से कायम है क्योंकि उनका जीवन और शासनकाल दोनों ही असाधारण थे। उनके शासनकाल में शांति थी और प्रचुर समृद्धि भी, इसीलिए रामराज्य को आज सुशासन का संदर्भ बिंदु माना जाता है।'

आधुनिक संदर्भ ग्रंथों में देखें तो सूर्यवंशी श्रीराम का इतिहास फैजाबाद गजेटियर के तैंतालीसवें खंड के पाँचवे अध्याय के आरंभ में दिया गया है। पर वाल्मीकि रामायाण के अनुसार श्री राम का जन्म आज से लगभग 9350 वर्ष पूर्व अयोध्या में उसी स्थान पर हुआ था, जिसे रामजन्म भूमि कहा जाता है। 06 दिसंबर, 1992 को बाबरी ढाँचा ध्वस्त होने के बाद मंदिर संबंधित 265 अवशेषों के साथ एक महत्त्वपूर्ण शिलालेख भी निकला था। इसी शिलालेख से भी यही सिद्ध हुआ कि जिसे आज हिन्दू रामजन्मभूमि मानकर जहाँ मंदिर निर्माण का आग्रह कर रहे हैं, श्रीराम का जन्म वहीं हुआ था।

श्रीराम ने 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के रूप में अपना जीवन जिया। उनके जीवन की सत्य घटनाओं पर आधारित कथा ऋषि वाल्मीकि ने 'रामायण' के माध्यम से संस्कृत में कही। बाद में तुलसीदास ने इसी कथा पर आधारित रामचरितमानस सहित कई अन्य ग्रंथों की रचना की तथा लोकस्मृति व भारतीय मानस में इसे और गहरे से अंकित किया। सामाजिक व व्यक्तिगत जीवन में आदर्श स्थापित करने तथा मूल्यों को स्थापित, संवर्धित व संरक्षित करने की भारतीय जीवन परंपरा के केंद्र में निर्विववाद रूप से श्रीराम व रामायण है। कोई ऐसी भारतीय या प्रमुख विदेशी भाषा नहीं है, जिसमें रामायण का अनुवाद न हुआ हो। पिछले 300 वर्षों में श्रीराम व रामायण पर भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में गहन शोध कार्य हुआ है। जिनका निष्कर्ष यही है कि श्रीराम भारत की सांस्कृतिक परंपरा की सबसे प्रखर अभिव्यक्ति हैं। वे केवल अवतार नहीं, बल्कि ऐसी प्रबुद्ध मूल्य परंपरा के प्रतिनिधि हैं जिसकी ओर पूरा विश्व सम्मान व गर्व से देखता है। उन्हें किसी एक पूजा पद्धति या समाज विशेष से जोड़ कर देखना तथा रामायण जैसे ग्रंथ को संकुचित दृष्टि से कल्पना की उड़ान मानना भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा के साथ गहरा अन्याय होगा। ❑

जन्म शताब्दी श्रृंखला भाग -2

एक युगदृष्टा व विलक्षण संगठन शिल्पी

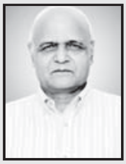

प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा
कुलपति
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय,
ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश

क्रमश...

इस प्रकार वकालत की पढ़ाई पूर्ण कर दत्तोपंत जी ने अपनी पूज्य माता जी की प्रेरणा व अपने सुयोग्य पिताजी के आशीर्वाद से 22 मार्च 1942 के पावन दिवस पर प्रचारक के रूप में अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र को अर्पित कर दिया। इस प्रसंग का विवेचन विगत अंक में हो चुका है। अपने प्रचारक जीवन का आरम्भ दत्तात्रेय बापुराव ठेंगड़ी उपाख्य दत्तोपंत जी ठेंगड़ी ने केरल से संघ के प्रचारक के रूप में किया। दत्तोपंत जी बाल्यकाल से ही देश व समाज के प्रति अत्यन्त संवेदनशील थे। देश व समाज के लिये अपना जीवन अर्पित कर देना उनकी इस सहज मनोवृत्ति के अनुरूप ही था। इसलिए, दत्तोपंत जी के स्वभाव को देखकर ही, जब एल.एल.बी. के अन्तिम वर्ष में अध्ययनरत थे तब ही उन्हें संघ के प्रचारक के रूप में संगठन में कार्यभार सौंपने का विचार प.पू. श्रीगुरु जी ने कर लिया था। दत्तोपंत जी भी प्रचारक के रूप में कार्य करने पर पूर्णत: सहमत थे और दृढ़ निश्चयपूर्वक प्रचारक जीवन अपनाने को अत्यन्त उत्साहित भी थे। लेकिन, उनके पिता जी का प्रारम्भ में उनके घर छोड़कर प्रचारक बनने पर प्रबल विरोध था। इसलिए, उनके पिता जी को मना कर उनकी सहमति लेने हेतु प.पू. श्रीगुरु जी ने नागपुर के संघ कार्यालय से श्री कृष्णराव जी मोहरीर को, दत्तोपंत जी के गृह नगर, उनके पिताजी को सहमत करने के लिए आर्वी भेजा था। आरम्भिक विरोध के बाद अन्त में श्री कृष्णराव जी ने उनके पिता जी को मना लिया। दत्तोपंत जी को प्रचारक

यह एक सुखद संयोग ही था कि दत्तोपंत जी जब स्नातक शिक्षा के लिए नागपुर आए तो सौभाग्य से उन्हें रहने के लिए प.पू. श्री गुरुजी के निवास पर स्थान मिला। दत्तोपंत जी के सर्वांगीण विकास के लिए प.पू. श्री गुरुजी का सान्निध्य एवं मार्गदर्शन सबसे बड़ा सौभाग्य था। इससे बेहतर संयोग क्या हो सकता था। उनकी शिक्षा-दीक्षा के साथ उनका व्यक्तिव गुरुजी के मार्गदर्शन में संवेदना के एक विशिष्ट शिखर की ओर बढ़ता रहा।

बनने की अनुमति देने को बापुराव जी सहमत हुए और प्रचारक जीवन हेतु दत्तोपंत जी को विदा किया। तब 1942 मे दत्तोपंत जी जब प्रचारक निकले, तब उन्हें केरल प्रान्त में संघ कार्य का दायित्व सौंपा गया था।

दत्तोपंत जी में राष्ट्र भक्ति, सामाजिक समरसता का आग्रह व अभाव ग्रस्त समाजजनों के प्रति अनुराग तो बाल्यकाल से ही था। स्वाधीनता हेतु किशोरों की वानरसेना का नेतृत्व, म्युनिसिपल हाईस्कूल के विद्यार्थियों का संगठन करना, गरीब विद्यार्थियों के लिए फंड कमेटी बनाना, गोवारी झुग्गी-झोंपड़ी मंडल का निर्माण करना आदि अनेक सामाजिक कार्यों का नियोजन तथा नेतृत्व दत्तोपंत जी ने किया था। यह सब उनकी इस वृत्ति के प्रमाण हैं जो यह बतलाते हैं कि उनमें देश व समाज के प्रति अगाध संवेदना थी। इससे उन्होंने प्रचारक जीवन ग्रहण किया था। उनके पिताजी स्व.बापुराव जी ठेंगड़ी प्रतिष्ठित हाईकोर्ट प्रेक्टिशनर यानी एडवोकेट थे। अन्य सभी स्थानीय वकील तब तहसील तथा जिला बार में प्रेक्टिस करने वाले प्लीडर मात्र थे। अत: बापुराव जी की आर्थिक स्थिति अत्यन्त अच्छी थी। परन्तु दत्तोपंत को देखने पर वे एडवोकेट पुत्र होंगे ऐसा कभी लगा ही नहीं। क्योंकि वे दरिद्रनारायण से समरस थे। वे एक वीतरागी वृत्ति के थे। वे सदैव अत्यन्त साधारण व सन्त जैसी वेश-भूषा में ही रहते थे। किसी प्रकार का अहंकार उनमें नहीं था।

तथापि यह सारा सम्भव होने और एक आत्म विलोपी एवं उत्कृष्ट व सफल संगठन शिल्पी के रूप में उनके विकास में एक अहम् प्रभाव दत्तोपंत जी का उनकी स्नातक व एल.एल.बी. की शिक्षा के लिए नागपुर आना व प.पू. श्रीगुरु जी के घर में निवास करना था। यह एक सुखद संयोग ही था कि दत्तोपंत जी जब स्नातक शिक्षा के लिए नागपुर आए तो सौभाग्य से उन्हें रहने के लिए प.पू. श्री गुरुजी के निवास पर स्थान मिला। दत्तोपंत जी के सर्वांगीण विकास के लिए प.पू. श्री गुरुजी का सान्निध्य एवं मार्गदर्शन सबसे बड़ा सौभाग्य था। इससे बेहतर संयोग क्या हो सकता था। उनकी शिक्षा-दीक्षा के साथ उनका व्यक्तिव गुरुजी के मार्गदर्शन में संवेदना के एक विशिष्ट शिखर की ओर बढ़ता रहा।

दत्तोपंत जी का लोक सम्पर्क व लोक संग्रह का स्वभाव भी विलक्षण था। प्रचारक जीवन के पूर्व भी जन मानस में संगठन के प्रति प्रेम, निष्ठा और आत्मीयता के निर्माण का कठिन और अमूल्य काम वह सहजता से करते थे। अपने मिलने जुलने वालों में वे उनसे वरिष्ठ, कनिष्ठ, उच्च शिक्षा प्राप्त या अल्प पढ़े लिखे और अत्यन्त साधारण, प्रवर विद्वान, श्रेष्ठ-अश्रेष्ठ, ऊँच-नीच आदि किसी प्रकार का भेद भाव नहीं रखते थे। सब के साथ निश्छल, निष्कपट प्रेम भाव से व्यवहार करते थे, आत्मीयतापूर्वक मिलते थे। अनुभव और अध्ययन के ही अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की बुद्धि विकसित होती है। वे दोनों ही बातों में परिपक्व थे। सतत अध्ययन व अभ्यासवृत्ति उनके सहज स्वभाव के गुण थे।

उनके विचारों में सदैव धर्म तत्त्व एवं उच्च जीवन मूल्यों की अत्यन्त सटीक व विस्तृत विवेचना रहती थी। जिस विषय पर उन्हें चर्चा, बौद्धिक या प्रकट भाषण करना होता था उसका वे गहन अध्ययन करते थे। प्रारम्भिक जीवन में वे उस विषय को प्रात: उठ कर अच्छे से अध्ययन करते, उसका स्मरण करते, घड़ी सामने रख कर निश्चित समय सीमा में बोलने का अभ्यास करके देखते कि कितना समय लगा। उन्हें हमारे प्राचीन वाङ्मय, देश की परिस्थितियों, अन्तरराष्ट्रीय घटनाक्रम आदि का अपार ज्ञान था पर इसका उनके मन में अहंकार लेशमात्र भी नहीं था। सब लोगों से आत्मीयता पूर्ण व्यवहार, सादगी पूर्ण रहना और सादा कपड़ा पहनते। परन्तु उच्च विचार, संस्कृति के प्रति अनुराग व मानवतावादी व्यवहार उनका सदगुण था। उन्होंने हमारे प्राचीन वाङमय का प्रचुर अध्ययन करने के साथ ही पू. रामदास स्वामी का दासबोध और भगवान श्री कृष्ण की गीता के कर्मयोग को अक्षरश: अपने दैनिक जीवन में अच्छे से उतारा लिया और आजीवन तद्नुसार आचरण किया। दो कार्यकाल राज्य सभा के सदस्य रहे पर उसका उन्हें कभी अहंकार न हुआ। वे आजीवन सहज निरहंकार व विनम्र भाव से रहे।

अपने प्रारम्भिक प्रचारक जीवन में वर्ष 1942 में दत्तोपंत जी जब रा.स्व.संघ के प्रचारक के नाते केरल प्रान्त में गये जहाँ मलयालम भाषा थी। तब भी संघ कार्य हेतु प्रचारक के रूप में केरल में कठिनाई नहीं आयी। दत्तोपंत जी का अंग्रजी भाषा पर अच्छा अधिकार होने से केरल में प्रचारक के रूप में कार्य करने, संपर्क साधने आदि में उन्हें पर्याप्त सुविधा हुई। मलयालम नहीं आने से थोड़ी कठिनाई रही तथापि वहाँ थोड़े ही समय में उन्होंने मलयाली भाषा भी अच्छे से सीख ली थी इससे स्थानीय लोगों से संपर्क बढ़ाने व स्थान-स्थान पर संघ शाखाएँ खोलने के कार्य में अत्यन्त सफलता मिली। बंगाल में रहते हुये उन्होंने बांग्ला भाषा भी अच्छे से सीख ली थी। हिन्दी, मराठी, मलयालम, बांग्ला, अंग्रेजी व संस्कृत भाषाओं का उन्हें अच्छा अभ्यास था।

भाषा, निवास, संघकार्य अर्थात् शाखाओं का नवीन स्थानों पर शुभारम्भ करना, पालक महानुभावों को जोड़ना आदि कई बाधाओं के बाद भी उन्होंने शीघ्र ही कार्य विस्तार में सफलता अर्जित की। प्रारम्भिक दौर के प्रचारक जीवन में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। केरल व बंगाल दोनों ही प्रान्त समास्यामूलक प्रान्त थे। प्रचारक के रूप में संघ कार्य का आरम्भ करने हेतु केरल में एक प्रतिष्ठित वकील साहब के घर पर उनके गैराज में स्थान मिल पाने पर गैराज में ही रहते थे। गैराज में स्थान मिलने पर भी उनके काम में उत्साह में कमी नहीं थी। तब एक दिन वकील साहब ने उनसे पूछ ही लिया कि क्या आप जिन्दगी भर ऐसे ही प्रचारक अर्थात् अविवाहित ब्रह्मचारी ही रहेंगे और रह सकेंगे क्या? तब उन्होंने कहा कि मैंने सदा के लिए प्रचारक जीवन ग्रहण किया है मेरे जीवन में-दैनन्दिन संघ कार्य ही है। मैं आजन्म इसी प्रकार प्रचारक ही रहूँगा और मुझे विश्वास है कि मैं ऐसे रह सकता हूँ। वकील साहब इससे अत्यन्त प्रभावित हुए और उस दिन से गैराज के स्थान उन्हें उनके बंगले के कमरे में स्थान दे दिया। यही वकील साहब भी धीरे-धीरे संघ कार्य से जुड़ते गये और आगे चल कर संघ कार्य में रच-बस गये। दत्तोपंत जी की प्रेरणा से जीवन पर्यन्त उन्होंने संघ के कार्य में सभी प्रकार से योगदान किया।

श्री दत्तोपंत जी का केरल में संघ प्रचारक के नाते कार्य के दौरान श्री पी. परमेश्वरन जी (ज्येष्ठ एवं वरिष्ठ प्रचारक, संप्रति भारतीय विचार केन्द्रम, तिरुअनन्तपुरम के निदेशक) का भी उत्तम व प्रेरक सानिध्य मिला था। वे जब प्रचारक बन कर नागपुर से सर्वप्रथम कालीकट पहुँचे। केरल प्रान्त के कालीकट में उन्होंने कालीकट के कई ख्यातनाम अधिवक्ताओं, प्रबुद्धजनों व समाज के जागरूक नागरिकों से सम्पर्क किया। देश के तट मालाबार के उक्त कालीकट नगर में संघ की शाखा खोलने में मिले सबके सहयोग से उन्हें वहाँ सफलता भी मिली। उनको सुनने वाले उनकी प्रतिबद्धता, योग्यता से प्रभावित होने लगे थे। उनकी विद्वता, सरलता व आत्मीयता से कई लोगों को उनसे ऐसी सहानभूति हुई कि वे उन्हे घर लौटने का आग्रह करने लग गये। उन्हें लगा कि नागपुर का यह प्रखर, विद्वान व युवा वकील प्रचारक के रूप में अपनी ऊर्जा व्यर्थ कर रहा है। कुछ ने उन्हें नागपुर वापस लौट जाने का पुरजोर आग्रह भी कर दिया तथा कुछ ने तो उन्हें कालीकट से नागपुर तक का वापसी रेल टिकट भी स्वयं खरीद कर देने का प्रस्ताव भी कर दिया। ठेंगड़ी जी ने सबको यही उत्तर दिया कि जिस कार्य के लिए आया हूँ वह ठीक से सम्पन्न हो जाने पर ही सोचूंगा कि आगे कहाँ जाना है। वहाँ भी संघ कार्य के लिये ही जाऊँगा। श्री ठेंगड़ी जी के व्यापक संपर्क, दृढ़ परिश्रम, सूझ-बूझ, आत्मीयता और धैर्य के साथ काम करने के फलस्वरूप संघ कार्य केरल में तेजी से बढ़ने लगा।

श्री दत्तोपंत जी ठेंगड़ी के 1942 से 1944 तक केरल में प्रचारक के रूप में कार्य करने के बाद 1944 में उन्हें बंगाल भेजा गया तब बंगाल में असम भी था। बंगाल प्रान्त के प्रचारक का दायित्व मिलने पर वे कोलकता (तत्कालीन कलकत्ता) चले गए। वहाँ रहते हुए ही श्रमिक क्षेत्र में संघ कार्य का विस्तार करने का आग्रह किये जाने पर उन्होंने कुछ समय कांग्रेस के श्रमिक संगठन-इण्डियन नेशनल ट्रेड युनियन कांग्रेस (इंटक) में भी कार्य किया। श्रमिक संघों की कार्य पद्धति अच्छे से समझ कर उन्होंने भारतीय मजदूर संघ की स्थापना की थी। ❑

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

सातवाँ राष्ट्रीय अधिवेशन महेसाणा (गुजरात) में सम्पन्न

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का सप्तम तीन दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन 8 नवम्बर 2019 को प्रातः 10:40 बजे महेसाणा (गुजरात) स्थित गणपत युनिवर्सिटी परिसर में महासंघ के अध्यक्ष द्वारा ध्वजारोहण से प्रारम्भ हुआ। प्रातः 11:00 बजे उद्घाटन समारोह प्रारम्भ हुआ। गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय भाई रूपाणी उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि रहे। मुख्यमंत्री श्री विजय भाई रूपाणी ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षा-दीक्षा की भारतीय परम्परा से राष्ट्र चेतना युक्त नई पीढ़ी का निर्माण करना होगा। उन्होंने कहा कि अब देश बदल रहा है और समग्र विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ रही है। आने वाली चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए राष्ट्रवाद एवं राष्ट्र निर्माण का भाव जगाना होगा। उद्घाटन समारोह के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख प्रो. अनिरुद्ध देशपाण्डे ने कहा कि शिक्षा क्षेत्र में गहराई से चिन्तन कर राष्ट्र निर्माण में सहभागी बनने के लिए महासंघ प्रयत्नशील है। बच्चों के भविष्य निर्माण का शिल्पकार शिक्षक ही है। आपने कहा कि देश में कई वर्षों बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति बन रही है और छात्र को केन्द्र में रखकर बनाई जाने वाली शिक्षा नीति सही लक्ष्य एवं सही दिशा में भारत को ले जाने में सफल होगी। महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. जे.पी. सिंघल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि शिक्षकों का यह संगठन राष्ट्र के हित में शिक्षा, शिक्षा के हित में शिक्षक और शिक्षक के हित में समाज को लेकर आगे बढ़ रहा है। देश के पुनर्निर्माण के लिए शिक्षक को एक श्रेष्ठ प्रबोधक बनना होगा, अपनी सामर्थ्य में वृद्धि करनी होगी और समाज के साथ समन्वय बैठाना होगा। समारोह के स्वागताध्यक्ष गणपत युनिवर्सिटी के संरक्षक गणपत भाई पटेल ने सभी का स्वागत किया एवं महासंघ के महामंत्री श्री शिवानन्द सिन्दनकेरा ने महासंघ का परिचय दिया। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ गुजरात के अध्यक्ष श्री घनश्याम भाई पटेल ने सभी का आभार व्यक्त किया। उद्घाटन समारोह के अवसर पर मंचस्थ महानुभावों द्वारा अधिवेशन की स्मारिका 'नारी : भारतीय दृष्टि एवं भविष्य', प्रो. बी.पी. शर्मा द्वारा रचित पुस्तक 'पर्यावरण संकट - जीव सृष्टि एवं जनजीवन' एवं 'शैक्षिक मंथन' मासिक पत्रिका के नवम्बर 2019 अंक का विमोचन किया गया। महासंघ के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री महेन्द्र कपूर मंच पर विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस सत्र का संचालन डॉ. नारायण लाल गुप्ता (संयुक्त सचिव, उच्च शिक्षा संवर्ग) ने किया।

राष्ट्रीय अधिवेशन में महासंघ के ध्येय के अनुकूल चार वैचारिक सत्र रखे गये। प्रथम सत्र में पुनरुत्थान विद्यापीठ, कर्णावती (गुजरात) की कुलपति इन्दुमति काटदरे ने **'नारी - भारतीय दृष्टि एवं भविष्य'** विषय पर अपने उद्बोधन में पश्चिम एवं भारत की महिलाओं के प्रति सोच एवं व्यवहार को स्पष्ट किया। आपने महिलाओं को पुरुष न बनने की सलाह देते हुए कहा कि महिलाओं के प्रति समाज के सोच में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। इस सत्र की अध्यक्षता फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर कलां, हरियाणा की कुलपति प्रो. सुषमा यादव ने की और अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। महासंघ की महिला संवर्ग की उपाध्यक्ष डॉ. कल्पना पाण्डे ने आभार व्यक्त किया। दूसरे वैचारिक सत्र **'भविष्य के भारत की शिक्षा'** विषय पर केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज के भारत की समस्याएँ संस्कारहीन शिक्षा के कारण उत्पन्न हो रही है। भविष्य के भारत की शिक्षा को संस्कार, स्वरोजगार एवं स्वाभिमान ने जोड़ना होगा और उसे सभी प्रकार के दुराग्रहों से इतर समाज सापेक्ष बनाना होगा। इस सत्र की अध्यक्षता महासंघ के पूर्व अध्यक्ष प्रो. के. नरहरि ने की तथा महासंघ के उच्च शिक्षा संवर्ग के उपाध्यक्ष प्रो. प्रज्ञेश भाई शाह ने सभी का आभार व्यक्त किया। तीसरे वैचारिक सत्र के प्रमुख वक्ता गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय नोएडा (उत्तर प्रदेश) के कुलपति प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा ने **'पर्यावरण-दृष्टि और व्यवहार'** विषय पर अपने उद्बोधन में उदाहरणों एवं वैज्ञानिक शोधों के आधार पर बताया कि पर्यावरण के प्रति भारतीय दृष्टि एवं व्यवहार सम्पूर्ण विश्व में श्रेष्ठ है। आपने कहा कि पश्चिमी दृष्टि जहाँ पर्यावरण को नष्ट करने को प्रगति का आधार बनाती है वहीं पर भारतीय दृष्टि पर्यावरण के साथ सह-अस्तित्व एवं सामंजस्य की अवधारणा को पुष्ट करती है। इस सत्र की अध्यक्षता चौधरी बंशीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी (हरियाणा) के कुलपति प्रो. आर.के. मित्तल द्वारा की गई एवं अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। प्रो. के. बालकृष्ण भट्ट, दक्षिण व दक्षिण मध्य क्षेत्र प्रमुख ने आभार व्यक्त किया। चतुर्थ वैचारिक सत्र का विषय था **'राष्ट्र की अवधारणा'**। ख्याति प्राप्त शिक्षाविद् प्रोफेसर अशोक मोडक ने इस विषय पर बोलते हुए कहा कि हमारी सनातन परम्परा में राष्ट्र को एक जीवित पुरुष या राष्ट्र देवता माना गया है। जो राष्ट्र सत्ता के आधार पर खड़े होते हैं वे टूटते रहते हैं जैसे कि रूस एवं यूरोप परन्तु सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक आधार पर निर्मित राष्ट्र हमेशा सांस्कृतिक रूप से एकजुट ही रहता है। राष्ट्र की यही मूल आत्मा है। इस सत्र की अध्यक्षता गुरुगोविन्द जन-जातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा (राजस्थान) के कुलपति प्रो. कैलाश सोडानी ने की एवं अध्यक्षीय उद्बोधन दिया तथा महासंघ के प्राथमिक शिक्षा संवर्ग के उपाध्यक्ष श्री हिम्मत सिंह जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया।

9 नवम्बर 2019 को सायं काल **पंचम 'शिक्षा भूषण' अखिल भारतीय शिक्षक सम्मान समारोह** सम्पन्न हुआ। यह समारोह प.पू. श्री अदृश्य काड सिद्धेश्वर महास्वामी जी, सिद्देश्वर मठ कनेरी, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) की गरिमामय उपस्थिति एवं गुजरात राज्य के शिक्षा मंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह चुडासमा जी के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर शिक्षा क्षेत्र में असाधारण कार्य करने वाले तीन शिक्षाविदों यथा- मध्यप्रदेश के प्रो. गोविन्द प्रसाद शर्मा, तमिलनाडु की सुश्री निवेदिता रघुनाथ भिडे एवं महाराष्ट्र के प्रो. रवीन्द्र

अम्बादास मुळे का महास्वामी जी के कर कमलों द्वारा, प्रत्येक को एक-एक लाख का चेक, रजत चिन्ह, प्रशस्ति पत्र, शाल, श्रीफल एवं पुष्पगुच्छ प्रदान कर सम्मानित किया गया। महास्वामी जी द्वारा आशीर्वाद स्वरूप कहा कि यह अन्य शिक्षकों को श्रेष्ठ एवं राष्ट्र निर्माण के अद्‌भुत कार्य करने की प्रेरणा देगा। गुजरात के शिक्षामंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह चुडासमा ने कार्यक्रम के सोच एवं योजना की सराहना की तथा भविष्य में ऐसे कार्यक्रम और अधिक मात्रा में हों इसकी शुभकामना दी। महासंघ के अध्यक्ष प्रो. जगदीश प्रसाद सिंघल ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखते हुए शिक्षक सम्मान कार्यक्रम प्रारम्भ करने की पृष्ठभूमि, सोच एवं उद्देश्य की जानकारी दी और शैक्षिक फाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि शिक्षक सम्मान कार्यक्रम ने बहुत प्रतिष्ठा अर्जित की है। भविष्य में यह कार्यक्रम और यशस्वी बने आपने ऐसे शुभकामनाएँ दी। इस अवसर पर महासंघ के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री महेन्द्र कपूर उपस्थित रहे। सम्मानित हुए तीनों श्रेष्ठ महानुभावों ने अपने उद्‌बोधन में अपने-अपने उद्‌गार व्यक्त किये। महासंघ के महामंत्री श्री शिवानन्द सिन्दनकेरा ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस सत्र का संचालन डॉ. शेखर बसंत चन्द्रात्रे (अ.भा. शिक्षण प्रमुख) ने किया।

राष्ट्रीय अधिवेशन में उपस्थित सभी दायित्ववान कार्यकर्ताओं की दायित्वों के अनुसार बैठक सम्पन्न हुईं जिन्हें संबंधित अखिल भारतीय अधिकारियों द्वारा सम्बोधित किया और सभी को अपने-अपने दायित्व को और अधिक सक्रियता से पूरा करने के लिए प्रेरित किया। उनके समक्ष आने वाली समस्याओं एवं उनके निदान, परस्पर समन्वय आदि विषयों पर विचार विमर्श हुआ एवं जिज्ञासाओं का समाधान भी हुआ।

'संगठनात्मक कार्ययोजना' के सत्र में महासंघ के संगठन मंत्री श्री महेन्द्र कपूर ने एक जीवन्त संगठन की पहचान, उसकी कार्यविधि, कार्य की गुणवत्ता एवं परिप्रेक्ष्य, कार्यकर्ता की कसौटी, अनुशासन का पालन जैसे महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। एक सत्र में संवर्गश: बैठक सम्पन्न हुईं जिसमें संवर्गश: समस्याओं एवं चुनौतियों पर चर्चा हुई। विभिन्न संवर्गों के पदाधिकारीगण संबंधित बैठक में उपस्थित रहे। एक सत्र शिक्षक समस्याओं के संबंध में रहा जिसमें महासंघ के अध्यक्ष प्रो. जे.पी. सिंघल ने शिक्षा एवं शिक्षकों की समस्याओं के संबंध में अब तक किये गये प्रयासों के संबंध में प्रकाश डाला और राज्य/ विश्वविद्यालय स्तर पर और अधिक सक्रियता से कार्य करने की आवश्यकता बताई। उपस्थित सदस्यों ने अनेक नवीन समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया एवं समाधान के सुझाव दिये। एक सत्र में महासंघ की साधारण सभा द्वारा पारित किये गये समसामयिक तीन प्रस्तावों को आम सभा के समक्ष प्रस्तुत किया। ये तीन प्रस्ताव थे - **1. पर्यावरण संरक्षण के लिए हम सब जुटें, 2. शिक्षा में गाँधी जी के शैक्षिक विचारों का समावेश हो तथा 3. शिक्षा एवं शिक्षकों की समस्याओं का निराकरण अविलम्ब हो।** इन प्रस्तावों को अधिवेशन की आम सभा ने स्वीकार करते हुए केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों को इनके क्रियान्वयन के लिए प्रेषित करने के लिए निर्देशित किया।

समारोप सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह माननीय सुरेश (भैय्या जी) जोशी की गरिमामयी उपस्थिति एवं प्रेरणादायी उद्‌बोधन से सभी प्रतिभागी लाभान्वित हुए। आपने-अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज अत्यन्त आनन्द एवं गौरव करने का दिन है, हम सभी की वर्षों से लम्बित इच्छाएँ पूर्ण हुई है। महासंघ जिस राष्ट्रीय गौरव के निर्माण के ध्येय को लेकर चला है उसके अनुरूप समाज में परिवर्तन हो रहा है। शिक्षकों को अपने तत्त्व ज्ञान से नवीन प्रतिमान स्थापित करने होंगे। दुनिया में जो संगठन बने हैं वे सत्ता के लिए प्रयत्नशील रहते हैं जबकि हमारे संगठन राष्ट्र के लिए कार्य करते हैं। आपने कहा कि महासंघ को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए शिक्षा को केन्द्र मानकर कार्य करना होगा।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्री श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने बताया कि 33 वर्षों के पश्चात नई शिक्षा नीति आ रही है। नये भारत के निर्माण के लिए सशक्त भारत, स्वच्छ भारत, समृद्ध भारत से एक श्रेष्ठ भारत के ध्येय से आगे बढ़ना होगा। नई शिक्षा नीति को जमीन पर रहकर आसमान को छूने की शक्ति होने के मत कहते हुए कहा कि इससे भारत विश्व गुरु बनने की तरफ बढ़ेगा। अधिवेशन में गुजरात के उप मुख्य मंत्री श्री नितिन भाई पटेल ने शिक्षा हित में गुजरात राज्य में किये जाने वाले प्रयासों एवं नवाचारों की जानकारी दी। महासंघ के अध्यक्ष प्रो. जे.पी. सिंघल ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में देश भर से आये प्रतिनिधियों से अपने-अपने स्थान पर जाकर राष्ट्र हित, शिक्षा हित और शिक्षक हित में कार्य करने का संकल्प कर जाने का आह्वान किया। आपने राष्ट्रीय शैक्षिक संघ गुजरात के सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं के अथक योगदान एवं परिश्रम की प्रशंसा की और सभी का हृदय की गहराई से आभार व्यक्त किया। महासंघ के महामंत्री श्री शिवानन्द सिन्दनकेरा ने गणपत युनिवर्सिटी, खैरवा, महेसाणा (गुजरात) में सम्पन्न तीन दिवसीय अधिवेशन के सम्बन्ध में रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि देश भर के 22 राज्यों के सम्बद्ध संगठनों से 1800 प्रतिनिधि तथा गुजरात राज्य से 350 कार्यकर्ता इस अधिवेशन में सम्मिलित हुए। इस सत्र का संचालन डॉ. गीता भट्ट (सचिव, महिला संवर्ग) ने किया। 7 नवम्बर 2019 सायं काल स्थानीय सांसद शारदा बेन पटेल ने 'संगठन गौरव यात्रा' भव्य प्रदर्शनी का गणेश प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन कर शुभारम्भ किया। अधिवेशन के 12 सत्रों में उद्घाटन, समारोप कार्यक्रम के अलावा चार वैचारिक सत्र, प्रस्ताव सत्र, संगठनात्मक कार्ययोजना, शिक्षक समस्याओं पर विचार, दायित्वश: बैठक, संवर्गश: बैठक आदि पर विचार-विमर्श के साथ-साथ 'शिक्षा-भूषण' अखिल भारतीय शिक्षक सम्मान का भव्य कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ (गुजरात) के महामंत्री श्री रत्तु भाई गोल ने राष्ट्रीय अधिवेशन में पधारे सभी आमंत्रित अतिथियों, आगन्तुक महानुभावों, देश के कौने-कौने से आये महासंघ के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं, गणपत युनिवर्सिटी के सभी अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं, अनन्य प्रकार की सुविधाएँ जुटाने वाले गुजरात के कार्यकर्ताओं, सरकार एवं प्रशासन को हृदय से धन्यवाद दिया। सामूहिक वन्देमातरम् के साथ अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

8, 9 व 10 नवम्बर 2019, महेसाणा (गुजरात) में आयोजित 7वें राष्ट्रीय अधिवेशन में पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव-1

पर्यावरण-संरक्षण के लिए हम सब जुटें

पर्यावरण-विषयक भारतीय चिंतन कितना समावेशी और व्यापक है, इसे हम ''**द्यौः शान्तिरन्तरिक्षशान्तिः**'' जैसे प्राचीन वैदिक शान्तिमंत्रादि से जान सकते हैं, जहाँ आकाश, पृथ्वी, जल, वनस्पति आदि की शांति के लिए प्रार्थना की गयी है। हमारी तो संस्कृति ही अरण्य-आधारित थी जिसमें ऋषि-मुनियों के आश्रम अभयारण्य थे और जीवन का अर्धांश यानी ब्रह्मचर्य और वानप्रस्थ इन्हीं अरण्यों में व्यतीत होता था। किन्तु अब सब उलट चुका। वनाच्छादन तेजी से घट रहा है। पर्यावरण प्रदूषण के अभिशाप से जिन पाँच आपदाओं की भयंकर विभीषिका उपस्थित हो रही है, वे हैं - बाढ़, सूखा, गर्मी, अकाल और बीमारी। प्लास्टिक एवं इलेक्ट्रॉनिक कचरे का निपटारा जीवन के अस्तित्व हेतु चुनौती बन गया है। आज पर्यावरण का संकट वैश्विक संकट है। पूरा विश्व इस विषय में चिन्तित है और सभी देश संकट से निपटने के लिए न्यूनाधिक यत्न भी कर रहे हैं। किन्तु समस्या बड़ी है और उसके निवारण के प्रयास अपर्याप्त हैं।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का अभिमत है कि सब कुछ सरकार के भरोसे छोड़कर चादर तानकर सो जाना ठीक नहीं। सब कार्य सरकार नहीं कर सकती। हाँ, जो कदम राष्ट्रीय या अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सरकार को उठाने चाहिए, वे सरकार अवश्य उठाए। परन्तु हम भी अपने स्तर पर जागरूक व क्रियाशील हों, यह आवश्यक है। जिस देश में वनाच्छादित भूभाग भारत से तिगुना है, जनसंख्या घनत्व भारत से 16 गुना कम है और कुल ऊर्जा उत्पादन का 72 प्रतिशत रिन्यूएबल तथा प्रदूषण रहित है, उस देश की कोई षोडशी बाला (ग्रेटा थनबर्ग) पर्यावरण की चिंता कर सकती है तो हम क्यों नहीं? दूर क्यों जाना, अपने यहीं पर पिपलान्त्री (राजस्थान) जैसे गाँवों के सामान्य लोग और फॉरेस्ट मैन पद्मश्री जादव पायेंग और वृक्षमाता पद्मश्री सालूमारदा थिमक्का जैसे सामान्य लोग जब असामान्य कार्य कर सकते हैं, तो हम क्यों नहीं?

पर्यावरण रक्षण का सबसे बड़ा उपकरण वृक्ष-रक्षण है। वृक्ष बचेगा, तो हम बचेंगे। अतः हम में से प्रत्येक जन हरीतिमा के लिए सचेष्ट हो। केवल दूर के अमेजन के लिए आँसू बहाने से कार्य नहीं होगा, हम सबको अपने-अपने अमेजन बनाने होंगे। हम अपने विद्यालयों, महाविद्यालयों आदि में अपने सहकर्मियों व छात्रों को साथ लेकर छोटे-छोटे संस्थागत वन (Institutional Forest) या उपवन विकसित कर सकते हैं। समय-समय पर छात्रों को वहाँ ले जाकर वनस्पतियों से परिचय भी करवाना चाहिए। आज की नयी पीढ़ी के नगरीय छात्रों से पूछा जाए तो वे दस पादपों के भी नाम और उनकी पहचान बताने में समर्थ नहीं होंगे। पादपरोपण के साथ ही रक्षण (पादप-रक्षा-कवच, तारबंदी या चारदीवारी) व सिंचन व्यवस्था को सुनिश्चित करना जरूरी है। प्रत्येक घर में तुलसी एवं अन्य ऑक्सीजनदायी पौधे अवश्य लगाएँ। अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की यह साधारण सभा शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं समाजजन से अपील करती है कि जल-संरक्षण के लिए हम सीमित जलोपभोग करते हुए वर्षा-काल में भूजल-पुनर्भरण की व्यवस्था करें। अपने संबंधियों, मित्रों व परिचितों के नवगृह-निर्माण के समय उन्हें वृष्टिजल के लाभ (शुद्धि, पीएच, टीडीएस इत्यादि) के विषय में बताकर पेय वर्षाजल के संग्रहण हेतु कुण्ड-निर्माण के लिए प्रेरित करें। प्लास्टिक, मुख्यतः सिंगल यूज प्लास्टिक व थर्मोकॉल का बहिष्कार करें। तथाकथित डिस्पोजेबल नामक कचरे के स्थान पर प्राकृतिक पत्तल, दोने व धातु के पात्रों का उपयोग करें। कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए रूफ टॉप सोलर सिस्टम लगायें तथा पर्यावरण अनुकुल आहार का व्रत लें। ए.सी. के स्थान पर एयर कूलर, कूलर के स्थान पर पंखा तथा पंखे की अपेक्षा प्राकृतिक हवा को वरीयता दें। थोड़ा पैदल चलने का स्वभाव बनायें। ई-कचरे के सुरक्षित निस्तारण हेतु जागरूक हों, अपनी इलेक्ट्रॉनिक युक्तियों का ठीक प्रकार मेन्टेन्स करें तथा व्यक्तिगत-पेशेवर जीवन में बहुत उपयोगी होने पर ही पुरानी डिवाइस को बदलें। जन्मदिवस, पुण्यतिथि, वर्षगाँठ, विवाह जैसे अवसरों पर नवाचारों के द्वारा वृक्षारोपणादि की योजना करें। '**यावत् भ्रियते जठरं तावत् स्वत्वम्**' - के अनुसार वस्तुओं तथा संसाधनों के अनावश्यक उपभोग से बचें। पर्यावरण-रक्षण, पोषण व संवर्धन हेतु सर्वविध जागरूकता व सक्रियता के लिए कार्य करें।

महासंघ का मानना है कि यदि हम अपनी पर्यावरण प्रेमी संस्कृति के अनुसार जीते हुए छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दें तो धारणक्षम विकास करते हुए अपनी भावी पीढ़ी को शुद्ध पवित्र धरती, पवन, आकाश व जल उपहार में दे सकेंगे।

प्रस्ताव-2

शिक्षा में गांधी जी के शैक्षिक विचारों का समावेश हो

संपूर्ण देश महात्मा गांधी की 150वीं जयंती वर्ष मना रहा है। शैक्षिक संस्थानों में विशेष रूप से कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। विद्यालयों एवं उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रतिवर्ष 2 अक्टूबर को, जबकि अन्य शासकीय संस्थानों में अवकाश रहता है, परंपरा अनुसार गांधीजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के स्मरणार्थ कार्यक्रम आयोजन के सरकारी निर्देश जारी होते हैं। किंतु रस्मी औपचारिकताओं से हटकर शिक्षा में गांधी जी के विचारों के समावेश का स्वतंत्रता के पश्चात कोई योजनाबद्ध प्रयत्न होना तो दूर वरन् उनकी शिक्षा योजना से हम निरंतर परे होते गए हैं।

स्वतंत्रता के बाद के 70 वर्षों में हमारी शिक्षा व्यवस्था कई गंभीर विसंगतियों से ग्रसित रही है जिनके संदर्भ में गांधीजी ने चेतावनी दी थी। मात्र बौद्धिक विकास के विपरीत गांधीजी शिक्षा का हेतु हाथ (हैंड), हृदय (हार्ट) एवं मस्तिक (हैड) के समुचित प्रशिक्षण द्वारा बालक की शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों के समग्र एवं संतुलित विकास को मानते थे। वे आधुनिक शिक्षा प्रणाली से शिक्षित लोगों की कठोर हृदयता से चिंतित थे, जो मात्र विषय ज्ञान सिखाती है। शिक्षा के माध्यम के लिए, विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा हेतु, गांधीजी का आग्रह मातृभाषा पर था। उनके अनुसार अंग्रेजी की अनिवार्यता बालकों की स्नावयिक ऊर्जा पर गहन दबाव बनाती है जिससे उसका स्वाभाविक विकास अवरुद्ध होता है। उनका कहना था कि अंग्रेजी शिक्षित वर्ग, जनसाधारण से दूर हो जाता है।

गांधीजी शिक्षा को मानवीय मूल्यों के साथ-साथ व्यवहारिक जरूरतों से जोड़कर देखते थे। कौशल शिक्षा उनके सुझाए पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग थी। महिला शिक्षा पर उनका विशेष जोर था। वह कहते थे कि राष्ट्र तब तक संपन्न और विकसित नहीं हो सकता जब तक महिलाएँ शिक्षित नहीं होती। वे उच्च शिक्षा को राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने तथा उसे उद्योगों से जोड़ने के पक्षधर थे। महात्मा गांधी केवल रटने की प्रवृत्ति के विरुद्ध थे तथा पाठ्यक्रमों से अधिक महत्त्वपूर्ण अध्यापक एवं उसके आचरण को मानते थे। उन्होंने विद्यार्थियों के मध्य प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहयोग से सीखने की पद्धति पर बल दिया। उनका स्पष्ट चिंतन था कि मैकॉले की शिक्षा ने भारतीय शिक्षा के रमणीय वृक्ष (ब्यूटीफुल ट्री) को सुखा दिया है।

स्वतंत्रता के दशकों बाद भी गांधी जी के ये विचार राजकीय फाइलों एवं औपचारिक भाषणों से बाहर नहीं आए हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में न मातृभाषा का महत्त्व है, न ही शारीरिक श्रम, हस्त कौशल और चरित्र निर्माण का। शिक्षित वर्ग में अपनी भाषा, संस्कृति, परंपराओं, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से दूरी बढ़ी है। शिक्षा समग्र विकास का माध्यम न होकर धन कमाने एवं नौकरी पाने का जरिया मात्र हो गई है। शिक्षा में यूरोप अमेरिका के मॉडल की बात है किंतु भारत लुप्त है। बालिका शिक्षा के आँकड़े लक्ष्य से बहुत दूर हैं। शिक्षा संस्थानों में जेंडर स्टडीज विभाग तो खुले हैं किंतु अध्ययन एवं पाठ्यक्रम का आधार पश्चिमी फेमिनिस्ट सोच है। शिक्षा में अंग्रेजी एवं भारतीय भाषाओं के मध्य विषमता ने लोगों को एलीट और आम वर्गों में बाँट दिया है। अध्यापक एवं विद्यार्थी के मध्य संबंध यांत्रिक हुए हैं; प्रतिस्पर्धा के दबाव में अवसाद और आत्महत्या जैसी घटनाएँ बढ़ी है।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की साधारण सभा का यह सुविचारित मत है कि महात्मा गांधी की शिक्षा विचारणा व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के दीर्घकालिक हितों के लिए श्रेष्ठ एवं प्रासंगिक है। महासंघ ने गांधीजी के शिक्षा संबंधी विचारों को समय-समय पर शिक्षकों, समाज एवं शासन के समक्ष मजबूती के साथ रखा है। महासंघ का यह मानना है कि महात्मा गांधी का 150 वाँ जयंती वर्ष इन विचारों को समग्रता से अपनाने का सामयिक एवं उपयुक्त अवसर है। महासंघ की यह साधारण सभा शासन से अपेक्षा करती है कि गांधीजी के शैक्षिक विचारों को व्यवस्थित एवं सांगोपांग रूप से शिक्षा व्यवस्था में समावेश किया जाए। महासंघ की साधारण सभा शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं समाजजन से भी इस संबंध में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान करती है।

प्रस्ताव-3

शिक्षा एवं शिक्षकों की समस्याओं का निराकरण अविलम्ब किया जाये

शिक्षा एवं शिक्षकों की अनेक ऐसी समस्याएँ हैं जो लम्बे समय से शासन की उपेक्षा के कारण अनिर्णीत हैं। अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की अपेक्षा है कि वर्तमान संवेदनशील सरकार इन समस्याओं के समाधान के लिए त्वरित कार्यवाही करे।

1. सातवें वेतन आयोग की सिफारिशों को सम्पूर्ण देश में समान रूप से लागू किया जाये और इसकी विसंगतियों को तत्काल दूर किया जाये।
2. 1 जनवरी 2004 से पूर्व की पेंशन योजना सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में पुन: बहाल की जाये।
3. सम्पूर्ण देश में शिक्षकों की सेवानिवृत्ति आयु एक समान 65 वर्ष की जाये।
4. शैक्षणिक पदों पर नियमित एवं स्थायी नियुक्ति सुनिश्चित की जाये और शिक्षकों के प्रशिक्षण की सुदृढ़ एवं नियमित व्यवस्था हो।
5. विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षकों को समयबद्ध सी.ए.एस. का लाभ सुनिश्चित किया जाये।
6. कार्यरत शिक्षकों को पीएच.डी. कोर्स वर्क से मुक्त किया जाये अथवा कोर्सवर्क हेतु सवैतनिक अवकाश/

ऑनलाईन व्यवस्था हो।

7. अनुदानित विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के शिक्षकों को वेतन भुगतान की कोषागार भुगतान व्यवस्था हो।
8. सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के शिक्षकों को समुचित चिकित्सा सुविधा के लिए नि:शुल्क स्वास्थ्य कार्ड की सुविधा प्रदान कर उसका प्रभावी क्रियान्वयन हो।
9. प्रोन्नति के लिए पूर्व सेवाकाल को गणना में सम्मिलित किया जाये।
10. पुस्तकालयाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षक एवं अन्य समान सेवाओं की शिक्षकों के साथ समकक्षता स्थापित हो।
11. शिक्षकों से केवल शैक्षिक कार्य ही कराए जायें।
12. राष्ट्रीय अस्मिता, भारतीय जीवन मूल्यों, मानव एवं चरित्र निर्माण, सामाजिक सरोकार, मौलिक चिन्तन, शोध एवं नवाचार से युक्त सम्पूर्ण शिक्षा पद्धति की पुन:संरचना की जाये।
13. शिक्षा व्यवस्था के नियोजन, नियमन एवं नियन्त्रण के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा शिक्षाविदों से युक्त स्वतन्त्र एवं स्वायत्त नियामक शिक्षा आयोग का निर्माण हो।
14. केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार अपने बजट का 30 प्रतिशत शिक्षा पर व्यय सुनिश्चित करे ताकि आधारभूत सुविधाएँ जैसे शिक्षक, पुस्तकें, भवन, खेल के मैदान आदि उपलब्ध हो सकें।
15. सम्पूर्ण देश में शिक्षा की स्वायत्तता को बहाल किया जाये एवं शिक्षा सम्बन्धी सभी निर्णयों में शिक्षकों की सहभागिता सुनिश्चित की जाये तथा राजनीतिक एवं प्रशासनिक हस्तक्षेप बंद हो।
16. नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार के प्रावधानों को सुसंगत एवं व्यावहारिक बनाया जाये तथा उनकी पालना सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक संसाधन एवं सुविधाएं प्रदान की जाये।
17. प्राथमिक शिक्षा, मातृभाषा में ही दी जाये।
18. शिक्षा के बाजारीकरण पर नियन्त्रण सुनिश्चित हो।
19. मिड-डे-मील योजना के प्रबंधन व क्रियान्वयन से शिक्षकों को मुक्त रखा जाये।
20. एनसीईआरटी पूर्णतया शिक्षाविदों से युक्त स्वायत्त संस्था बने।
21. महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में कालेज प्राचार्य का सेवाकाल 5 वर्ष तक सीमित न रखकर इसे सेवानिवृत्ति तक विस्तारित किया जाये।
22. सभी शिक्षण संस्थाओं में उचित शिक्षक-शिक्षार्थी अनुपात सुनिश्चित किया जाये।
23. व्यावसायिक, शारीरिक एवं कम्प्यूटर शिक्षा के लिए नियमित एवं स्थायी शिक्षकों की नियुक्ति की जाये।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की यह साधारण सभा केन्द्र एवं राज्य सरकारों से आग्रह करती है कि उक्त समस्याओं का शीघ्र निराकरण कर शिक्षकों को उनका न्यायोचित अधिकार प्रदान करें।

AJKLTF Demands separate education commission for J&K

A Delegation of All Jammu Kashmir and Ladakh Teachers Federation under the aeigis of Akhil Bhartiya Rashtriya Shaikshik Mahasangh met with the Union Minister of State for PMO, Department for Development of North-Eastern Region at New Delhi.

The delegation was led by its State President Dev Raj Thakur.

The main demand put forth by the Federation was the Creation of Autonomous Independent Education Commission for UTs of J&K and Ladakh.

The Federation said that the education standard in the whole Jammu and Kashmir is not at par with the needs of the Nation. The Curriculum, Textbooks, Appointments, Transfers, Promotions of Teachers are highly discriminatory. So to bring the Education standard in the UTs of J&K and Ladakh, Creation of Autonomous Independent Education Commission at par with Indian Education Commission is the need of the hour.

Federation Demands a transparent/ rational transfer policy should be framed and implemented transparently to make the system work efficiently. Lack proper implementation of present transfer policy created the frustrations among the Teachers as well as Grade-2 & Grade-3 teachers.

Those who are serving in far-flung areas of the erstwhile State since long and they have lost all hopes and get frustrated due to favoritism in the Department.

The pick and choose in recent past transfers are made in violation of much talked about transfer policy.

He further said that as per the figures furnished by the Govt., thousands of posts of teachers, Masters, Lectures, Principals, ZEOs and CEOs are vacant. They also demanded Regulation of salary of all cadres timely and take the provision for regular salary falling in the category of teachers of Grade-2 and Grade-3 and NPS on regular basis.

Union MOS for PMO Dr. Jitendra Singh while addressing the delegation said that now the J&K is on right path and Union Govt. is serious to address the educational issues for J&K. He also assured the delegation that their demands are genuing and would be addressed on priority basis. He said that the teachers are the main agent of social change and have major role to play in the society to restore lost status of 'Vishwaguru'.